

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

वर्ष 46 अंक 1-2 10.04.2023 सोमवार (जनवरी-अप्रैल) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

महाप्रभु रवामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतद्वारा का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

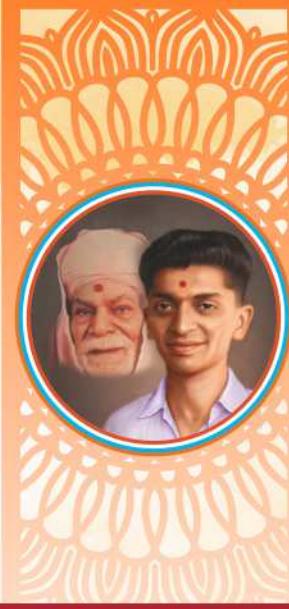


25

24



23



निषात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्यविलक्षणम् । विभाष्य तेन कर्तव्या श्रीमी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

संतभगवंत साहेबजी की
आंतरिक इच्छा-आज्ञा से प.पू. गुरुजी
की मूर्तिप्रतिष्ठा का उद्घोष...



विशिष्ट निमंत्रण पत्र द्वारा
केन्द्रों के मंदिर में सर्वप्रथम
श्रीजी महाराज के चरणों में प्रार्थना...



गुणातीत ज्योत



मुंबई-ताड़देव



सीखड़ा-हरिधाम



सांकरदा



अनुपम मिशन



मुंबई-यवई



दिल्ली-बेला रोड



देह व आयु को गिने बिना य.पू. गुरुजी ने निरंतर मार्गदर्शन से निहाल किया...





दिव्यधाम में 'साधु पर्व' की पूर्व तैयारियाँ...





जमात-करामात... -गुरुद्वारे काकाजी महाराज





ये सब अकेले हाथ नहीं बना... -गुरुहरि काकाजी महाराज





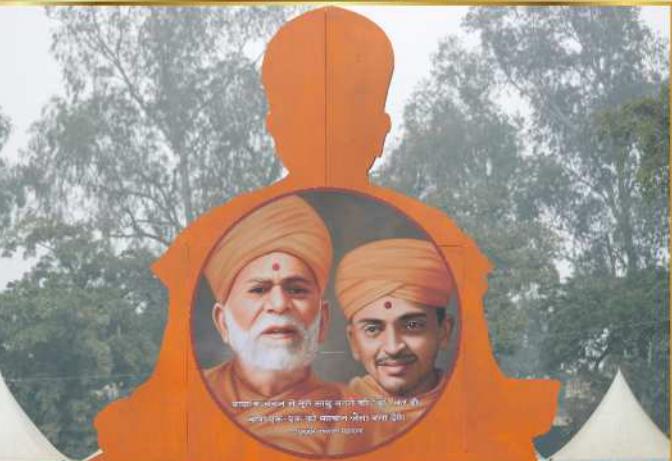
धन्यवाद हो मेरे साथीदारों को... -गुरुहरि काकाजी महाराज





मुक्तों की किसी भी सेवा को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता...





‘दिव्यधाम’ का दिव्य परिसर...





एक-एक मुक्त ने दस मुक्तों जितनी सेवा करी...



प्रभु मूर्ति साधे निर्गुण गुरुजी का 'साधु पर्व'!

20 अक्तुबर 2021 की शरदपूर्णिमा—मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की प्रागट्य तिथि के महामंगलकारी दिन प.पू. गुरुजी के 85वें प्राकट्य पर्व—'साधु पर्व' का उद्घोष हुआ और... समय को पंख लग गये! 2022 की 28 अप्रैल को प.पू. गुरुजी की एन्जोप्लास्टी हुई और उनके स्वरूप होने पर, सबको मानो सुध आई-चेतन हुए, तो पर्व की रूपरेखा तैयार करने की शुरुआत की। तब जैसे गुणातीत समाज के केन्द्रों में गुणातीत स्वरूपों की प्रत्यक्ष हाज़िरी में ही उनकी मूर्ति स्थापित हुई हैं, उन्हीं पद्मिन्हों पर चलते हुए, **संतभगंवत् साहेबजी** की आंतरिक इच्छा व आङ्गा के अनुरूप, उनके करकमलों द्वारा दिल्ली मंदिर में प.पू. गुरुजी की संगमरमर की मूर्तिप्रतिष्ठा करवा कर भक्ति अदा करने का निर्णय लिया और फिर... पर्व से संबंधित अनेक सेवायें करने के लिये सभी सक्रिय हुए।

प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं कि उत्सव के कार्यक्रमों द्वारा सबको कुछ न कुछ सीखने को मिलना चाहिये। प.पू. गुरुजी की ऐसी इच्छा को मूर्तरूप देने के लिये प्रभु ही सेवकों के लिये सहायक हुए। वर्षों पहले प.पू. गुरुजी ने मंदिर के संतों, सेवकों व बहनों को आशीर्वाद रूप में 'साधवो हृदयं मम...' शीर्षक के अंतर्गत कुछ मुद्दों द्वारा 'साधु' की परिभाषा लिख कर दी थी। वह पत्र इन्हीं दिनों नज़र में आया, तो पू. आशिष शाह को हुआ कि महोत्सव का नाम 'साधु पर्व' है, तो क्यों न इन्हीं मुद्दों के आधार पर प.पू. गुरुजी की साधुता के गुण दर्शाते प्रसंगों की नृत्य नाटिका उत्सव में प्रस्तुत की जाये! लेकिन, प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी के कुटुंबभाव व सर्वदेशीय सिद्धांत को ही दिल्ली मंदिर के विकास का आधार बना कर, संबंध वाले मुक्तों के जीव में यह बात दृढ़ कराई है। सो, अक्षरज्योति में प.पू. आनंदी दीदी की निशा में भगवान भजती पू. परछाई दीदी ने भावना व्यक्त की कि केवल प.पू. गुरुजी के प्रसंग न लेकर, यदि भगवान रवामिनारायण से लेकर अब तक के गुणातीत स्वरूपों के साधुता युक्त गुण दर्शाते एक-एक प्रसंग दर्शायेंगे, तो प.पू. गुरुजी अधिक राजी होंगे। इस बात से सभी सहमत हुए। तुरंत ही पू. राकेशभाई शाह, पू. कौशिकभाई जानी, पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी एवं पू. परछाई दीदी इत्यादि प्रसंग एकत्र करने की सेवा में जुट गये। इसी दौरान प.पू. वशीभाई और पू. घनश्यामभाई दिल्ली मंदिर आये, उन्हें भी इसके बारे में बताया। तब प.पू. वशीभाई ने भी

अच्छा मार्गदर्शन दिया और पू. घनश्यामभाई ने तुरंत हमारे आत्मीय संगीतकार पू. आशिष गेरसोमजी से बात करके व्यवस्था करनी शुरू कर दी। गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के कुछ मुक्तों ने भी अपने स्वरूपों के प्रसंग बता कर भक्ति अदा की।



गुजरात के आणंद निवासी आत्मीय स्वजन पू. प्रदीपजी एवं उनकी पत्नी पू. वेदकुमारीजी के लेखन व निर्देशन में हमारे गुणातीत समाज में कई नृत्य नाटिकायें प्रस्तुत हुई हैं। 2012 के ‘योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव’ में प्रस्तुत हुई ‘अर्धिमार्ग की ओर...’ नृत्य नाटिका आज भी सबको इदम् है। सो, अबकी बार भी सबके हृदय में अनोखी स्मृति अंकित हो जाये, ऐसी भावना से पू. प्रदीपजी और पू. वेदकुमारीजी को जून में दिल्ली मंदिर बुला कर नाटक के विषय में बात की। दिसंबर में पर्व होने के कारण बाह्य दृष्टि से समय बहुत ही कम था। लेकिन, प.पू. आनंदी दीदी ने ही नाटक का प्रारंभिक दृश्य इतनी सहजता से बता दिया कि पू. प्रदीपजी व पू. वेदकुमारीजी के गुणातीत स्वरूपों के प्रति लगाव को प्रभु ने रॉकेट स्पीड देकर, अल्प समय में नाटक की रूपरेखा तैयार करवा दी। फलस्वरूप सितंबर में नाटक के संवाद मुंबई के स्टूडियो में रिकॉर्ड हुए। वहाँ पू. राकेशभाई, पू. नित्या दीदी, पू. बंसरी दीदी एवं पू. प्रदीपभाई इत्यादि के साथ पू. घनश्यामभाई एवं पू. हितेनभाई लगातार दो दिन सुबह से रात तक बैठे रहे। तत्पश्चात् नवंबर की शुरुआत में नाटक के भजन एवं कपलेट भी रिकॉर्ड करवाने के लिये पू. घनश्यामभाई, पू. आशीष गेरसोमजी के साथ रहे। सभाओं में प्रस्तुत होने वाले भावनृत्यों के भजन भी पू. राकेशभाई, सेवक पू. विश्वास, पू. परछाई दीदी और पू. नित्या दीदी ने तैयार करके, दिल्ली मंदिर से अपनेपन से जुड़े संगीतकार पू. रतन प्रसन्नाजी द्वारा रिकॉर्ड कराये।

पाँच साल पहले प.पू. गुरुजी की आज्ञा से गुणातीत ज्योत द्वारा प्रकाशित गुजराती पुस्तक अनुपम भाग-2 का पू. भद्रायुभाई जानी एवं पू. परेशभाई मेहता ने हिन्दी अनुवाद किया था। समय के अभाव के कारण तब प्रकाशन नहीं हो पाया। अब ‘साधु पर्व’ के उपलक्ष्य में इस पुस्तक के प्रथम विभाग को ऑडियो के रूप जारी करने का तय हुया। इस पुस्तक का सही मर्म तो प.पू. गुरुजी ही पकड़ पाते, सो करीब एक माह तक उनके समक्ष बैठ कर पू. राकेशभाई ने एक-एक वाक्य माझक पर पढ़ा और प.पू. गुरुजी के साथ पू. ओ.पी. अग्रवालजी, पू. राकेशभाई, प.पू. दीदी व पू. बंसरी दीदी ने संशोधन करा कर भवित अदा की। प.पू. गुरुजी को कोटि-कोटि धन्यवाद कि अपनी देह व आयु को तनिक भी गिने बिना निरंतर अपना मार्गदर्शन देकर हमें निहाल कर रहे हैं।

इसी प्रकार, कई आत्मीय मुक्तों के साथ-सहकार से पू. सुहृदस्वामीजी-पू. योगीस्वामी भोजन विभाग, पू. आशीष शाह-पू. मैत्रीस्वामी डॉकोरेशन विभाग, पू. अक्षरस्वरूपस्वामी-पू. पुनीत मल्होत्रा-पू. शिवम् ऑडियो-विडियो-फोटोग्राफी विभाग, पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी-पू. राकेशभाई शाह-पू. कौशिकभाई जानी



एवं पू. परछाई दीदी-पू. गार्गी दीदी भक्तों के आवास व वाहन व्यवस्था की सेवा के लिये तत्पर हुए थे।

अक्षरज्योति में पू. नित्या दीदी और पू. गंगा दीदी की निगरानी में करीब दो महीने तक लगातार दिल्ली की स्थानिक भाभियाँ और शनिवार-रविवार के अवकाश में पंजाब से कई बहुनें-भाभियाँ कृत्रिम फूलों के तोरण बनाने की सेवा के लिये आती रहीं। जो मुक्त नहीं आ पाते थे, वे घर से फूल बना कर भेजते थे। पू. स्वाति दीदी व पू. परछाई दीदी के नेतृत्व में स्वरूपों के लिये कलात्मक हार, बैंज एवं स्मृति भेंट इत्यादि बनाने की सेवा में सत्संग की कई युवतियाँ ओतप्रोत थीं। समय-समय पर पू. दीक्षा दीदी, पू. नम्रता दीदी के साथ पू. केसर दीदी-पू. कंकु दीदी के अतिरिक्त कई सहयोगियों ने विभिन्न सेवा कर रहे मुक्तों के लिये नाश्ता इत्यादि बनाने की जो सेवा की, उसे भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। सच कहें तो लिखते-लिखते लेखन की गति धीमी हो जाये और शायद दस-बारह कलमों की स्याही भी कम पड़े, इतने मुक्तों ने आत्मीयता व अपनेपन से भक्ति अदा करने में कोई कमी नहीं रहने दी। सो, जैसे कि गुरुहरि काकाजी हमेशा कहते—

जमात करामात... ये सब अकेले हाथ नहीं बना... धन्यवाद हो मेरे साथीदारों को!
तो, सभी को उनकी सेवा और साथ-सहकार के लिये अंतर से नमन करते हुए धन्यवाद-धन्यवाद हुआ करता है...

मध्य नवंबर से तो सेवाओं को कार्यान्वित करने का समय आ गया!

परंतु, जैसे भगवान अनादि के हैं, वैसे ही माया भी अनादि की है और... प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि जब कोई बड़ा उत्सव होता है, तब महाराज साथ में ही कोई दूसरा प्रसंग भी खड़ा कर देते हैं, ताकि उनका भक्त समाज तैयारियों में क्रियालूप न होकर, प्रभु को याद करे-भजन करे कि प्रसंग भी सुलझ जाये और समारोह भी अच्छी तरह हो सके।

ऐसे ही साधु पर्व की सेवाएँ जब जोर-शोर से हो रही थीं कि तभी 19 नवंबर को पू. कीर्तिभाई जानी-पू. शोभना भाभी के सुपुत्र पू. प्रणव गंभीर रूप से बीमार हो गये। Liver Infection के उपचार के लिए उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया। जांच-पड़ताल के बाद डॉक्टरों ने Liver Transplant कराने की सलाह दी। प.पू. गुरुजी द्वारा कुटुंबभाव की आत्मीयता और प्रीति से

विकसित दिल्ली के सत्संग समाज को, ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के भक्त पू. डॉ. उपेंद्र पटेल के Liver Transplant का पहले अनुभव था ही, अतः पू. प्रणव के बारे में सुन कर सभी चिंतातुर हो गये।



जीवन में किसी भी प्रसंग पर भक्त की प्राथमिकता का उदाहरण देते हुए, प.पू. गुरुजी ने कहा— **पिंटू (प्रणव) ठीक हो जाये वैसा करें, फिर भले हम साधु पर्व न भी मनायें...!** इसीलिए कहते हैं ना कि प्रभु भक्तवत्सल हैं!!

सब भजन का सहारा लेकर, आत्मीय डॉ. कैलाश सिंहजी के मार्गदर्शन में पू. प्रणव का Liver Transplant कराने के लिए कटिबद्ध हो गये। पू. गार्गी दीदी (पूर्वाश्रम में पू. प्रणव की बहन) Liver donation के लिए तैयार हो गयीं। पू. प्रणव और पू. गार्गी दीदी के कई परीक्षणों के बाद, अंततः **15 दिसंबर 2023** को Liver Transplant का ऑपरेशन हुआ। **18 घंटे** के ऑपरेशन के बाद पू. डॉ. कैलाश सिंहजी ने जब सूचना दी कि ऑपरेशन अच्छा हो गया है और पू. प्रणव व पू. गार्गी दोनों ठीक हैं, तब सबने चैन की साँस ली।

इस पूरे प्रसंग के दौरान पू. रुचिका (पू. प्रणव की धर्मपत्नी) ने प्रभु व प.पू. गुरुजी के कर्तापन का स्वीकार करते हुए, प.पू. आनंदी दीदी की हुँफ से अनुकरणीय मानसिक समता और धैर्य का परिचय दिया। पू. प्रीति ठक्कर ने भी उसके साथ मिलकर, खूब अपनेपन और तत्परता से सेवा करी।

भक्तों के भजन के फलस्वरूप भगवान् स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी महाराज, गुणातीत स्वरूपों और प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद से माया की ये आंधी टल गयी और साधु पर्व में कोई विघ्न नहीं डाल पाई ! कोटि वंदन सह धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद !

✿ ‘साधु पर्व’ का सबको निरंतर स्मरण रहे और इस समारोह के लिये दिल्ली आने का खिंचाव रहे, ऐसी भावना से पू. पुनीत मल्होत्रा ने बहुत रचनात्मक तरीके से तीन-चार छोटे-छोटे Promo-Video बना कर, You tube के माध्यम से गुणातीत समाज के मुक्तों को दिसंबर के हर सप्ताह में भेजे, जो सभी के अंतर को छू गये !

✿ 21 नवंबर को दिल्ली मंदिर में वर्षों से जुड़े पू. अमृतभाई पटेल साहेब के साथ पू. आशिष शाह व पू. मिलन माणेक अमदावाद में तैयार हो रही प.पू. गुरुजी की संगमरमर की मूर्ति का निरक्षण करने गये।

✿ 21-22 नवंबर—दो दिन पू. विजयपालजी, पू. जयप्रकाश मल्होत्राजी, पू. ओ.पी. अग्रवालजी, पू. राकेशभाई शाह और पू. शिवम् गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में प.पू. गुरुजी की छोटी मूर्ति एवं प्रसाद सहित ‘साधु पर्व’ का विशिष्ट निमंत्रण पत्र देने गये और स्वरूपों को राजी करके पर्व मनाने का आशीर्वाद प्राप्त किया। भक्ति से भरपूर यह विशिष्ट निमंत्रण पत्र सभी को अत्यंत पसंद आया।



- ✿ 27 नवंबर की सायं पू. प्रदीपजी ने नाटक की रिहर्सल करानी शुरू की। 30 नवंबर को जब प.पू. गुरुजी को नाटक के भजन व कपलेट सुनाने शुरू किये, तो तीन भजन सुनने के बाद वे बोले —
भजन बहुत अच्छे रिकॉर्ड हुए हैं। अक्षरधाम से मत्कानी अंकल *excellent* कहेंगे।
यूँ नाटक की रिहर्सल की शुरूआत में प.पू. गुरुजी ने नाटक की सेवा करने वालों को आशीर्वाद दे दिये।
- ✿ 2 दिसंबर की तड़के प.पू. गुरुजी की मूर्ति अमदावाद से दिल्ली मंदिर आ गई। दोपहर 3:00 बजे crane से मूर्ति को कल्पवृक्ष हॉल की balcony में पहुँचा कर, फिर हॉल में ले जाया गया। इस समय पवर्ड से पू. अश्विनभाई और पू. घनश्यामभाई भी आये हुए थे। सो, धुन करने के बाद पू. घनश्यामभाई ने मूर्ति का अनावरण किया। जयपुर के आर्टिस्ट पू. कमलजी ने मूर्ति को पेइन्ट करना शुरू किया।
- ✿ 7 दिसंबर को अशोक विहार के रामलीला मैदान में संतों एवं मुक्तों ने धुन करके, ‘साधु पर्व’ का आयोजन करने की मंगल शुरूआत की। 2017 में इस स्थान को ‘दिव्यधाम’ नाम दिया गया था। सो, अबकी बार भी यही नाम दिया था। तीन दिन का महोत्सव यहीं होने वाला था। जैसे-जैसे टेन्ट इत्यादि की व्यवस्था होने लगी, तो सेवकों को दर्शन व बल देने के लिये प.पू. गुरुजी दोपहर को आते।
- ✿ 18 दिसंबर को प.पू. वशीभाई यज्ञ एवं मूर्तिप्रतिष्ठा के विषय में मार्गदर्शन देने के लिये विशेष पथारे, जबकि 22 दिसंबर को तो उन्हें आना ही था। दरसअल, सत्पुरुष भीड़ भक्ति से न केवल आदर्श स्थापित करते हैं, बल्कि एहसास कराते हैं कि उनकी प्रत्येक क्रिया जीवलक्षी होती है। अपने इस आगमन से ‘साधवो हृदयं मम’ नाटक में भाग लेने वाले कलाकारों को आशीर्वाद देते हुए प.पू. वशीभाई ने दो मिनट धुन कराई कि सभी अपनी भक्ति अदा करने में सफल हों।
- ✿ 20 दिसंबर तक कंथारिया से पू. विज्ञानस्वामीजी, पू. धरमस्वामीजी एवं प.पू. दिनकर अंकल दिल्ली मंदिर आ गये। तब प.पू. गुरुजी की मूर्ति पेइन्ट होकर तैयार हो गई थी।

सो, रात 10:45 बजे इन सबकी हाजिरी में धुन करते हुए, कई मुक्तों ने श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के चरणारविंद के नीचे तैयार किये आसन पर प.पू. गुरुजी की मूर्ति पथरा कर उसे कपड़े से ढक दिया, क्योंकि 25 दिसंबर को



प्रत्यक्ष स्वरूपों के वरद् हस्तों से प्राण प्रतिष्ठा होनी थी। जिन मुक्तों ने मूर्ति पथराने की सेवा की, उन सभी को प.पू. गुरुजी की ओर से बरकत के 500 रुपये पू. अभिषेक ने दिये।

※ 21 दिसंबर की दोपहर को प.पू. गुरुजी 'दिव्यधाम' से 'अक्षरज्योति' बहनों के निवास स्थान के बाहर आये। तब प.पू. दीदी ने उन्हें सेवक से प्रार्थना कहलवाई कि एक-एक मुक्त दस-दस मुक्तों जितनी सेवा कर सके। तब गाड़ी में बैठे-बैठे ही प.पू. गुरुजी ने 2:55 से 3:15 तक तीव्र धुन की ओर सबसे करा कर सभी के भीतर अपार बल भर दिया।

मंदिर का परिसर तो हर्षोल्लास से भरा हुआ था। गुरुहरि काकाजी महाराज की पुष्प समाधि 'अक्षरतीर्थ' पर अनुपम दर्शन हो रहा था। विष्वात आर्टिस्ट पू. अमृतभाई पटेल साहेब के निर्देशन में पू. मैत्रीस्वामी, पू. लक्ष्मी शुक्लाजी, पू. गौरव शर्मा, पू. कार्तिक जानी एवं साथियों ने श्रीजी महाराज के प्रिय भक्तराज दादाखाचर के दरबार की प्रतिकृति बनाई थी। यहाँ श्रीजी महाराज के निवास कक्ष 'अक्षर ओरड़ी' का दृश्य बनाया था। जिसमें श्रीजी महाराज पलंग पर विराजमान थे और मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी उनकी सेवा में हाजिर थे। श्रीजी महाराज द्वारा गढ़ा में स्थापित 'वासुदेव नारायण' की मूर्ति की प्रतिकृति लगाई थी। इसका पूरा प्रसंग भी अंकित किया था कि कब और कैसे यह मूर्ति श्रीजी महाराज ने स्वयं पथराई थी। बाहर की दीवार पर दादाखाचर की अनन्य भक्ति के कुछ प्रसंग भी अंकित किये थे। पुष्प समाधि के चारों ओर गुरुहरि काकाजी की प्रासादिक वस्तुयें दर्शनार्थ रखी थीं। गढ़ा प्रथम प्रकरण के वचनामृत की ऑडियो लगातार चलने से वातावरण दिव्यता से भरपूर था। ऐसा लगता था कि मानो 250 साल पहले श्रीजी महाराज के समय में पहुँच गये हों। यहाँ बैठ कर भजन करने का सहज ही मन होता। श्रीजी महाराज दादाखाचर के दरबार में 30 साल रहे, वे चाहते तो मंदिर निर्माण कर सकते थे, परंतु उनका उद्देश्य तो अपनत्व से भक्तों के घर और हृदय को मंदिर बनाना था। गुरुहरि काकाजी के आशीर्वाद से प.पू. गुरुजी ने अथक् परिश्रम से दिल्ली में ऐसे समाज का सर्जन किया है।

21 और 22 दिसंबर तक सभी स्वरूपों का मंदिर में आगमन हो गया। पू. सुहृदस्वामी, संत-हरिभक्त, प.पू. आनंदी दीदी, बहनें व भाभियाँ निराली उमंग से देर रात तक अपनों के स्वागत-सत्कार में निमग्न थे। सुबह से रात तक लगभग 500 भक्तों के आगमन से 'साधु पर्व' का अनोखा माहात्म्य झलक रहा था।



हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, यू.पी., महाराष्ट्र, गुजरात, केरल और विदेश के मुक्तों के आने से, योगी परिवार के अपनेपन की सुवास चहुं ओर महक रही थी।

प.पू. गुरुजी की इच्छानुसार पिछले कई वर्षों से उत्सवों के सभाखंड का नाम 'कल्पवृक्ष' रखते हैं, सो 'दिव्यधाम' परिसर के सभाखंड का नाम 'कल्पवृक्ष' ही रखा था। इसके प्रवेश द्वार के आगे प.पू. गुरुजी की मूर्ति की आउटलाइन में एक तरफ प.पू. बापा की मूर्ति के साथ प.पू. गुरुजी की युवा अवस्था की मूर्ति थी और प.पू. बापा के आशीर्वचन लिखे थे—

दिलीप (गुरुजी) को' साधु थहस...

और दूसरी तरफ साधु बनने के बाद प.पू. बापा के साथ की मूर्ति थी, जिस पर गुरुहरि पप्पाजी के आशीर्वचन लिखे थे—

बापा के वचन से तूने साधु बनने की 'हाँ' कर दी; बापा एक-एक को भगवान जैसा बना देंगे। इसके ठीक सामने भोजन के चार खंड थे, जिसका नाम 'प्रसादम्' रखा था। इसके प्रवेश द्वारों के आस-पास कलात्मक रीति से सभी गुणातीत स्वरूपों की बड़ी वक्ष प्रतिमायें (बस्ट फोटो), उन्हीं के दिये अध्यात्म सूत्रों को अंकित करके लगाई थीं।

जैसे कि गुरुहरि काकाजी कहते थे— योगी परिवार! तो, पिछले पाँच सालों में एवं कोविड के दो साल दौरान हमारे जिन स्वरूपों ने स्थूल रूप से अक्षरधामगमन किया और जो हरिभक्त कुटुंबीजन अक्षरनिवासी होने के कारण आज हमारे बीच नहीं हैं, उन्हें श्रद्धांजली देते हुए 'दिव्यधाम' के परिसर में प्रवेश करते ही 'श्रद्धा सुमन' नामक एक मंडप बनाया था। जिसमें प्रवेश करते ही थर्मोकोल से हाथ की मुट्ठी बना रखी थी और सूत्र लिखा था—

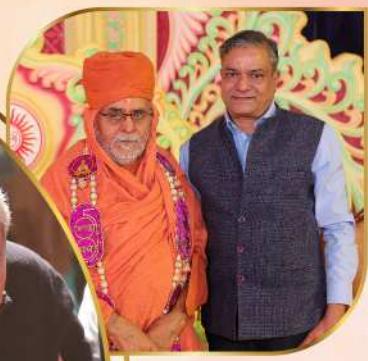
एकता और अखंडता ही गुणातीत समाज की रीति-नीति है।

मंडप के मध्य में विशाल बोर्ड पर अक्षरधामगमन किये स्वरूपों की मूर्तियाँ एवं सत्संगियों के फोटोज़ वर्ष के क्रमानुसार लगा कर, नमन करते हुए प्रार्थना लिखी थी।

इसी मंडप के साथ 'दिव्य दर्शन' नामक विश्राम कक्ष बनाया था और उसके पीछे बच्चों के खेलने के लिए एक क्षेत्र बनाया था। प.पू. आंनदी दीदी के मार्गदर्शन से बच्चों की लृचि के अनुरूप खिलौने व अल्पाहार इत्यादि की व्यवस्था की थी, ताकि बच्चे बाहर ठंड से परेशान या बीमार

ना हो और आनंद करते हुए उत्सव के दिव्य वातावरण में आशीर्वाद पा सकें। सच, हमें कैसे संत मिले हैं कि जो आबाल, युवा और वृद्ध सभी को राजी करने निरंतर तत्पर रहते हैं। अंतर से प्रार्थना है कि इनके ऐसे बेजोड़ हृदय के भावों को हम समझें।

23 दिसंबर सुबह 'साधु पर्व' के शुभारंभ पर स्वागत...



स्वरूपों, संतों, बहनों व अक्षरमुक्तों के ध्यारने से सब धन्य हो गए...



साधु यर्व मरजी में तेरी
मिट जाएं हैया गाये..





‘महिमामय वाणी-वर्तन है...’ भजन पर भक्तिनृत्य से प्रार्थना...



23 दिसंबर की सुबह

करीब 9:30 बजे सभा मंडप में प्रगट स्वरूपों ने प्रवेश किया। जगरांव के पू. अनूप टांगरीजी ने 'तेरे मंदिर के आगे काका, मेरा घर बन जाए...' भजन प्रस्तुत किया और पू. उज्ज्वल ने 'घनश्यामाय नीलकंठाय....' श्रीजी वंदना गाकर 'साधु पर्व' का शुभारंभ किया। सर्वप्रथम पू. राकेशभाई शाह ने प्रत्यक्ष स्वरूपों का आभार व्यक्त किया एवं पानीपत के पू. पुनीत गोयलजी ने अभिनंदन - स्वागत करते हुए सभी स्वरूपों के चरणों में साधु पर्व की प्रार्थना की –

...हम सभी साधु पर्व के रूप में तीन दिन आनंदोत्सव मनाने इकट्ठे हुए हैं। एक दिव्य यात्रा का शुभारंभ होने जा रहा है। दिव्य स्मृतियों का लाभ और आध्यात्मिक ख़ज़ाना हमें मिलने जा रहा है। सुहृदस्वामीजी की अगुवाई में सभी संतों, युवकों, माझियों और आनंदी दीदी की अगुवाई में सभी बहनों, युवतियों और मामियों की जो भावना है, उसमें काकाजी महाराज और गुरुजी के प्रति माहात्म्ययुक्त सेवा, भक्ति व सुहृदभाव छुपा है...
शिक्षापत्री में श्रीजी महाराज ने 116वें श्लोक में लिखा है –



निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥

इसका भावार्थ है कि अपनी आत्मा को तीनों देह से पृथक मान कर परमात्मा की सर्वदा भक्ति करें। काकाजी महाराज ने इसे अतिश्रेष्ठ बताया और... भक्ति का स्वरूप है ये साधु पर्व। हमने अपनी मनमानी बहुत कर ली, अब तो आपकी मरज़ी में मिट जायें। हम सब मिलकर एक कुटुंबभावना के रूप में ये साधु पर्व मनाएं...

गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बात में स्पष्ट बताया है कि केवल महाराज को पुरुषोत्तम मानना और साधु यानि गुणातीत को अक्षर मानना। उनके संबंध वाले सभी अक्षर रूप हैं, जो धरती पर देह धारण करके पथारे हैं। तो, हम देश की राजधानी दिल्ली में सब धन्व-धन्व हो गये कि साधु पर्व के पवित्र अवसर पर सभी स्वरूप, संत, बहनें व अक्षरमुक्त पथारे हैं। ऐसी भावना से हम सबका खूब-खूब अभिनंदन और स्वागत करते हैं...

प. पू. गुरुजी ने सदैव अपने मार्गदर्शन में सभी स्वरूपों की महिमा ही समझाई है। ज्ञान की बातें बताना एक बात है और उस प्रकार जीना दूसरी बात है। हमारी पल-पल की क्रिया में यह झलके, वही सच्चा ज्ञान है। गुरुजी और उनके जीवन को निहारने से यह सारी सीख मिली...



भगवान् स्वामिनारायण के वचनामृत पंचाला 1 में लिखा है कि पशु के सुख से मनुष्य का सुख अधिक है और भगवान् के अद्वाराधाम का सुख तो अतिशय अधिक है... प्रत्यक्ष स्वरूप की प्राप्ति और उनसे हमारे संबंध की बात करें, तो हमें खुद ही मालूम नहीं होता कि कब वे हमारे हृदय में बैठ कर, हमारे भीतर की सारी बात जान लेते हैं...

श्रीजी महाराज ने कहा था कि गुणातीतानंदस्वामी मेरे रहने का धाम अद्वाराधाम हैं और मैं उन्हें सौराष्ट्र के हरिभक्तों को ब्रह्मीश में देता हूँ। जैसे महाराज ने जूनागढ़ मंदिर के लिये खास गुणातीतानंदस्वामीजी की भेंट दी, वैसे ही काकाजी महाराज ने गुरुजी की ब्रह्मीश हमें दी... साहेबजी, गुरुजी, प्रेमस्वरूपस्वामीजी, निर्मलस्वामीजी, विज्ञानस्वामीजी, दिनकर अंकल, भरतभाई, वशीभाई, हंसादीदी सभी के श्रीचरणों में एक प्रार्थना है कि आपकी जो प्राप्ति हुई है, तो केवल उस मस्ती में हम जीयें। पल-पल के कर्ता-हर्ता आप हैं, ऐसा मान कर साथी मुक्तों को आपका स्वरूप ही मान कर जीयें। हर प्रसंग पर भजन का ही बल लें। काकाजी, पप्पाजी व स्वामीजी के मिशन-अभिप्राय के मुताबिक समस्त गुणातीत समाज एक होकर-मिलकर सुहृदभाव का कलश चढ़ाये और आपकी मरजी में भिट जाये। ऐसी आज की मंगल बेला पर आप सबके श्रीचरणों में प्रार्थना।

इसी दौरान, दिल्ली-बेला रोड से पधारे मणिनगर संस्था के पू. दिव्यविभूषणस्वामीजी व संतों का स्वागत पू. सुहृदस्वामीजी ने हार, शॉल व स्मृति भेंट अर्पण करके किया। तदपश्चात् पू. दिव्यविभूषणस्वामीजी ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा—

...स्वामिनारायण भगवान् के धारक जीवनप्राण अबजी बापा अपनी बातों में समझाते हैं कि जब से सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान् प्रगट हुए, तब से आत्यांतिक मोक्ष की शरद ऋतु चल रही है। जब तक सूर्य और चंद्र रहेंगे, तब तक यह चलती रहेगी। गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है कि पत्ते-पत्ते पर स्वामिनारायण का नाम गूंजेगा। स्वामिनारायण भगवान् का नाम ऐसे संतों के प्रताप से गूंजता ही रहेगा। पूज्य मुकुंदस्वामी का दिल्ली के सत्संग में बहुत बड़ा योगदान है। वे सभी को भगवान् की पहचान करते हैं, भगवान् का ज्ञान भी परोसते हैं और भगवान् से जोड़ते हैं। भगवान् स्वामिनारायण, जीवनप्राण अबजी बापा-श्री मुक्तजीवन स्वामीबापा व गुणातीत समाज से प्रार्थना करते हैं कि मुकुंदस्वामी 'गुरुजी' का स्वास्थ्य अच्छा रखें, बहुत निरोगी रखें और सब भक्तों को उनका लाभ मिलता रहे।

मणिनगर स्वामिनारायण गादी स्थान के आद्य स्थापक मुक्तजीवन स्वामीबापा



और योगीजी महाराज का आपस में जो स्नेह-प्रेम था, वो आज तक गंगा की भाँति प्रवाहित ही है। योगीजी महाराज जब-जब अमदावाद पथारते थे, तब मणिनगर स्वामिनारायण मंदिर में अवश्य पथारते थे। दोनों महापुरुषों में इतना आत्मीय संबंध था कि योगीजी महाराज का स्वागत करने स्वामीबापा स्वयं जाते और उन्हें अपनी गद्दी पर बिठाते थे। दोनों महापुरुष ज्ञानगोष्ठी करते थे। उसी परंपरा में सोखड़ा धाम के स्थापक हरिप्रसादस्वामीजी और मुक्तजीवन स्वामी बापा के उत्तराधिकारी पुरुषोत्तमप्रियदासस्वामीजी का एक-दूजे के प्रति स्नेह आज भी वैसा का वैसा ही रहा है। मणिनगर में जब-जब किसी प्रोग्राम का आयोजन होता था, तो हरिप्रसादस्वामी स्वयं आते थे और पुरुषोत्तमप्रियस्वामीजी भी स्वयं सोखड़ा जाते थे। ऐसे ही हम भी कभी-कभी दिल्ली मंदिर में मुकुंदस्वामी का दर्शन करने आते हैं। यहाँ के संत भी बेला रोड स्वामिनारायण मंदिर में आते हैं। हमारा स्नेह संबंध प्रगाढ़ है। भगवान् स्वामिनारायण की कृपा से यह सदैव चलता रहे, ऐसी प्रार्थना करते हैं...



पू. दिव्यविभूषणस्वामी द्वारा स्वरूपों के निरामय स्वास्थ्य की मंगल प्रार्थना के बाद, मंचस्थ स्वरूपों को पर्व के प्रतीक चिन्ह व मौतियों से बनाये हार एवं विशिष्ट बॉच अर्पण करके स्वागत किया गया। साथ ही पुष्प वर्षा से सभाखंड में उपस्थित सभी हरिभक्त अतिथियों का स्वागत किया गया। दिल्ली मंदिर से जुड़ी बहनों की प्रेरणा मूर्ति प.पू. आनंदी दीदी ने तो स्वयं स्वरूप बहनों, साधक बहनों एवं गृहस्थ भाभियों पर पुष्प वर्षा करके अभिनंदन किया।

तत्पश्चात् जैसे फलदार वृक्ष झुकता चला जाता है, साधुता के ऐसे निर्मानी गुण का दर्शन कराने वाले पू. विज्ञानस्वामीजी ने 'साधु पर्व वंदना' की—

...यहाँ सब जो तैयारियाँ चल रही थीं, वो देखकर दिल द्रवित हो जाता है कि कितनी मेहनत की। गुरुजी ने ऐसा समाज तैयार किया है कि सबके अंदर एक ही भावना रहती है कि सामने वाले मुक्त के लिये कैसे अच्छी व्यवस्था कर दें, उनकी सेवा में मिट

जायें। उत्सव का सूत्र— मरज़ी में तेरी मिट जायें, यही हमारी साधना है। हमसे कोई साधन हो नहीं पाता है, लेकिन बड़े पुरुष की 'जी हजूरी' करते रहेंगे,



तो वे राजी हो जाते हैं। उनके साथ हमारा संबंध सखा और साथी का है, यदि हम थोड़ा भी प्रयत्न करेंगे, तो वे राजी हो जायेंगे...

साधु के गुण प्राप्त करना साधना नहीं है, लेकिन सत्पुरुष की कृपा अनिवार्य है। जब वे कृपा करते हैं, तब वो गुण ऐसे ही आ जाते हैं। कई साल पहले खामिनारायण भगवान पृथ्वी पर आये और संबंध योग का एक मार्ग चलाया...

बहनों के भगवान भजने का काम अशक्य तो था, लेकिन योगीजी महाराज के वचन से काकाजी, पप्पाजी और बा ने किया। वैसे ही काकाजी ने गुरुजी से कहा—‘मुकुंद’ तुम्हें दिल्ली जाना है और वहाँ अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा सबको दृढ़ करानी है। उस समय अशक्य जैसा ही लगता था। पर, आज हम सब देख रहे हैं कि सत्पुरुष जो भी संकल्प करते हैं, वो सिद्ध होता है। उन्होंने संकल्प किया है, तो वे हमारी पूर्णहुति करायेंगे ही करायेंगे। उनकी कृपा के पात्र बन सकें, ऐसी अंतर से प्रार्थना...

तत्पश्चात् दिल्ली मंदिर से आत्मीयता से जुड़े हिन्दी सिनेमा के विद्यात् पार्श्वगायक अक्षरनिवासी पू. महेन्द्र कपूरजी के सुपुत्र पू. रोहन कपूरजी एवं पौत्र पू. सिद्धांत कपूरजी प.पू. गुरुजी के प्रेमवश उत्सव में आये। उन्हें हार व स्मृति भेंट से सम्मानित कया गया। अपने पिता पू. महेन्द्र कपूरजी को याद करते हुए पू. रोहन कपूरजी ने हृदय उद्गार कहे—

महेन्द्र कपूरजी जब उदास थे; मानसिक तनाव में थे, उनके जीवन में बहुत-सी कठिनाई आ गई थीं, तब उस वक्त गुरुजी ने उनका साथ दिया। उनके सिर पर आशीर्वद लप अपना हाथ रखा। जब भी वे किसी तनाव में होते थे, तो अचानक गुरुजी का दिल्ली से फोन आ जाता और कहते—महेन्द्रजी, चलो धून करते हैं। तब पूरा परिवार मिल कर फोन पर ही धून करता था। उसके बाद हमें जो शांति मिलती, वो शायद प्रभु की ही भेजी हुई होती। तो, गुरुजी का ऋण हम कभी चुका ही नहीं पायेंगें। हमारे गुरुजी हजारों साल जियें और हम सब पर कृपा बरसाते रहें... ऐसी प्रार्थना करके पू. रोहनजी एवं पू. सिद्धांतजी ने पू. महेन्द्र कपूरजी द्वारा गाया और उन्हें खूब पंसद निम्न भजन की पंक्तियाँ गाईं—

नदिया ना पिये कभी अपना जल,

वृक्ष ना खाये कभी अपने फल,

अपने तन का, मन का, धन का दूजों को दे जो दान है,

वो सच्चा इंसान रे, इस धरती का भगवान रे।



अगर- सा जिसका अंग जले और दुनिया को मीठी सुवास दे,
दीपक- सा उसका जीवन है, जो दूजों को अपना प्रकाश दे,
धर्म है जिसका स्वामिनारायण, सेवा गुरुजी का नाम है,
वो सच्चा इंसान रे, इस धरती का भगवान रे।

इन पंक्तियों ने साधु के जीवन का सार बता दिया कि भगवत्स्वरूप संत की कोई भी क्रिया हेतुलक्षी नहीं, हमेशा चैतन्यलक्षी होती है। उनका मूल उद्देश्य केवल 'देना' होता है। जीवन सिर्फ भक्तों के लिये व्योछावर है। चैतन्य के विकास हेतु मार्गदर्शन करते हैं।

साधुता का एक बड़ा लक्षण है—स्थितप्रज्ञता! लौकिक दृष्टि से देखा जाए तो जिसका मन किसी भी सँजोग में अस्थिर न हो। ऐसे गुण को धारे हुए प.पू.भरतभार्ड ने भजन के बाद साधुता के गुण बताते हुए आशीष दी—

...पाँच साल पहले इसी जगह काकाजी-पप्पाजी शताब्दी महोत्सव हमने मनाया था। अभी भी वो स्मृति ताजी है कि उस समय ज्योति बहन की तबियत अच्छी नहीं थी, फिर भी वे आई थीं और सबको खूब आनंद कराया था। सभी गुणातीत स्वरूपों का जब भी हमें सान्निध्य प्राप्त होता है, तो एक अलग-सी वाइब्रेशन्स, दिव्यता, आनंद, उत्साह-उमंग हमें सहज ही महसूस होती है। गुणातीत संतों की हम पर बहुत बड़ी करुणा है कि ऐसे पर्व मना कर हमें आनंद प्रदान करते हैं। कल रात को करीब 12 बजे हम लोग आये, तो उस समय भी सबका स्वागत करने के लिए गुरुजी एकदम फ्रेश बैठे थे। गेट पर आनंदी दीदी वगैरह सब स्वागत कर रहे थे... काकाजी की समाधि स्थान पर बना दादाखाचर का दरबार हमने देखा। उसे देख कर सहज ही याद आ गया कि गुरुजी को ऐसे भक्त और कुटुंबभाव पसंद है। स्वामिनारायण के संबंध में जो भी आये वो मेरे हैं। गुणातीत समाज के जो भी छोटे-बड़े भक्त हैं, वो सब मेरे हैं—गुरुजी का ऐसा भाव सहज हमें अंतर में याद आ गया...



इसी प्रकार काकाजी ने 1967-68 में विमुख होने के बाद पश्चिम में से उत्तर की तरफ दृष्टि करी। गुरुजी व प्रेमस्वामी को सेलेक्ट करके यहाँ भेजा। उस समय यहाँ कोई सत्यंगी नहीं थे। कितना परिश्रम और मुश्किल थी? आज हमें 11-12 डिग्री ठंड



में भी मुश्किल हो रही है। जबकि उस समय इससे भी ज्यादा ठंड में भारत साधु समाज में रहने वे आये। प्रेमस्वामीजी का प्रसंग सुना है कि गुरुजी की देह ऐसी नहीं थी कि इतनी ठंड सहन कर सके। फिर भी वे यहाँ आये और रहे...

यहाँ जो समाज विकसित हुआ, वो अलग ही हुआ है... गुरुजी को सबसे ज्यादा कुटुंबभाव पसंद है। गुरुजी खाली बोलते ही नहीं हैं कि मुझे कुटुंबभाव पसंद है, जी कर बताते हैं। अभी वशीभाई का बर्थ डे था और उससे पहले मेरा बर्थ डे था, तो गुरुजी रात को 10 बजे सरप्राइज़ में पवर्फ़ आ गये। ये जो कुटुंबभाव की भावना है, वो एक अलग ही बात है...

गुरुजी किस तरह का कुटुंबभाव चाहते हैं, वो बात करता हूँ। एक बार गुरुजी कहीं पधरामणी में गये थे और वहाँ उस भक्त से पूछा कि आपके घर में टी.वी. नहीं हैं? उसने कहा कि इस साल लेना था, लेकिन अभी कुछ फाइनेंशियल डिफिकल्टी है, इसलिये अगले साल लेने का सोचा है। इतने में गुरुजी के पास किसी का फोन आया कि हमने नया टी.वी. लिया है, तो आप उसका पूजन करने के लिए आना। गुरुजी ने उनसे पूछा कि टी.वी. कब लगाने वाले हों? भक्त ने कहा— आज ही लगायेंगे। गुरुजी बोले— नहीं, ऐसा मत करो। वो टी.वी. यहाँ लेकर आओ। वे टी.वी. लेकर गुरुजी के पास आये, तो जिस भक्त के यहाँ बैठे थे, उन्हें वह टी.वी. दिलवा दिया और उनसे कहा कि आप दूसरा ले लेना। यह कुटुंबभाव की पराकाष्ठा है।

एक बार ओ.पी. अग्रवालजी मुंबई में ऑफिस के काम से कहीं गये थे। गुरुजी ने दोपहर को उन्हें फोन करके पूछा कि कहाँ पर हो? उन्होंने बताया कि नरिमन पॉइंट पर हूँ। गुरुजी ने कहा कि अभी फ्लाइट पकड़ कर दिल्ली आ जाओ। ओ.पी. अग्रवालजी घर जाये बिना डायरेक्ट एयरपोर्ट गये और फ्लाइट पकड़ कर दिल्ली आ गये। तो ये अपनेपन का भाव है... गुरुजी को भक्तों की और संबंध वाले की महिमा है...

गुरुजी भजनिक भी बहुत हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से भी गुरुजी किसी को सही रास्ता बताने, सही बात करने में कभी चूकते नहीं हैं। हमें कैसा भाव रखना चाहिए? हम कहीं जाते हैं, तो हमें कैसा वर्तना चाहिए? आध्यात्मिक दृष्टि से हमें आगे लेने के लिए हमें कैसा जीवन जीना चाहिए? वो सब गुरुजी अपने सेवकों को बहुत बारीकी से समझाते हैं। बहनें लंदन गई थीं, तो किशोरभाई मारटर बताते हैं कि मैं बहुत इम्प्रेस हो गया। जब मैं उन्हें काकाजी के प्रसादी स्थान का दर्शन कराने लेकर गया था, तो वहाँ लंडन रूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स में भाईयों ने दंडवत् किया और बहनों ने पंचांग प्रणाम किया। वो



बताते हैं कि प्रसादी के स्थान की इतनी महिमा गुरुजी ने भक्तों में डाली है। गुरुजी के ये उत्सव का इनवीटेशन देने के लिये राकेशभाई और अन्य भक्त पर्व और ताङ्देव आये थे। गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों में जाकर बहुत अच्छी तरह इनवीटेशन दिया। देख कर लगता है कि ये कोई अलग भाव है। **कुटुंबभाव, आत्मीयभाव, दिव्यता और महिमा का भाव हमारे अंदर में जितना होता है, उनने ही दिव्य गुणों की प्राप्ति होती है।** स्वामिनारायण भगवान ने वचनामृत में कहा है कि तुम भले सत्यंगी हो, पर अगर माहात्म्य नहीं है, तो आधे सत्यंगी और आधे विमुख हो। यदि माहात्म्य है, तो पूरे सत्यंगी हो। ऐसे माहात्म्य का सिंचन गुरुजी हम सब में करते हैं और ऐसी महिमा का दर्शन करा कर हमें प्रेरणा देते हैं... गुरुजी की साधुता भी बेमिसाल है। ऐसी साधुता के गुण, माहात्म्य का झारना हमारे अंदर हमेशा-हमेशा बहता रहे...

तदोपरांत ‘साधु पर्व’ निमित्त प.पू हंसा दीदी द्वारा बहनों से बनवाया गुजराती भजन – तन, मन, धन आत्म ओवारे, गुणातीत साधु चरणे... साधु पर्व मरजी में तेरी भिट जाये हैया गाये... पू. इलेशभाई ने प्रस्तुत किया।

एक बार मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने श्रीजी महाराज से पूछा कि मुझे सबसे ज्यादा किस बात पर ज़ोर देना चाहिये? तब श्रीजी महाराज ने उन्हें आझा करी कि तुम्हें कथा-वार्ता पर अधिक ज़ोर देना है। प.पू. गुरुजी अकसर बात करते हैं कि ताङ्देव में गुरुहरि काकाजी सुबहः बजे जब दाढ़ी (शेव) करते, तब से जो कथा करनी शुरू करते, तो देर रात मानो नायगरा वाटरफॉल-जल प्रपात की तरह आशीष बरसाते रहते। उसी ब्रह्मप्रवाह में हमें लगातार भिंगोते हुए, प.पू. गुरुजी ने अनुग्रह करके समय-समय पर आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक सर्व प्रकार से मार्गदर्शन दिया है। इनके द्वारा प्राप्त हुए अनमोल आशीर्वचनों को कई वर्षों से ‘मार्गदर्शिका’ शीर्षक के अंतर्गत ऑडियो के रूप में सी.डी द्वारा प्रकाशित करते आये। धीरे-धीरे सी.डी की जगह पेन ड्राइव ने ले ली और अब सबके हाथ में स्मार्ट फोन होने के कारण ‘मोबाइल एप्स’ ने पेन ड्राइव की जगह ले ली। अब इंटरनेट के माध्यम से कहीं भी ऑडियो या वीडियो का आसानी से लाभ ले सकते हैं। सो, पू. इलेशभाई द्वारा गाये भजन के बाद प.पू. आश्विनभाई (ब्रह्मज्योति, मोगरी) ने **मार्गदर्शिका भाग - 14 व 15** का ‘एप’ पर अनावरण करके आशीर्वाद दिया –

...गुरुजी के जीवन की साधुता की जो खुशबू आज हर जगह फैली हुई है, उसकी महिमा गाने और इस लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ कर जीवन में प्राप्त करने की प्रार्थना से हम सब साथ मिलकर, ये अद्भुत पर्व मना रहे हैं। वर्षों से कीर्तन संघ्या में



‘सरलता साधु तणो शृंगार’ भजन द्वारा प्रार्थना करके हमने बार-बार अपने लिये यह मांग की है। यही बात सिद्ध व आत्मसात् करके सरलता से हम सबके बीच साधुता की जो खुशबू फेला रहे हैं, ऐसे प.पू. गुरुजी के माहात्म्य का हृदय में दर्शन करने और उनके संबंध, संपर्क में आते हुए अनेक मुक्तों की वाणी का श्रवण करके माहात्म्य में बढ़ावा करने के लिये ये अद्भुत पर्व हैं। सभी हरिभक्तों को खूब-खूब धन्यवाद अभिनंदन। विशेषतः सुहृदस्वामी और आनंदी दीदी को अभिनंदन देते हुए आनंद होता है कि साधु मुकुंदजीवनदासजी की साधुता को उज्ज्वल करके, आप उसका विस्तार कर रहे हो और वर्तन द्वारा उसकी खुशबू फेला रहे हो। योगीबापा ‘प’ बोलने के बजाय ‘फ’ बोलते थे। इसलिये निमंत्रण पत्रिका में बड़ी सुंदर तरह इस बात का ज़िकर किया है, योगीबापा ने दिलीप (गुरुजी) से कहा था— **दिलीप को’ साधु थर्फ्सा।**

प्रातः स्मरणीय सोनाबा के श्रीमुख से कई बार पूर्वाश्रम के चंचल युवान दिलीप की महिमा की बातें सुनी व जानी हैं। इस महोत्सव का सूत्र है— मरज़ी में तेरी मिट जायें... इस सूत्र के मुताबिक योगी बापा की मरज़ी में अपने आप को मिटा देने और उनकी साधुता को अपने जीवन में निखार लेने, जिस भाव, प्रेम, स्नेह और समर्पण से काकाजी, पप्पाजी, सोनाबा और स्वामीजी की गोद रखीकार कर गुरुजी हर वक्त जिये, वो हमारे सत्संग का इतिहास है। दिल्ली मंडल का ये सच्चा विकास है...

गुरुजी द्वारा की हुई आध्यात्मिक बातों का ऑडियो संकलन ‘मार्गदर्शिका’ 14 और 15 आज सब भक्तों के लिये सुलभ हुआ है। गुरुजी और हमारे बीच में जो मज़ाक का वार्तालाप होता है, उसकी स्मृति करते हुए यदि गुरुजी के शब्दों में कहूँ तो वे मुझसे पूछेंगे कि तुमसे जो उद्घाटन करवाया है, वो बातें क्या तुमने सुनी? गुरुजी की ये सहजता व साधुता खाभाविक है कि अपनी और साधु की दृष्टि और सामने वाले हर एक मुक्त की ओर प्रभु की दृष्टि रखना। इस भाव से जो हमेशा जीये हैं वे— हांजी भला साधु... गुरुजी को हम ‘भला साधु’ कह सकते हैं। क्योंकि वे मन रहित, कपठ रहित, अहंकार रहित हैं। दिल्ली की इस ठंड में मुझे कितनी ठंड लग रही है, वो आप मेरे परिवेश से समझ सकते हैं।



आज की तारीख में भी मुझे तो सर्दी-गर्मी लगती है, पर गुरुजी जिस तरह (बिना ऊनी कपड़ों के) अपने आसन पर विराजमान हैं, वो देख कर एहसास होता है कि उनके लिए तो सभी ऋतु एक समान ही हैं। ऐसी सहजता से वे हम सबको अपनी मूर्ति के दर्शन और आनंद-स्मृति इस पर्व में दे रहे हैं...

भगवान् स्वामिनारायण ने 'सोने की डोरी' वचनामृत में उल्लेख किया है कि सोने पर ऋतुओं का प्रभाव नहीं पड़ता। लेकिन इसकी तुलना साधुता से करें, तो जैसे समय गतिशील है, वैसे ही आज की भौतिक परिस्थिति में सोने के दाम बढ़ते ही जा रहे हैं। वैसे ही साधुता का दाम और क्रीमत भी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। ऐसे ही माहौल में पाँच वर्ष पूर्व गुरुजी का प्रागट्य दिन मनाया था; तब उनके हृदय में रिथत माहात्म्य, साधुता, समत्व रिथति और हर एक के प्रति सम्भाव का जो दर्शन किया, गुणातीत समाज के हर केन्द्रों के साथ उनकी सर्वदेशीयता का जो दर्शन किया, तो इन पाँच सालों के अध्यात्म प्रवास के दौरान उसमें अचूक अधिक बढ़ोत्तरी हुई है और उसके आनंद के साथ हम ये 'साधु पर्व' मना रहे हैं। गृहस्थ हो या संन्यासी, स्वामिनारायण भगवान् के आशीर्वाद और हमें मिले अपने गुरुदेव के आशीर्वाद व मार्गदर्शन से हम सबको साधु होना है...

ऐसे साधु 85 वर्ष की उम्र में तन की परवाह न करके आज हमें साधुता के मार्ग पर ले जा रहे हैं। ये उनका हम पर अनुग्रह-कृपा है और उन्हें अपने गुरुहरि द्वारा सौंपे गये कार्य के प्रति उनकी गुरुभक्ति है, अपने इष्टदेव स्वामिनारायण के प्रति प्रभुभक्ति ही है...

पाँच इंद्रियों से निर्मित इस शरीर के द्वारा मनुष्य की क्रिया करते-करते वे भगवान् संबंधी और संबंध में आने वालों में भगवान् भरने की क्रिया कर रहे हैं। सो, उनकी क्रिया में, उठने-बैठने, बोलने-चलने या किसी भी प्रकार काम करने की रीति या तरीके का मूल्यांकन करने की बजाय, उनके हृदय में सभी स्वरूपों के लिये जो भक्ति है, स्वरूपों के साथ जिस सच्चे भाव से वे जुड़े हैं, भगवद् भक्तों के प्रति जो भक्ति है, उसे निहारने की हमें दृष्टि मिले ऐसी इस पर्व पर प्रार्थना है... जैसे भरतभाई ने बताया कि पश्चिम से उत्तर की तरफ दृष्टि करके काकाजी महाराज ने हमें अद्भुत साधु की भेट दी। गुरुहरि साहेब दादा कई बार योगीबापा की बात देहराते हुए बताते हैं कि जिसके पास जो हो, वो राजी होकर देता है। सो, भगवान् राजी हों, तो वे क्या देंगे?

भगवान् अपने धारक साधु हमें देंगे और उन संत की महिमा समझ आये इसलिए अच्छा बुद्धियोग, विचार और दिव्य दृष्टि देते हैं। जिससे कि हम अपने संत का

माहात्म्य समझ पायें और उनका सेवन कर सकें। आज का 'पर्व' साधु का सच्चे दिल से सेवन करने का 'पर्व' है और सेवन मतलब—मरज़ी में मिट जाना। 'र्ख' का भाव छोड़ कर प्रभु में जितना लीन हो जायें, उतना प्रभुता व देह के भाव से ऊपर उठकर, ब्रह्मभाव का दर्शन हमें होता जाये। ऐसे गुरुजी हमें सहज, स्वाभाविक, बड़े पुरुष की कृपा से प्राप्त हुए। हमें अपने साथ संबंध करवाया। योगी बापा के समय से हमारे पुराने संत और साधक जो इनके साथ रहे, उनका सद्भाव्य है। बापा ने जिनका निर्माण, गढ़न और हर प्रकार से जतन किया, ऐसी दिव्य मूर्ति गुरुजी को उनके इस प्रागट्य पर्व पर बार-बार नमन करते हैं।

इनकी साधुता की ओर सतत गुणग्राहक दृष्टि रख कर—गुणाकुरागी बनें। इनके जीवन में जो भी कुछ सर्वोत्तम है, वो प्राप्त करने, स्वीकारने और अपने जीवन में आत्मसात् करने की हर पल प्रार्थना होती रहे, यह अनुग्रह भी वे करें। श्री ठाकुरजी, काकाजी-पप्पाजी के पास हमारी ओर से प्रार्थना करें। हम सबने साथ मिलकर इस मार्ग पर चलने का शुभ संकल्प किया है। बड़े पुरुष ने हम सबको अपने साथ इस योजना में जोड़ा है और इस सत्संग में आहुति दी है, तो उनके लिये मिट जायें, खुद को विलीन करके बड़े पुरुष का माहात्म्य बढ़ायें। हम जहाँ जायें, वहाँ हमारी वाणी-वर्तन द्वारा उनकी सुवास फैलाते रहें, यह भी एक सर्वदेशीयता है। गुरुजी और उनके द्वारा सुहृदस्वामी व आनंदी दीदी की जहमत से यहाँ के समाज के भक्तों-मुक्तों, बहनों, बालकों में जो प्रेम का सिंचन हुआ है, वह गुरुजी ने ही सब पर कृपा बरसाई है। जिसका वर्णन गुरुहरि साहेब दादा सर्वदेशीय, आत्मीय, प्रेम, सुहृदय—साधु के ऐसे सभी गुणों के माध्यम से हमेशा करते हैं। गुजराती उक्ति के मुताबिक़ कुँए में (पानी) होगा, तो कुँड में आयेगा (भर पायेंगे)। योगी बापा, काका, पप्पा, बा, स्वामीजी के जीवन में यह था, तो हम सबने वो सूत्र पवका किया और उनके प्रेम का धूंट पिया। फलरवरण जहाँ अशक्य और असंभव था, वहाँ ना केवल सर्वोपरी स्थान हुआ, बल्कि सर्वोपरि साधु इस स्थान में विराजमान हैं। आज बेला रोड के संत आये हैं। वहाँ की विशेष रस्तिलिपि है कि वर्षों पूर्व जब हम दिल्ली आते, तो गुरुजी हमें बेला रोड मंदिर के गेस्ट हाऊस में ठहराते। काकाजी ने हमें सबके साथ मिलकर सुहृदयता, समवाहिता, सामंजस्यता, प्रभुता प्रगटाने की शिक्षा-दीक्षा और साथ में रहने की ट्रेनिंग दी। बेला रोड से पधारे संतों ने जिस तरह गुरुजी का अभिवादन किया और गुरुजी के संतों, मुक्तों, भक्तों ने इन संतों के साथ जिस प्रकार का संबंध निभाया है, वो आज फलाफूला है। काकाजी की जो भावना थी, वो गुरुजी द्वारा साकार हुई



हो, ऐसा तादृश्य दर्शन करने का अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ। ऐसे बड़े पुरुष का बोलना-चलना, उठना-बैठना, किसी से मिलने इत्यादि के माध्यम से उनकी साधुता का दर्शन होता है। मुख्य बात तो साधुता है और योगी बापा द्वारा दिये नाम 'साधु मुकुंदजीवनदासजी'—हम सबके गुरुजी ऐसी साधुता धारे हुए साधु हैं। जब हम उन्हें 'गुरुजी' कहते हैं, तो हम उनके विद्यार्थी-शिष्य हैं। वे हमसे बड़े हैं, हमें उनकी महिमा है और उनके प्रति प्यार व आदर है। उनकी विद्या हम में आये और उनके आशीर्वाद फलें। इस पर्व पर उनकी ऐसी साधुता का करसब और साधुता की विद्या, उनकी कृपा और अनुग्रह हम पर बरसे और हमारे जीवन आचरण में वो फैले ऐसे अच्छे आशीर्वाद दें यही प्रार्थना...

तदोपरांत पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा ने सभी की जानकारी हेतु मंदिर में 'अक्षरतीर्थ' पर बनाई दादाखाचर के दरबार की प्रतिकृति का विवरण दिया और जिनकी बातों में गुरुहरि योगीजी महाराज के संबंध की खुमारी अकसर झालकती है, ऐसे प.पू. निर्मलखामीजी को आशीष प्रदान करने की प्रार्थना की, तो उन्होंने हमेशा की तरह स्वरूपों के माहात्म्य प्रसंग दोहाराते हुए कहा—



...पहले में एक खास विनती करता हूँ कि मोबाइल और अपने मुँह की चबाने की वृत्ति बंद करो। बहुत खाया, बहुत मोबाइल देखा अब ठीक से सुनो। ऐसी बढ़िया बातें हो रही हों, तो सब बंद कर देना चाहिए।

एक अच्छी बात करता हूँ। कवि काग बापु को संसारभर में सब पहचानते हैं। योगीजी महाराज जब काग बापु के गांव गये, उन्होंने योगी बापा का स्वागत किया। सभा में जब योगीजी महाराज विराजमान थे, तो काग बापु बोले कि मैं पूरे संसार का बाप हूँ, पर मेरे बाप तो ये योगीजी महाराज हैं। उन्होंने कहा कि योगी बापा द्वारा चरित्र की खुशबू आती है। चरित्र की खुशबू जिसमें से आये, उसे साधु कहा जाता है। योगीजी महाराज ने हमें साधुता का पाठ पढ़ाया।

...हमें इन स्वरूपों को अपना सर्वस्व समर्पण कर देना है। हमारे ही गुरु—गुरुभाई हैं। ऐसे सभी स्वरूपों का सेवन किया है, तो उनके मुताबिक हम जीवन जी पायें यही प्रार्थना...

सभा के अंत में 'साधु पर्व' का बिगुल बजाते हुए सत्संग के युवाओं ने 'महिमामय वाणी-वर्तन है...' भजन पर भक्तिनृत्य प्रस्तुत करके सबको उत्साहित कर दिया।





23 दिसंबर सायं-बहनों द्वारा भक्ति अर्घ्य



संत बहनों का अभिनंदन...





श्रद्धा सुमन करें अर्यण आयको
हृदयासन पर पधरायें आयको...





यमुना जळमां के सर धोळी,
स्नान कराऊं श्यामना...



चरण सरोज तुम्हारे बंदू कर जीड़ी...



आपको राज़ी करके ब्रह्मस्वरूपीणी स्थिति को पाएं...



ଘનશ્યામ મેરા સુપર હીરો...





न्यारा स्वामिनारायण नाम नित्य सिमरिये...



23 दिसंबर की शाम

करीब 6:00 बजे प्रत्यक्ष स्वरूपों एवं भक्तों ने सभा मंडप में प्रवेश किया। बहनों द्वारा प्रस्तुत होने वाले इस 'भक्ति अर्घ्य' का शुभारंभ, दिल्ली के कमला नगर में स्थित गांधर्व महाविद्यालय की प्रिसिपल पू. इंदू मुद्गलजी, सत्संग की भाभियाँ पू. रशिम मरोड़ियाजी व पू. नेहा अग्रवालजी तथा पू. बंसरी दीदी ने 'भज लो स्वामिनारायण नाम, प्रगट संत की स्मृति के साथ...' धुनरूपी नमक डाल कर किया, जिससे वातावरण दिव्यता से भर गया।

अनादि काल से ही हिन्दू संस्कृति में प्रातः पूजा-अर्चना को खूब ही महत्व दिया है। भगवान् स्वामिनारायण द्वारा शिक्षापत्री में उल्लेखित श्लोक—

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

जीवन का सार बताता है कि जीव को हमेशा भगवान् की भक्ति-सेवा में निमग्न रहना चाहिए। ऐसी भावना को नृत्य द्वारा दर्शने हेतु, पू. परछाई दीदी ने प्रभु के स्नान, पूजा, आरती, थाल, ध्यान से संबंधित भजन तैयार करवाया, इस पर सत्संग की लड़कियों ने भावनृत्य प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् स्वरूपों एवं गणमान्य अतिथियों ने मंच पर अपना आसन ग्रहण किया। सभी की ओर से खागत व साधु पर्व वंदना करते हुए, गुरुहरि काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी के प्रति अनन्यभाव से जुड़ी पू. मधु जीजी ने अपने वक्तव्य में कहा—

...साधु पर्व मनाने के पीछे गुरुजी का एक ही आशय है कि सभी गुणातीत स्वरूप इकट्ठे हों और हमें उनके दर्शन का लाभ मिले। वैसे हमारा सारा सत्संग समाज एक परिवार जैसा ही है। आप सबके आने से गुरुजी खुश-खुशहाल रहते हैं। प.पू. हंसा दीदी, संतभगवंत साहेबजी के लिए हम क्या कहें? अपनी तबियत को नज़रअंदाज़ करके, गुरुजी की प्रार्थना स्वीकार करके आप सब हमें दर्शन देने के लिए दिल्ली पथाए हैं। आपको कोटि-कोटि नमन व वंदन सह जय स्वामिनारायण।



...आनंदी दीदी को मेरे घर पर रखने की सेवा से काकाजी मुझ पर राजी हुए और आशीर्वाद दिये कि जैसे भगवान् बलि राजा के घर बंधे रहे, वैसे मैं तेरे घर बंधा रहूँगा... काकाजी जब भी

दिल्ली आते तो बा, ज्योति बहन, तारा बहन, हंसा दीदी के गुणों का परिचय हमें कराते थे। ज्योति बहन के लिए हमेशा कहते कि वो तो निर्दोषबुद्धि की बुलबुल है। सबकी महिमा काकाजी ने मेरे अंदर कूट-कूट कर भरी...



गुरुजी पूरे के पूरे काकामय हो गये हैं। आज गुरुजी गुणातीत समाज में एकता और अखंडता की ज्योत जलाये हुए हैं... एक बार गुरुजी ने कहा था कि साधु आपसे जो सेवा लेता है, वो अपने ऐशो-आराम के लिए नहीं लेता। सेवा के बदले आपके प्रकृति-प्रारब्ध या स्वभाव टाल देता है। ऐसा तो कोई विरल साधु ही कह पायेगा न। सो, गुरुजी हमसे जो कुछ भी माँगें, हम उन्हें मना ना करें... गुरुजी हर परिवार के सुख-दुःख में साथ छड़े ही रहते हैं। प्रत्येक जीव को ये एहसास करा देते हैं कि मैं तेरा हूँ। काकाजी ने कहा था कि दिल्ली का सेंटर अनोखा बनेगा। सबको मंदिर में आकर बहुत शांति मिलती है। सन् 2000 में मेरी बेटी की शादी हुई। तब गुरुजी सबको साथ लेकर उसमें पधारे, उनकी खुशबू, सुगंध और पवित्रता चारों ओर फैल गई। हरेक ने कहा कि ऐसी शादी हमने कभी नहीं देखी। तब रघाल पड़ा कि ये तो काकाजी के दिये आशीर्वाद का फल हैं...

गुरुजी हमें समझाते हैं कि धून हर समस्या का समाधान है। वे हमेशा कहते हैं कि पहले साधु के वचन को मानो, समझो और फिर उसके परिणाम को देखो। कोविड होने के कारण मेरे बेटे नितिन की तबियत लगातार बिगड़ती जा रही थी। दीदी लगातार मेरे टच में बनी रहती थीं। मैंने दीदी से पूछा कि इसे कैसे हॉस्पीटल मेजें? दीदी ने कहा कि मैं ऑक्सीजन भरे सिलेण्डर की गाड़ी मंदिर से भेजती हूँ। उसका चालक वरण यादव था, जिसके फाथर की डेथ हुए मात्र 10 दिन हुए थे। गुरुजी और दीदी ने दिल्ली समाज में ऐसे कुटुंब का सर्जन किया है... गुरुजी से यही मांगना है कि हम आपकी सेवा निष्ठापूर्वक करते ही रहें...

तदोपरांत स्वरूप व सद्गुरु बहनों का स्वागत करते हुए, अक्षरज्योति की बहनों व सत्यंग की भाभियों ने पर्व का विशिष्ट हार व बॉच अर्पण किया। 2021 में प.पू. आनंदी दीदी का 60वाँ प्राकट्य दिन था। सब के अंतर में भावना थी कि अपने बेजोड़ समर्पण से गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. गुरुजी की भक्ति करके, इनकी प्रसन्नता प्राप्त करी हुई, मातृत्व का मूर्तस्वरूप प.पू. दीदी की हीरक जयंती प्रगट स्वरूपों की निशा में मनाई जाये। लेकिन, कोविड के कारण 'मातृछाया हीरकोत्सव' के रूप में ऑनलाइन मनाया गया।

तो, स्वागत के रूप में नहीं, बल्कि 13 जनवरी 2023 में आने वाले प.पू. आनंदी दीदी 62वें प्राकट्य दिन निमित्त सभी की ओर से पू. मधु जीजी और स्वीट्जरलैंड से आईं पू. श्रुति दीदी ने उन्हें हार अर्पण किया। गुणातीत ज्योत से पू. माया बहन और पू. डॉ. नीलम बहन ने हार एवं गुरुहरि काकाजी सहित प.पू. गुरुजी की मूर्ति



दी। सांकरदा की बहनों की ओर से पू. रशिम बहन ने हार अर्पण किया और भक्ति आश्रम की बहनों की ओर से पू. सिमत बहन और पू. सुन्नेय बहन ने विशेष कलावा बांधा।

हम सभी ने अनुभव किया है कि प्रभु की अस्मिता से युक्त प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीपी आबाल, युवा और वृद्ध सभी के हमजोली बन कर सहजता से जीते हैं। सभी की चित्तपट्टी पर ये छाये रहते हैं। विशेषतः बच्चे तो निर्दोष होते हैं और उनका हृदय बहुत कोमल होता है। तो, सत्पुरुषों का यही उद्यम है कि भावी पीढ़ी में धार्मिक संस्कारों का सिंचन हो। जगत के बच्चे सुपरम्मन, स्पाइडर-मैन, बॅटमैन जैसे काल्पनिक हीरो से प्रभावित होते हैं और उन्हीं की तरह वर्तने की कोशिश करते हैं। जबकि हमारे अवतार पुरुषों ने अपनी बाल लीलाओं से कितने आश्रयों का दर्शन कराया। सत्यंग के बच्चों को ऐसी दृढ़ता हो कि मुझे मिले प्रभु ही मेरे सुपर हीरो हैं, ऐसी भावना व्यक्त करते भजन 'घनश्याम मेरा सुपर हीरो...' पर छोटे बच्चों ने भक्ति नृत्य प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् सांकरदा की प.पू. जयश्री बहन ने साधु पर्व वंदना की—

आज हम सब प.पू. गुरुजी के 85वें प्रागट्यपर्व निमित्त एकत्रित हुए हैं। गुरुहरि काकाजी स्वरूप गुरुजी सब को खूब आनंद कराते हैं। सभी मुक्त मिलजुल कर आनंद करें, ऐसी गुणातीत स्वरूपों की चाहना रहती है। गुरुहरि पप्पाजी अकसर कहते थे—आनंद करो, भई आनंद करो। ब्रह्म का लक्षण क्या? जो चौबीस घंटे ब्रह्मानंद में रहे...

प्रत्येक वर्ष गुरुजी के प्रागट्य पर्व निमित्त गुरुहरि अक्षरविहारीस्वामीजी अचूक उपस्थित होते ही थे। उनका सिद्धांत है—सेवा! सो, गुरुजी भी हमें अपना मानकर, हक्क से प्राकट्योत्सव शिविर की सेवा के लिए बुलाते...

इस वर्ष मन में विचार उठा कि अगर अक्षरविहारीस्वामीजी स्थूल देह से हमारे साथ होते, तो हमें दिल्ली ज़रूर ले जाते। अक्षरविहारीस्वामीजी जब अंतर्धान हुए, तब गुरुजी ने कहा था—**अक्षरविहारीस्वामीजी सांकरदा छोड़कर कभी जा ही नहीं सकते, वे सदैव हमारे साथ रहेंगे ही ही ही...**



गुरुजी ने जब यह बात कही, तब हमें एहसास हुआ कि अक्षरविहारीस्वामीजी ने गुरुजी द्वारा यह संदेश हम तक पहुँचाया है कि मैं तुम्हारे साथ ही हूँ और अपना

अधूरा कार्य गुरुजी, स्वरूपों व संतों द्वारा पूरा करुंगा... गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त करके हम सब को खूब बल मिला कि अक्षरविहारीस्वामीजी कहीं नहीं गए, वे हमारे साथ हैं ही... साधु पर्द पर हम इस भावना के साथ दिल्ली आये हैं कि अक्षरविहारीस्वामीजी हमें लाये हैं... हमारे आने से गुरुजी, आनंदी दीदी व भक्त भी खूब राजी हुए... हमें गुरुजी की खूब ज़रूरत है, उनका स्वास्थ्य निरामय रहे आज के मंगलकारी दिन यही प्रार्थना।

इसके बाद, बड़े पुरुष किस प्रकार राजी हों, ऐसे स्वाध्याय-भजन की सूझ देते हुए प.पू. माधुरी बहन ने साधु पर्द वंदना की—

...आज बहुत बढ़िया दिन। सबके हृदय और चेहरे पर आनंद-आनंद है। गुरुजी और आनंदी दीदी सबको आनंद कराते हैं... काकाजी-पप्पाजी ने शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज को राजी करने बहनों के लिए भगवान भजने का अथक परिश्रम किया। उन्होंने केवल प्रभु का आधार लेकर हमारे लिए जो किया, उसका कोई वर्णन नहीं कर सकता।



इसी तरह आज सभी प्रगट स्वरूप अपने गुरु को राजी करने के लिए उनकी ओर दृष्टि रख कर ऐसे जीवन जीते हैं। गुरुजी केवल अपने गुरु काकाजी की ओर दृष्टि रख कर पूरा जीवन जीते हैं। पूरे समाज के हृदय में काकाजी को बिठा दिया है... आनंदी दीदी ने भी गुरुजी के प्रति जो समर्पण किया है, उसका भी वर्णन नहीं कर सकते। उन्होंने भी बहुत परिश्रम किया और दुःख झेला है। उनके पूर्वाश्रम के घर में उनके भगवान भजने के कारण विरोध था। फिर भी केवल गुरुजी को राजी करने के लिए, उन्होंने पूरा समाज, परिवार छोड़कर ये सब कार्य किया है...

काकाजी हमेशा कहते कि तुम कांतिकाका को राजी करो, तो मैं राजी ही हूँ... गुरुजी जब भी मुंबई आते हैं, तो बहुत खुश होते हैं। तब आनंदी दीदी कहती हैं कि जैसे किसी लड़की के मायके वाले उसके सुसराल आयें, तो कैसे आनंद होता है, वैसे ही जब सब दिल्ली आते हैं, तो गुरुजी के चेहरे पर आनंद होता है... गुरुजी कुछ न कुछ नया करके हमें आनंद कराते हैं। अपने प्रागट्य दिन पर सबको बुलाने के पीछे उनका यही मर्म है कि सबके दर्शन हो जायेंगे। उन्हें सब भक्तों की इतनी महिमा है। हमें लगता है कि हम उनकी सेवा कर रहे हैं, लेकिन बड़े पुरुष हमारी प्रगति के लिए सेवा देते रहते हैं। आनंदी दीदी



का जीवन भी आदर्श रूप है। हमारा जीवन भी ऐसा बने, ऐसी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है। गुरुजी, साहेबजी और सभी स्वरूपों का स्वास्थ्य खूब-खूब अच्छा रहे। उत्सव के सूत्र के अनुसार—मरजी में तेरी मिट जायें। हम केवल स्वरूपों की ओर दृष्टि रखें कि उन्होंने कैसा जीवन जीया है...

तत्पश्चात् सदैव सौम्य वाणी से माहात्म्य का प्रवाह बहाती गुणातीत ज्योत की प.पू. हंसा बहन 'गुणातीत' ने साधु पर्व वंदना की—

...गुरुजी के संबंधी-पूरा ब्रह्मासमाज मिल कर इस पर्व को मना रहा है। पर्व का नाम कितना सुन्दर 'साधु पर्व'। योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी और बा ये कार्य करने पृथ्वी पर पथारे थे कि उनके संबंध में जो आये उसे प्रभु की निष्ठा सुदृढ़ कराना। मतलब कपड़े से साधु नहीं, पर पंचविषय के राग टल जायें और रोम-रोम में भगवान प्रगट हो जायें। एक ऐसा भव्य कार्य करने का बीड़ा इन स्वरूपों ने उठाया और वैसा समाज भी तैयार किया। योगीजी महाराज ने पढ़े-लिखे 51 युवकों को साधु बनाया। उसमें हमारे गुरुजी का भी स्थान है।



गुरुजी ताड़देव आते... उनकी प्रकृति चंचल थी, ऐसा बा और सब बात करते थे। वे एक जगह टिक कर बैठते नहीं थे, इसलिए शायद उन्हें चंचल प्रकृति का कहते। लेकिन, भगवान को प्रकृति के साथ कोई लेन-देन नहीं है। उनकी शरण में आत्मा आ गई बस... सो, गुरुजी जाने-अनजाने में काका, पप्पा और बा की दृष्टि में आ गये। बापा ने कहा—साधु हो जाओ और मन भी तैयार हो गया, क्योंकि सोना बा ने उनके जीव को भगवान के मार्ग पर मोड़ दिया और तैयार करके योगी बापा को सौंप दिया। काकाजी को मन में बहुत था कि दिल्ली में सत्संग कराना है। गुरुजी उनके पसंदीदा पात्र बन गये। गुरुजी का मन कैसा तैयार होगा कि कोई फरियाद-मांग नहीं। कहाँ रहना? क्या करना? कोई भी विचार करे बिना काकाश्री की पसंद से दिल्ली आ गये और साधु समाज में रहे। आज देख रहे हैं कि कैसा बड़ा मंदिर उन्होंने बनाया और इतना बड़ा समाज

हो गया। उसमें आनंदी दीदी ने पूर्ण साथ दिया। सिक्के के एक पहलू गुरुजी और दूसरा आनंदी दीदी हैं। अभी एक भजन बज रहा था, उसमें लाइन थी कि आपने माँ की तरह हमारा पोषण किया है। ऐसी आनंदी दीदी को भी धन्यवाद और गुरुजी को भी



धन्यवाद। ऐसा ही कार्य पर्याजी ने गुणातीत ज्योत में किया कि ज्योति बहन, तारा बहन, दीदी, देवी बहन जैसी कई बहनें हैं कि जिन्हें अपने इंद्रियाँ- अंतःकरण, आत्मा में भगवान से बढ़ कर कोई प्रधानता नहीं। (हंसा) दीदी की उम्र सिर्फ 33 साल की थी, जब पर्याजी ने उन्हें महंत का पद दिया। वो उन्होंने बखूबी निभाया। ज्योत में कोई भी व्यावहारिक कार्य हो, तो दीदी वो बहुत अच्छी तरह करती हैं और गुणातीत समाज से संबंधित कोई कार्य हो, तो वो भी दीदी अद्भुत तरीके से पूरा करती हैं...

स्वरूपों के जीवन में कोई टाइम टेबल ही नहीं है, सिर्फ भक्तों के लिए उनका जीवन होता है... गुणातीत समाज के सर्जन की नींव के स्वरूप काका, पप्पा और बा हैं। उन्हें हमें सदा जीवन रखना चाहिए और उनके प्रति दासत्व बरकरार रखना चाहिए... दिल्ली का समाज भी ऐसे ही तैयार नहीं हुआ, गुरुजी ने कितनी दासत्व भक्ति की। प्रत्येक मुक्त के हृदय में पहले काकाजी, काकाजी, काकाजी बिठाये और फिर गुरुजी व आनंदी दीदी हैं। ऐसी दासत्व भक्ति जीवन में ढालने जैसी है कि पहले प्रभु, गुरुहरि और गुरु के बिना कोई कार्य संभव नहीं। पर, प्रत्यक्ष स्वरूप मानव देह में होने चाहिए, तो ही हमारा बेड़ा पार होगा, बर्ना नहीं। ऐसे स्वरूपों का सर्जन काका, पप्पा, बा ने इस पृथ्वी पर किया। फिर भी कोई रिकोर्नाइज़ेशन नहीं लिया। कभी ये नहीं कहा कि हमारी पूजा करो या हमें कोई गद्दी चाहिए, कुछ नहीं। ऐसे ही इन स्वरूपों को भी कोई स्वार्थ नहीं। अभी आनंदी दीदी को देखो, कितनी बार उठे- बैठे, यहाँ आये वहाँ गये। मुझे मन में हुआ कि देह लोहे का थोड़े ही है। पर, बस भक्ति के लिए क्या ना हो? उनको एक ही अभीप्सा है कि गुरुजी के लिये फनां हो जाऊं। भगवान के स्वरूप की सबको पहचान हो जाये। उसमें वो अपनी देह को गिने-विचारे बिना करती ही रहती हैं। उन्होंने माहात्म्य से गुरुजी की शान बढ़ाई, मानो खुद उनका अंग बन गई। उनकी दासत्व भक्ति भी अजोड़ है। आनंदी दीदी नाम भी कितना अच्छा है और आनंद ही करवाती रहती हैं...

हंसा दीदी हमेशा कहती हैं कि सबसे ऊंची पदवी साधु की है, भगवान की नहीं। पर्याजी हमेशा कहते कि आप लोग मुझे भगवान कह कर क्यों गाली दे रहे हो? मुझे वो पदवी चाहिए ही नहीं, सबसे ऊंची पदवी साधु की है। ये साधु पर्व हम मना रहे हैं, तो एक ही निशान लेकर जाना है कि सच्चे साधु बन के थैन की सांस लें कि मेरे रोम-रोम में हे प्रभु, तेरे और तेरी दासत्व भक्ति के सिवा कुछ ना हो। गुरु और गुरुहरि का वचन हमारा जीवन बने और ऐसे स्वरूप शतायु इस पृथ्वी पर रहें- सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना...



अनुपम मिशन मोगरी से आई, पू. सीमा बहन ने संतभगंवत साहेबजी के साथ प.पू. गुरुजी के अनूठे संबंध का अनुभव दर्शन कराते हुए प्रार्थना की—

...विद्यानगर छात्रालय में योगी बापा ने काकाजी को बुला कर, साहेबजी का हाथ उनके हाथ में देकर कहा था कि आज से युवक मंडल का काम दादुभाई आप संभालो। ऐसे ही गुरुजी को बापा के प्रति बहुत प्रीति-लगाव, तो उन्हें भी अक्षरपुरुषोत्तम उपासना के शुद्ध कार्य के लिए परसंद किया। साहेबजी और गुरुजी, दोनों स्वरूप शुद्ध उपासना के लिए एक साथ हमेशा गुणातीत समाज के लिए खड़े रहे हैं... साहेब दादा और गुरुजी एक दूसरे में काकाजी और बापा के दर्शन करते हैं।



...ये गुणातीत स्वरूप बापामय, काकामय, पप्पाजीमय हैं। बापा ने साहेबजी से कहा कि काकाजी की आझ्ञा में रहो, तो उनकी आझ्ञा में रहे। काकाजी ने उन्हें पप्पाजी की आझ्ञा में रहने के लिये कहा, तो उनकी आझ्ञा में रहे...

संबंध वाला माथे का मुकुट है, वो स्वरूपों के जीवन से दर्शन होता है... ऐसा लगता है कि ऐसे स्वरूपों को पहचानने में कभी-कभी भूल हो जाती है। यहाँ आने से पहले YDSD की वेबसाइट ओपन की, तो उसकी एक एलबम में काकाजी के आशीर्वाद गुरुजी के प्रति लिखे हैं कि आज से मैं आपको स्वतंत्र करता हूँ। मूर्ति धार कर 15 मिनिट अगर आप स्वामिनारायण महामंत्र का जाप करके संकल्प करेंगे, तो वो पूर्ण होगा।

उत्सव का सूत्र दिया है कि मरजी में तेरी मिट जायें, तो हम हमारे गुरुजी की मरजी में जीयें... साधु पर्व है तो साधुता का सर्वोच्च गुण दासत्वभाव हम सबके हृदय और वर्तन में रिथित हो यही प्रार्थना।

सत्संग की युवतियों और बाल मंडल ने जब अपनी भक्ति अदा की, तो भला भाभियाँ क्यों चंचित रहतीं? सो, प्रभु को याद करके हर क्रिया आरंभ करने की जीवनशैली का अनुसरण करने की प्रार्थना से 'न्यारा स्वामिनारायण नाम नित्य सिमरिये...' भजन पर इन्होंने भाव नृत्य प्रस्तुत किया।

इसके पश्चात् भक्ति आश्रम की प.पू. सुन्नेय बहन ने साधु पर्व वंदना की—



...स्वामीजी एक सूत्र कहते थे कि अनंत ब्रह्मांड में हमारे जैसा कोई भाग्यशाली नहीं है और काकाजी का सूत्र था कि कौन मिला है! तो, सुखी वह है जिनकी नज़र अपने गुरु पर है... साधु का सबसे बड़ा लक्षण एक ही है कि प्रभु को जो पसंद है, वैसा जीवन जीना है... हम स्वभाव से मटकी में भरे पानी की तरह थे, जो छलक जाते थे। लेकिन काकाजी ने हमारा बहुत ध्यान रखकर आगे लिया है, हमारे लिए बहुत परिश्रम किया है...



गुरुजी जब हरिधाम आते, तो स्वामीजी हरिधाम रथाफ की सभा आयोजित करते और गुरुजी का लाभ लेने के लिये कहते। गुरुजी की बातें सुनने से स्वाल आया कि उन्होंने अपना जीवन काकाजीमय बना लिया है... स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है कि हम छोटी-छोटी बहनें हैं, लेकिन संबंध से बहुत बड़े हैं। **स्वामीजी को दास का दास बनना पसंद है**, तो आत्मीयता व सुहृदभाव से एक-दूसरे को समझा कर जीना है। हमारे जीवन में साधुता का सच्चा अर्थ साकार हो जाये। ऐसा बल-बुद्धि हम सभी बहनों में आ सके, आशीर्वाद देना...

प्रभुधारक संत अपने मार्गदर्शन व सेवा के माध्यम से चैतन्य का शुद्धिकरण करते हैं। उत्तरभारत की बहनों का परम सौभाग्य है कि गुरुहरि काकाजी ने प.पू. आनंदी दीदी जैसी राहबर की भेंट दी। जिन्होंने अपना जीवन प.पू. गुरुजी व उनके संबंध वाले मुक्तों के लिये व्योछावर कर दिया है। ऐसी प्रेरणामूर्ति प.पू. आनंदी दीदी ने साधु पर्व पर याचना की –



...साधु पर्व—गुरुजी का 85वाँ प्रागट्य दिन मनाने के लिए सारा गुणातीत समाज इकट्ठा हुआ है। पूरा योगी परिवार इकट्ठा हो, वही गुरुजी की हमेशा एक भावना रही है...

दिल्ली मंदिर के इतिहास पर जब नज़र डालती हूँ, तो जूनागढ़ मंदिर की बात याद आती है। जूनागढ़ के नवाब ने महाराज से प्रार्थना करी थी कि आप अपने जैसा फक़ीर यहाँ रखना। तो, जूनागढ़ के मंदिर के लिए महाराज ने गुणातीतानंदस्वामी को बुना। ऐसे ही काकाजी ने विशेष रूप से उत्तर भारत के मुक्तों का उद्धार करने के लिए गुरुजी को जो भेजा, वो ऋण हम कभी नहीं भुला पायेंगे। महाराज कहते थे कि गढ़ा मेरा और मैं गढ़ा का। वैसे ही काकाजी बोले थे कि दिल्ली



मेरी और मैं दिल्ली का। आज दिल्ली में जो कुछ भी हो रहा है, वो इनके संकल्प से हो रहा है। स्वामिनारायण संप्रदाय अखंड सुहागन का संप्रदाय है और गुणातीतानंदस्वामी ने मानवजाति को हमेशा के लिए सनाथ कर दिया।

स्थूल रूप से भी किसी बहनजी के साथ कोई अप्रिय घटना बन जाती है, तो उसका माथा सूना न रहे, इसलिये महापूजा में बिन्दी पता रखवा कर गुरुजी भिजवाते हैं... जिन गुणातीत पुरुषों के संबंध में हम सभी आये हैं, वे धरती से कभी जाते ही नहीं हैं। प्रगट स्वरूपों के रूप में आज भी हमारे लिये प्रत्यक्ष हैं। दिल की सच्चाई से जितना मानेंगे, भगवान उतना अनुभव भी करायेंगे... एक बार गुरुजी ने बताया था कि साधु का सबसे बड़ा बड़प्पन कैसे पता लगे? जो अपने ऐश्वर्य, प्रताप, रिद्धि-सिद्धि को ढक कर ही रखे वो। गुणातीतानंदस्वामी सब संतों के जूते सिर पर रख कर जब चले होंगे, तो उस समय का समाज शायद उन्हें पहचान नहीं पाया था। ऐसे प्रसंग हमें जब निहारने को मिलें, तो याद रखें कि ऐसी भूल दोहरायें नहीं... हमारा तो अङ्गफट योग है। भक्तों के संकल्प-मनोरथ पूरे करने के लिए ही ये स्वरूप धरती पर आये हैं।

काकाजी ने जब से पंजाब में सत्संग की शुरुआत करी, तब से जो भक्त संबंध में आये हैं, उनकी परवरिश आज भी गुरुजी वैसे ही कर रहे हैं। पिछले साल भी गरजू बन कर, इस आयु में वे वहाँ गये। जगरांव में पास 'मेहदियाना गुरुद्वारा' है। गुरुजी ने हम सबको वहाँ दर्शन करने भेजा। फिर सरप्राइज़ में खुद भी वहाँ आये दर्शन करने के बाद वहाँ से दलजीत सिंहजी के घर जाने सभी निकले। रास्ते में एक अनजान घर के आगे गुरुजी ने गाड़ी लकवाई और सेवकों से कहा कि अंदर जाकर पूछो कि उनके पास छाछ है? पूछने पर पता लगा कि छाछ नहीं है। थोड़ी दूर जाने के बाद दूसरे घर के आगे लक कर छाछ के लिये पुछवाया। सेवकों ने गुरुजी से कहा कि पंद्रह मिनिट में दलजीत सिंहजी के घर पहुंच जायेंगे, तो वहाँ सबसे पहले आपको छाछ दे देंगे। गुरुजी बोले—नहीं, मुझे तो आज यहीं पर छाछ पीनी है। दूसरे घर में भी छाछ नहीं मिली, तो आखिर तीसरे घर के आगे रुके। उस घर की बहनजी ने कहा कि मेरे पास छाछ तो नहीं, पर थोड़ी दही है। मैं संतों के लिए छाछ बना देती हूँ। एक उदात्त भावना से पूरा परिवार दर्शन करने बाहर आकर बोला कि हमारा परम सौभाग्य है कि सामने से संत हमें दर्शन देने के लिए आये हैं। जब वो छाछ पिलाने वाले अनजान का इतना कल्याण कर रहे हैं; तो हम सब जो उनके

लिए जीवन जीने आये हैं, उनके लिये कितना सोचते होंगे? इसलिए खूब आनंद किया करें और इनमें से जो आये वो किया करें... बस, किसी प्लेटफार्म पर हम झूले या अटके नहीं, उसकी सतर्कता गुरुजी ने हमेशा रखी और रखवाई है।



सच, कैसे भवतवत्सल भगवान हमें मिले हैं। 19 नवंबर से शोभना भाभी के बेटे प्रणव को लिवर की प्रॉब्लम आई। आखिर लिवर ट्रांसप्लान्ट की नौबत आ गई... गुरुजी ने तुरंत कहा कि समैया नहीं भी होगा तो क्या हुआ, पर प्रणव (पिंड) की तबियत अच्छी हो जाये इसके लिए धुन करो... ऐसे करणानिधान टॉप गुणातीत संत हम सबको मिले हैं। अगर कुछ कसर है, तो वो हमारे लेने में है, वे तो देने के लिए ही बैठे हैं। सो, उन्हें पहचानने में हम भूल ना करें।

दूसरी बात—इस फंक्शन की सभी संतों, बहनों, युवकों और गृहस्थों ने तन-मन-धन और आत्मा से जो सेवा करी है, उसके लिए बहुत-बहुत अभिनंदन। महाराज इस सेवा के फलस्वरूप सबको आध्यात्मिक भूमिका में ज़रूर आगे ले जायें। खास तो सब स्वरूप पथाए हैं; वो हमारा अहोभाव्य है ही, पर अंतर से साहेब दादा का खूब अभिनंदन करना है। 25 दिसंबर को गुरुजी की जो मूर्ति प्रतिष्ठा होने वाली है, उसका सारा श्रेय साहेब दादा को जाता है। यदि वे गुरुजी को नहीं मनाते, तो दिल्ली का समाज कल्पना ही नहीं कर सकता था कि गुरुजी की मूर्ति उन्हीं की हाजिरी में पधरा सकेंगे। साहेब दादा का ये ऋण दिल्ली समाज कभी न भूले। गुरुजी आज तक अपना श्लोक भी आरती में गाने नहीं देते। साहेब दादा से ये प्रार्थना भी है कि 25 तारीख को ये इज़ाज़त भी दिलवा दें।

हम सबके जीवन में ये गुणातीत स्वरूप साधुता की बड़ी पदवी प्रगटाना ही चाहते हैं। हम सब संत के संबंध से साधु हो रहे हैं और हो भी सकते हैं यह विश्वास से मानें और साधुता के गुण प्राप्त करें, ऐसी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।

तत्पश्चात् प.पू. आनंदी दीदी की प्रार्थना स्वीकार कर, अल्प वचनों में सबकी सेवा के प्रति प्रसन्नता दर्शाते हुए प.पू. दिनकर अंकल ने आशीर्वाद दिया—



...आज बहुत आनंद का लाभ मिला। आनंदी दीदी की आज्ञा के अनुसार बहनों, छोटे बाल-गोपालों और सबने डांस का बहुत बढ़िया प्रोग्राम किया। गुणातीत समाज की सब बहनों के आशीर्वाद भी बहुत-बहुत हृदयरप्ती थे... साहेब दादा के कहने से गुरुजी ने आनंदी दीदी की प्रार्थना स्वीकार करी कि अब दिल्ली मंदिर में भी गुरुजी का श्लोक बोलने की मंजूरी है...

वर्षों पहले गुणातीत ज्योत द्वारा गुजराती पुस्तक अनुपम भाग-2 प्रकाशित हुई थी। इसमें गुरुहरि पप्पाजी ने साधकों के साधना



मार्ग में बाधित होती अड़चनों का उल्लेख 21 मुद्दों द्वारा स्वयं किया और उनका आध्यात्मिक समाधान भी बताया है। उन्होंने इस पुस्तक को वर्तमान जीवन की गीता कह कर नवाज़ा। सांकरदा मंदिर में रहते हुए प.पू. गुरुजी ने इस पुस्तक को बहुत बार पढ़ा और साधकों के लिये उपयोगी वाक्यों को रेखांकित किया। दिल्ली मंदिर से जुड़े अधिकांश मुक्त हिन्दीभाषी हैं। इस अनमोल खजाने से लाभांवित होकर, वे प्रगट प्रभु से अंतरायरहित का संबंध दृढ़ करने की सूझ पायें, इस भावना से प्रकाशन समिति ने इस पुस्तक के प्रथम विभाग 'साधक की दिनचर्या और उसकी जाग्रतता' के हिन्दी अनुवाद को ऑडियो रूप में एप द्वारा जारी करना तय किया। जिसका संशोधन मुख्यतः तो प.पू. गुरुजी ने किया, क्योंकि अध्यात्म मार्ग की बारीकियाँ वे ही बेहतर समझते हैं। सो, प.पू. गुरुजी को कोटि-कोटि प्रणाम की 85 वर्ष की आयु में भी सेवा व अपनी देहातीत अवस्था का दर्शन कराया। अतः इस सत्र के अंत में प.पू. हंसा दीदी ने अपने वरद् हस्तों से इसका अनावरण करके आशीर्वान दिया—



...साधु पर्व यानि सच्चे साधु का त्योहार! गुरुजी जब दिलीपभाई के रूप थे, उस समय की एक स्मृति बताती हूँ। यदि कोई चीज ठीक ना हो या अजीब-अटपटी हो, तो उसे देख कर उन्हें बहुत हँसी आती। मुंबई के कांदीवली में एक रामजी सेठ रहते थे। उनके घर पप्पाजी की पथरामणी थी। दिलीपभाई उनके साथ गये थे। वहाँ एक झूले पर पप्पाजी विराजमान हुए। झूला बढ़िया चल रहा था, लेकिन जब रामजी सेठ उनकी बगल में बैठने आये, तो झूले का एक सरिया निकल गया। सर्ट... से पप्पाजी और रामजी सेठ झूले से नीचे आ गये। वह दृश्य देख कर दिलीपभाई इतना हँसे कि ना पूछे गात। फिर तो सब हँसे और पप्पाजी ने दिलीपभाई से पूछा—तड़े इतनी हँसी क्यों आई?

दिलीपभाई बोले—पप्पाजी कुछ अजीबोगरीब हो, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है और बहुत हँसी आती है। कैसी बात है? इतना इंटेलीजेंट लड़का और उसे ऐसा पसंद आता था, लेकिन भगवान् ने कैसी साधुता दी कि इतना बड़ा समाज छऱ्हा कर दिया। मुझे ज्यादा कुछ कहना नहीं है, गुरुजी का कार्य बोलता है। शब्दों से तो हम सुनते हैं, लेकिन कार्य की बात आँखों से होती है। हम जो देखते हैं, वो ही स्वीकार करते हैं। सुना हुआ तो अनुभव होने



के बाद आँखों से देख कर और बुद्धि से विचार करके पता लगता है कि ये बात सच में ऐसी ही है। गुरुजी साधु बने, उनमें साधुता आई, उनका कार्य, कैसे पता चले? हमारा तो उनके साथ उठना-बैठना या बोलना भी नहीं होता। पर, ये उनका कार्य है कि एक पंजाब की लड़की कितनी तकलीफ लेकर भगवान भजने आ सकी। उसमें जो बदलाव आया, वो हमने देखा कि सचमुच चौबीस घंटे 'माँ' भी बनती है और 'साधक' भी बनती है। हमें तो परिणाम से सुख लेना है।

...काकाजी-पप्पाजी के पिता डॉक्टर थे, बोरसद में उनका क्लीनिक था। उन्होंने बोचासण में शास्त्रीजी महाराज की बहुत सेवा करी। उन्हें सिर्फ दो लड़कियाँ थीं और पटेलों में तो लड़का चाहिए ही होता है। तो, शास्त्रीजी महाराज ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये कि महाराज तुम्हें दो लड़के देंगे और वो थे काकाजी और पप्पाजी। बाद में पूरे समाज ने देखा है कि साक्षात्कार होने के बाद काकाजी एक मिनिट भी योगी बापा की महिमा गाये बिना रहे नहीं। उसका परिणाम हम सब हैं। तो, कार्य बोलता ही है।

गुरुजी की कौन-सी बात करनी है और हमें उनसे क्या प्राप्त करना है, उसका अब तो स्याल आ ही गया है। आज हम सब साधु पर्व पर आये हैं, तो बहुत सुख लेना है-हमें अपने लिये कुछ लेकर जाना है। कोई चीज़-वस्तु, बैग या पर्स नहीं चाहिये, बल्कि हृदय जाग्रत रखें कि हमें कुछ पाना है। यहाँ बैठे हुए सब एक ही बातें करेंगे, लेकिन इनमें से कुछ वाक्य या शब्द हमें काम आ सकते हैं, जो जीवन परिवर्तन कर दें। इसलिए हमें ऐसी बातें लेकर जाना है कि जिसका परिणाम हमें हमेशा मिले।

स्वामिनारायण भगवान, शास्त्रीजी महाराज, योगी बापा, काकाजी, पप्पाजी एवं सर्व स्वरूपों को अंतर से प्रार्थना करें कि आप कहते हो कि मैं हमेशा आपके साथ ही हूँ। तो, आप हमेशा हमारे साथ हो, यह स्याल हमें रहे और उसके मुताबिक हम हमारी वाणी, विचार और वर्तन करें ऐसी हम पर कृपा करना। आप हमेशा हम पर प्रसन्न रहो। जीवन का यही ध्येय है कि आपकी आंतरिक प्रसन्नता पानी है, वो सिद्ध करा देना—ऐसी कृपा करना...

प.पू. हंसा दीदी के आशीर्वाद से सभा का समापन हुआ। लेकिन, दूसरे दिन यानि 24 दिसंबर की सुबह इसी 'कल्पवृक्ष' सभा मंडप में प.पू. गुरुजी की मूर्ति प्रतिष्ठा निमित्त यज्ञ होना था, सो तुरंत ही स्वयंसेवक यज्ञ की तैयारियाँ करने में जुट गये और देर रात तक यह सेवा संपन्न की।





24 दिसंबर ग्रातः—य.पू. गुरुजी की मूर्तिप्रतिष्ठा निमित्त यज्ञ...





यज्ञ उपरांत प.पू. हंसा दीदी द्वारा प.पू. गुरुजी की छोटी मूर्ति का पूजन...

॥ ॥ ॥



‘मूर्तिप्रतिष्ठा’ पंचरात्र आगम शालों द्वारा निर्धारित वैदिक संस्कारों और मंत्रों का जाप करके, एक मूर्ति में भगवान का आह्वान करने का एक अनुष्ठान है। मूर्तिप्रतिष्ठा एक उत्सव भी है, जो अक्सर एक नगर यात्रा या सांख्यिक जुलूस और विश्वासांति महायज्ञ अथवा शांति के लिए प्रार्थना के साथ जोड़ा जाता है। हिंदू संस्कृति में मूर्तिप्रतिष्ठा होने पर प्रभु विराजमान होते हैं और उस मूर्ति में रह कर कार्य करते हैं। मूर्ति केवल एक छवि नहीं, बल्कि भगवान का एक दिव्य रूप है। विश्वभर के हिंदुओं के लिये मूर्तिप्रतिष्ठा अनुष्ठान अध्यात्मिकता और विश्वास का एक सुंदर उत्सव है।

2017 में मंदिर में जब ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी एवं संतभगवंत साहेबजी की मूर्ति प्रतिष्ठा हुई, तब संतभगवंत साहेबजी ने कहा था—

...यदि मेरे बस में होता, तो मैं गुरुजी की मूर्ति पथराने की बात करता। क्योंकि दिल्ली में जो माहात्म्य युक्त समाज खिल रहा है, उसके पीछे काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी का आशीर्वाद और गुरुजी का बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। उन्होंने जो तपस्या की है, सबको इतना प्रेम देकर माहात्म्य का सिंचन किया है, उसका यह फल है...

गुरुहरि काकाजी कहते थे— गुणातीत का संकल्प यानि महाकाल!

प.पू. गुरुजी तो दिल्ली मंदिर एवं उनके आश्रित मुक्तों के जीवनप्राण हैं। 2021 में प.पू. आनंदी दीदी का 60वाँ प्राकट्य दिन कोविड के कारण ऑनलाइन मनाया गया। प.पू. गुरुजी तो अपनी मूर्ति के लिये कभी राजी होते ही नहीं, सो संतों, युवकों और बहनों ने प.पू. गुरुजी से प्रार्थना की कि प.पू. दीदी को उनकी षष्ठीपूर्ति की निराली स्मृति भेंट के रूप में, प.पू. गुरुजी की ‘प्लास्टर ऑफ पेरिस’ की मूर्ति अक्षरज्योति के लिये दी जाये। इसके लिये प.पू. गुरुजी ने ‘हाँ’ कर दी। मूर्ति का ‘क्लो मॉडल’ बनवा कर, उसकी फोटो जब प.पू. साहेबजी को भेजी गई, तो उन्होंने तुरंत कहा—

मंदिर के लिये ऐसी संगमरमर की मूर्ति बनाओ और उसका सारा खर्च में दूँगा। यूँ, पाँच वर्ष पहले संतभगवंत साहेबजी ने जो संकल्प किया था, उसे साकार रूप देने उनके वचन को महत्त मान कर, प.पू. गुरुजी ने अपनी मूर्तिप्रतिष्ठा के लिए ‘हाँ’ कर दी। सच, दिल्ली मुक्त समाज के लिये संतभगवंत साहेबजी का यह अप्रतिम प्रेम और अनुपम आशीर्वाद कहा जाये। सो, मूर्तिप्रतिष्ठा निमित्त **24 दिसंबर की सुबह** करीब 9:30 बजे प्रगट रूपों की निशा

और प.पू. वशीभाई के मार्गदर्शन में पर्वई के पू. हितेनभाई एवं पू. पियुषभाई ने प्रभु का आवाहन करते हुए महापूजा आरंभ की। यज्ञ में 21 दपंतियों को फूलों से सुसज्जित छ: यज्ञ कुंडों के आस-पास बिठाया था। पूजन हेतु प.पू. गुरुजी की फाइबर

की मूर्ति स्थापित की थी और साथ ही छोटे आकार की मार्बल डस्ट की सात मूर्तियाँ भी रखी थीं। महापूजा-यज्ञ के समापन पर एक यज्ञ कुंड में संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. प्रेमस्वामीजी, प.पू. निर्मलस्वामीजी, आचार्य श्री बालकृष्णजी, सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई व प.पू. शांतिभाई तथा अन्य संतों-भाइयों ने श्रीफल की आहूति दी। एक अन्य कुंड में प.पू. हंसा दीदी, प.पू. स्मित बहन, प.पू. माधुरी बहन, प.पू. आनंदी दीदी सहित अन्य बड़ी बहनों एवं यजमान भाभियों ने आहूति दी। इसी दौरान दूसरे कुंडों में हरिभक्त यजमानों ने आहूति दी।

यज्ञ की भर्त्ता को मरतक पर लगा कर प्रणाम करने के बाद, सभी स्वरूप स्टेज पर विराजमान हुए। सभी यजमानों की ओर से पू. परिमलभाई ने प.पू. गुरुजी की मूर्ति का पूजन करके हार अर्पण किया। तत्पश्चात् पू. राकेशभाई व पू. अनूपजी ने 'मूर्ति मोहक तेरी...' भजन से आशीर्वाद सभा की शुरुआत की। इसी दौरान, प.पू. हंसा दीदी ने प.पू. आनंदी दीदी को प.पू. गुरुजी की छोटी मूर्ति भेंट दी, तो प.पू. आनंदी दीदी खूब भावुक हृदय से रो पड़ी। तब प.पू. हंसा दीदी ने अपने हाथों से उनके आँसू पोंछ कर गले लगाया। इस क्षण को निहारते हुए वहाँ बैठे सभी खूब भावविभोर हो गये।

सभा में विश्व विच्छात आचार्य बालकृष्ण महाराजजी ने सर्वप्रथम प.पू. गुरुजी एवं संतभगवंत साहेबजी को शॉल एवं रुद्राक्ष की माला अर्पण करके अपना भाव प्रकट किया। तत्पश्चात् पू. सुहृदस्वामीजी व पू. पुनीत गोयलजी ने आचार्य बालकृष्ण महाराजजी तथा UPSC के चेयरमैन एवं अनुपम मिशन के सद्गुरु साधु पू. मनोजदासजी को हार व बॅच अर्पण करके स्वागत किया। फिर आचार्य बालकृष्ण महाराजजी ने भारतीय संस्कृति में संतों के महत्त्व का वर्णन किया—

...मैं कहीं भी रहूँ, कितनी भी व्यस्तता हो, पर मेरे मन, मस्तिष्क और स्मृति में पूज्य गुरुजी या पूज्य साहेब दादा की बात रहती है। इनका चित्र मेरी आँखों के सामने होता है, तो दिल स्वतः ही भावनाओं से भर जाता है... सच में संत तो वही होते हैं कि उन्हें याद करने से व्यक्ति को जीवन की विषम परिस्थितियाँ स्वतः ही अनुकूल लगने लगें।

मैंने देखा कि विशेष रूप से हमारी पूज्य बहनें पूज्य गुरुजी की मूर्ति के विग्रह को हाथ में लेकर किस प्रकार भावुक हो रही थीं। संसार में यह सौभाग्य सबको नहीं

मिलता कि गुरुजनों का साक्षात् आशीर्वाद, उपस्थिति व जीवन के कल्याण के लिए पथ-प्रदर्शन मिलता रहे और जब गुरु की अनुभूति हृदय में होने लगे, तो

अशुद्धारा बहे बिना रह नहीं सकती। हमारे भाव, संवेदनाएँ और आंतरिक ऊर्जा जब भक्ति में परिणित होती है, तो अशु के रूप में वो आँखों से निकलती है। यह हमारी साधना की ओर गतिमान होने का प्रमाण है, ना कि हमारे कमज़ोर होने की कोई निशानी नहीं है। अशु तो दुनिया में बहुत समय लोगों की आँखों से निकलते हैं, परंतु गुरुभक्ति, गुरु की श्रद्धा में निकले आँसू सच में असली मोती होते हैं...

मेरे मन में था कि ये जो तीन दिन का उत्सव है, उस में किरी भी एक दिन मुझे पहुँचना है। जब भक्ति, श्रद्धा और भावनाएँ होती हैं, तो बाकी सब चीज़ें विस्मृत हो जाती हैं और यही साधना का लक्ष्य व फल भी है। संसार की स्मृतियाँ, विषमताएँ, कटुताएँ इंसान को विचलित करती हैं, पर साधु का सत्यंगरुपी अमृत जब मिलता है, तो सारी जलती हुई ज्वालाएँ, तपन या गर्मी शीतलता में परिणित हो जाती हैं। यही संतों की शक्ति का प्रताप है...

यज्ञ दौरान में कभी गुरुजी की मूर्ति को देखता था, तो कभी स्वयं विराजमान गुरुजी को देखता था। मुझे 'गुरुजी में मूर्ति और मूर्ति में गुरुजी हैं' ऐसे दोनों एकाकार दिखाई दे रहे थे... पूज्य काकाजी, पूज्य पप्पाजी, पूज्य स्वामीजी, पूज्य साहेबजी, पूज्य गुरुजी एकाकार हैं... हमारी शक्ति-ऊर्जा को जगाने के लिए गुरुजन हमें हमेशा जाग्रत करते हैं। गुरुजी हमें शक्ति और ऊर्जा देते हैं। साहेब दादा भी जिस तरह हमें खुशी से देखते हैं, तो लगता है कि दिल की गहराइयों से आशीर्वाद देते हैं...

जिंदगी के पड़ाव पर कहीं न कहीं संत आपको चेतन करते हुए, आशीर्वाद रूपी पुष्प खिला देते हैं, जिसे आप भुलाना चाहें, तो भी भूल नहीं सकते। यह तो संतों की कृपा का प्रसाद है। आप सब परम सौभाग्यशाली हैं। वर्ना इतनी बड़ी दुनिया, इतनी बड़ी दिल्ली में करोड़ों लोग हैं, बाकी लोग यहाँ क्यों नहीं हैं, आप ही क्यों हैं? क्योंकि यह सौभाग्य केवल आपको भगवान की तरफ से मिला हुआ है। इसे हम हमेशा याद रखेंगे, तो कभी विचलित-परेशान नहीं होंगे। क्योंकि हम अपने सौभाग्य को भूल जाते हैं। अगर सौभाग्य का स्मरण बना रहे, तो आदमी कभी कमज़ोर या दीन-हीन नहीं हो सकता। वह अपने आपको कभी अकेला भी महसूस नहीं कर सकता...

चाहे आध्यात्मिक जीवन की उन्नतियों के शिखरों पर आरोहण करना हो, तो भी आप यह स्मरण करते हुए आगे बढ़ना। गुरुजनों और प्रभु का साक्षात् आशीर्वाद जहाँ हो, उस रास्ते-मार्ग,

उस यात्रा को दुनिया में कोई नहीं रोक सकता। यदि कोई रोकता है, तो हम स्वयं रोकते हैं। हम स्वयं अपने मार्ग के लिए बाधक बनते हैं। हम अपने आपको साधक-भक्त कहते हैं। तो, भक्त बनने का सामर्थ्य हमें स्वयं पैदा करना होगा।

...संसार में गुरु कभी बना नहीं जाता, बनना तो शिष्य पड़ता है। जो अच्छा शिष्य



अग्रणी पंक्ति में खड़ा होता है, दुनिया उसे गुरु के रूप में देखना शुल्क कर देती है। पर, वर्तमान समय में समाज के अंदर वातावरण है कि शिष्य बनने का प्रयास न करके, गुरु बनने का प्रयास करते हैं। इसी कारण अच्छे शिष्य भी नहीं बन पाते। तो, इन गुरुजनों से यह सीखने व समझने की आवश्यकता है...

हमारे मनोजभाई स्वयं UPSC चेयरमैन के रूप बैठे हैं। ये पूज्य साहेबजी का कृपा प्रसाद है... सब संतों-गुरुजनों का प्रसाद है। क्योंकि वे तो हमेशा हमें संपूर्ण देने के लिये तैयार हैं। उनके देने में कोई कमी नहीं है, पर कहीं हमारी पात्रता में कमी रह जाती है। अतः हम वंचित रहते हैं, तो उसमें गुरुजनों का कोई दोष नहीं है... संतों के आशीर्वाद से सब काम होंगे। जितने भी यहाँ बैठे हैं उनसे प्रार्थना है कि अपने आप को इतना भर लेना कि वो कभी खाली न हो पायें और कोई आपको खाली कर ही न सके।

तदोपरांत गायक-वृंद ने 'विजय दिन मनायें आज रे काकाजी का...' भजन प्रस्तुत किया और सांकरदा मंदिर के प.पू. बापुस्वामीजी ने आशीष वर्षा की—

... गुरुजी, हमारे आत्मीय बड़ील; जो हमारे साथ, हमारे जैसे बन कर रहे हैं। ऐसे गुरुजी का ४५वाँ प्रागट्य दिन पूरे गुणातीत समाज के संग मनाने का हमें मौका मिला। जब हम युवक थे, तब योगीजी महाराज की सेवा में निर्मलस्वामी, माधवस्वामी, ज्ञानस्वरूपस्वामी हमें ले जाते थे और उन्हें प्रसन्न करने की रीत बताते थे। कुछ समय के बाद योगीजी महाराज ने काकाजी, पप्पाजी और बा का योग दिया, इसलिए हम तो कृपा के पात्र बन गये...



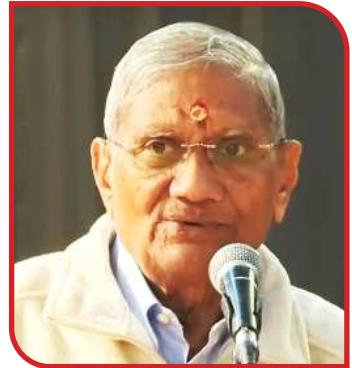
सभी गुणातीत स्वरूप विद्यमान हैं और ये अक्षरधाम की सभा है। हमने इन सब स्वरूपों का सेवक के रूप में दर्शन किया है। जब हमें दीक्षा दी गई, तब योगीजी महाराज ने जसभाई साहेब को कुंडी साफ़ करने की सेवा दी थी... योगीजी महाराज गरजूँ बने हैं, तो उन्हें राजी कर लेने की भावना से ऐसे दिव्य पुरुष आगे बढ़े हैं। बोचासण में पार्षदी दीक्षा देने के बाद योगीजी महाराज ने हमारी जिम्मेदारी अक्षरविहारीस्वामीजी को सौंपी। अक्षरविहारीस्वामीजी ने तब योगीजी महाराज से नम्रतापूर्वक प्रार्थना करी कि बापा मैं तो सेवक हूँ। लेकिन बापा की इच्छा जान कर अक्षरविहारीस्वामीजी ने हमारी जिम्मेदारी ली। ५५ साल तक अक्षरविहारीस्वामीजी ने पूरे गुणातीत स्वरूपों, व्रतधारी भाइयों, संत बहनों, और एकांतिक मुक्तों का माहात्म्य समझाया और उनकी सेवा हमें देते



रहे। पप्पाजी कहते थे—ज्यादा ज्ञान की ज़रूरत नहीं है, पर दिव्यभाव रखो, गरजू बन कर सेवा करो और निर्दोषबुद्धि रखो... सो, अक्षरविहारीस्वामीजी ने हमें सबकी माहात्म्ययुक्त सेवा करने का ज्ञान दिया है। सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है कि हम माहात्म्य युक्त सेवा करते रहें और सबके दास बनकर रहें। मानो हम साहेब के आश्रित हैं, तो सब में साहेबजी को देखें। गुरुजी के आश्रित हैं, तो सब में गुरुजी को देखें। प्रेमस्वामीजी के जो आश्रित हैं, वे सब में प्रेमस्वामीजी को देखें और माहात्म्ययुक्त सेवा करते रहें। ये सभी हमारे अंतर के शत्रुओं से हमारी रक्षा करते रहें, ऐसी प्रार्थना हैं...

गुरुजी और अक्षरविहारीस्वामीजी 1954-1955 से दोस्ती के नाते हमें गुरुजी और हंसा दीदी के समाज की सेवा मिली। हमें ऐसी सेवा का अवसर मिलता रहे, यही प्रार्थना...

प्रायः देखा गया है कि किसी व्यक्ति को यदि ख्याल पड़े कि कोई उसकी तस्वीर खींच रहा है या विडियो रिकॉर्ड कर रहा है, तो वह जाग्रत हो जाता है कि उसका फोटो बेकार न आये या विडियो बेढ़ंगी रिकॉर्ड न हो। इसी प्रकार मेरे प्रभु-सत्पुरुष का कैमरा हमेशा मुझे देख रहा है, ऐसी धारणा से पल-पल जागलक रह कर जीते सद्गुरु संत शांतिभाई साहेब ने आशीर्वाद दिया—
...प.पू. गुरुजी का 85वाँ प्रागट्य पर्व 'साधु पर्व' के लूप में मना रहे हैं। जिस स्वरूप की प्राप्ति होती है, उनसे पूरी भक्ति और माहात्म्य से जब जुड़ जाते हैं; तब स्वभावों का परिवर्तन होता है, अहंकार टल जाता है और हमारे भीतर प्रभु काम करने लगते हैं। सभी प्रगट स्वरूप अक्षरपुरुषोत्तम के स्वरूप हैं, ऐसा माहात्म्य समझ कर उनके साथ जुड़ जायेंगे, तो उनके संबंध वाले सभी को प्रभु का स्वरूप स्वीकार करके, सेवा करने से प्राप्ति होती हैं...



गुरुजी ने काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी सभी के संबंध वाले का माहात्म्य समझ कर सेवा-भक्ति करी और उनके साथ प्रेम किया... आनंदी दीदी ने कल बताया कि मंदिर में सबका श्लोक बोलते हैं, लेकिन गुरुजी अपना श्लोक नहीं बोलने देते। तो, उन्होंने साहेबजी से प्रार्थना करी कि हमारी ओर से गुरुजी से विनती करें, ताकि हम उनका श्लोक बोल सकें। तो, गुरुजी का जीवन ऐसा है। कई साल से हम यहाँ आते हैं, तो हॉल में देखा है कि सब स्वरूपों की मूर्ति पद्धराई है, लेकिन गुरुजी की मूर्ति नहीं है। सो, हमेशा मन में होता है कि गुरुजी की ये जो दासत्वभक्ति है, इसलिए वो गुरुजी हैं। जो दास बनते हैं, वे अपने



आप गुरु बन जाते हैं... गुरुजी ने संबंध वाले सबका माहात्म्य समझा कर जो सेवा करी; तो आनंदी दीदी और बहनें भी ऐसी सेवा करती हैं। भाव यही है कि भक्तों की सेवा करेंगे, तो गुरुजी जरूर प्रसन्न होंगे। हम साधकों को ऐसा ही करना है। योगीबापा, काकाजी और पप्पाजी को प्रसन्न करने के लिए गुरुजी ने सब भक्तों की सेवा करी। यह सनातन सत्य है कि योगीबापा, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी को प्रसन्न करेंगे, तो स्वामीश्रीजी प्रसन्न होते हैं। यह सनातन सत्य गुरुजी ने अपने जीवन में हमेशा रखा और हम सबको सिखाया। हम सब संतों, भक्तों की ओर से एक ही प्रार्थना है कि दासत्वपूर्ण जीवन जीना है और सबका माहात्म्य समझा कर सेवा करनी है आपके प्रागट्य दिन-ये साधु पर्व पर आपके चरणों में यही प्रार्थना है... हमें सच्चा दास बनाओ और संबंध वाले सबकी सेवा करना हमारा मंत्र और जीवन बन जाये, ऐसी कृपा करो...

तत्पश्चात् उत्सव के सूत्र 'मरजी में तेरी मिट जायें...' की गहराई समझाते हुए सद्गुरु साधु पू. मनोजदासजी ने मार्गदर्शन दिया—



...प्रातःकाल इस परिसर में जैसे ही कदम रखा, तो यूं लगा कि मानो एक तीर्थ क्षेत्र में आये हों। यह अनुभूति आमतौर पर हरेक धार्मिक स्थल पर जाते हुए स्वाभाविक रूप से नहीं होती है। इस तीर्थ क्षेत्र के पीछे जिन संतों, युवकों व अक्षरमुक्तों की माहात्म्य युक्त सेवा का जो परिश्रम है, उसकी सुवास, आंदोलन और वाह्नेशन्स इस परिसर के कण-कण में महसूस होते हैं। इसी कारण इसे तीर्थ क्षेत्र होने का भाव हम सबके हृदय में प्रगट होता है। दिल्ली स्थित योगी डिवार्न सोसाईटी के तत्वावधान में जब भी कोई कार्यक्रम होता है, तो मेरी व्यक्तिगत अनुभूति यह रही है कि उस कार्यक्रम के नियोजन के पीछे जो महिमा-माहात्म्य युक्त विचार-चिंतन होता है, उसका अनुभव सब कर पाते हैं। आज भी इस विराट आयोजन में भी क्रियेटिव थाटफुलनेश का हमें एहसास होता है... छोटी-छोटी चीजों को देखते हुए मुझे ये लगता है कि जब कभी भी गुणातीत समाज के लिए महिमा युक्त सेवा के लिए प्रशिक्षण की कोई विद्यापीठ होगी, तो उसका मुख्यालय दिल्ली स्थित योगी डिवार्न सोसाईटी के मंदिर में ही होगा। ये हम सबके लिए प्रेरणा का स्थान है। इसके मूल में स्वाभाविक रूप से काकाजी महाराज हैं, जो आज हमें गुरुजी महाराज के रूप में प्रगट दर्शन दे रहे हैं... बालकृष्णजी महाराज भी पधारे हैं, तो ऐसा लगता है कि जैसे स्वयं स्वामीश्री रामदेवजी महाराज इनके द्वारा दर्शन दे रहे हैं और इनकी परावाणी उन्हीं के भाव को प्रगट कर रही है...



आज से 212 साल पूर्व अनादि अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामीजी मूलजी भक्त के रूप में प्रगट हुए। इसी मास में उन्हें गुजरात के डमाण तीर्थ स्थान में श्रीजी महाराज ने भागवती दीक्षा अर्पण की थी। आज उस शुभ पौष मास के शुक्ल पक्ष के प्रतिपदा का दिन है और देखिये क्या शुभ संयोग बना है कि आज ही के दिन यज्ञ नारायण की उपस्थिति में गुरुजी महाराज की मूर्ति का पूजन-अर्चन किया गया... जो भी इस मूर्ति का दर्शन करेगा, उसका परम कल्याण होगा। वैसे देखा जाये तो साधु पर्व का पाँच शब्दों में सूत्र दिया गया—‘तेरी मरजी में मिट जाएं।’ लेकिन, मुझे लगा कि ये केवल पाँच शब्द नहीं हैं, बल्कि साधना का मंत्र-ध्रुव मंत्र है। मेरे मन में सर्वप्रथम ये प्रार्थना हुई कि अपने प्रगट प्रभु की मरजी को जानना तो इतना आसान नहीं होता है। लेकिन, जिस मरजी की बात साधना के इस सूत्र में कही गई है, वो सिर्फ इतनी-सी सीमित नहीं है, यहाँ तो मरजी को जान कर, उस मरजी में मिट जाना है। ये तो आध्यात्म की चरम सीमा-चरम बिंदू है। मिट जाना कोई मृत्यु की बात नहीं है। ये मिट जाने की बात है जो थोड़ी बहुत मेरी समझ में आ रही है, तो यह प्रार्थना का भाव है...

पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥ यह तो एकात्मभाव को प्राप्त करने का सूत्र है। तेरी मरजी को जब मैंने जान लिया, तो तेरे लूपमय हो गया और अपने आपको देह रूप में रखते हुए स्वयं (स्व) को मिटा दिया। समग्र इंद्रियों के भाव से परे हो गया और हर जगह ईशावास्यमिदं सर्व यत्किंच जगत्यां जगत्।

...शायद ‘स्वामी की बात’ के पहले प्रकरण की 7वीं बात में लिखा है कि **जिनका भगवान के साथ योग है**, जो भगवान की आङ्गा में रहते हैं और उनकी मरजी को जानते हैं, ऐसे साधु के साथ अपने जीव से प्रीति करेंगे, तो उस संबंधयोग से धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति एवं महिमायुक्त उपासना को हम प्राप्त कर सकते हैं।

ऐसी प्रार्थना है कि हमारा जीव सत्संग प्राप्त करे और उस सत्संग के फलस्वरूप ऐसे दिव्य संत सद्गुरु शांतिदादा, सद्गुरु अश्विनदादा और भगवान धारक सभी दिव्य संत जो प्रभु की मरजी जानते हैं, उनके साथ हमारा जीव प्रीति से एक बार जुड़ जाये। इनके साथ जुड़ने से उनकी वही मरजी हमारे रूप में इस धरती पर साक्षात् प्रगट रहेगी। फलस्वरूप इनके दास बनकर केवल इनकी प्रसन्नता को प्राप्त करने हेतु जीवन का प्रत्येक विचार, गाणी और वर्तन हम कर पायेंगे। ऐसी कृपा आशीष इस दिव्य अवसर पर सभी स्वरूप हम सब साथकों के ऊपर प्रसन्न होकर

बरसायें, ऐसी शुभ प्रार्थना-वंदन।

अंत में पू. चरणरजस्वामी एवं पू. प्रस्थानभाई ने हरिधाम-भक्ति आश्रम की बहनों द्वारा प्रार्थना रूप बना कर भेजा ‘कलावा’ मंचस्थ स्वरूपों एवं संतों को अर्पण किया।





आदिकाल में यृथ्वी रक्षक आये हुरि तारणहार...





ये अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानन्दस्वामी तो हमारे रहने का धारा हैं...

—श्रीजी महाराज

तुम्हारे हृदय में मैं विराजमान रहता हूँ। सो, मेरा वह स्थान शुद्ध रखना।



सब भगत शरीर की परवाह किए बिना इतनी बारिश में
भीग कर यहाँ आये हैं। इनका भ्रत तो पूरा ही गया।

अंतर्यामी और सर्वज्ञ मान के, झेला गुणातीतस्वामी का वचन
गुरु आज्ञा और गुरु चरण में, प्रागजी भगत रहते थे...



गुणातीतजी राजी हुए, तो दिव्य दूष्टि का दान मिला
आचार्यश्री से दिलबाषु आशीष जागास्वामी को...



स्वरूप हैं तीनों ही एक समान, रखें नहीं एक देशस्थ ज्ञान
सर्वदेशीयता अपनाएं, वही है ब्रह्मज्ञान, वही है ब्रह्मज्ञान...



नात-जात का भेद नहीं, श्रीजी संबंध नज़र आये
कृष्णजी अदा दर्शन कर अभिभूत हुए...



कहें आचार्य, 'राजी किया है श्रीजी को...'



हीराभाई के मलिन मन को बदल दिया- सत्संगी बनाये...

भाषा, देश का फर्क नहीं, हर जगह साथ में 'रब' हैं...



भक्तवत्सल काका ने लिया शरण में ऐसे, सौंप दिया गुरुजी को संबंध दे दिया ऐसे...





नारायणी सेना के साधु बनो, इससे अच्छा कल्याण कहाँ...



जोगी में अखंड दिव्यभाव रख्यो, ग्रभुदास तो 'हरिस्वामी' बन्यो....



सहज सूचन सत्यरुप का मान सेवा में लग यड़े, काकाजी जब राजी हुए, अक्षरविहारी धन्य हुए...



भक्त की भूल नज़र में न लेते, केवल Positive ही विचारें... साधुता साहेब की दिल छू जाए...



कान्ति तो
हमारा येट है,
वो यैसे कमाता है
और
हमारा चलता है...



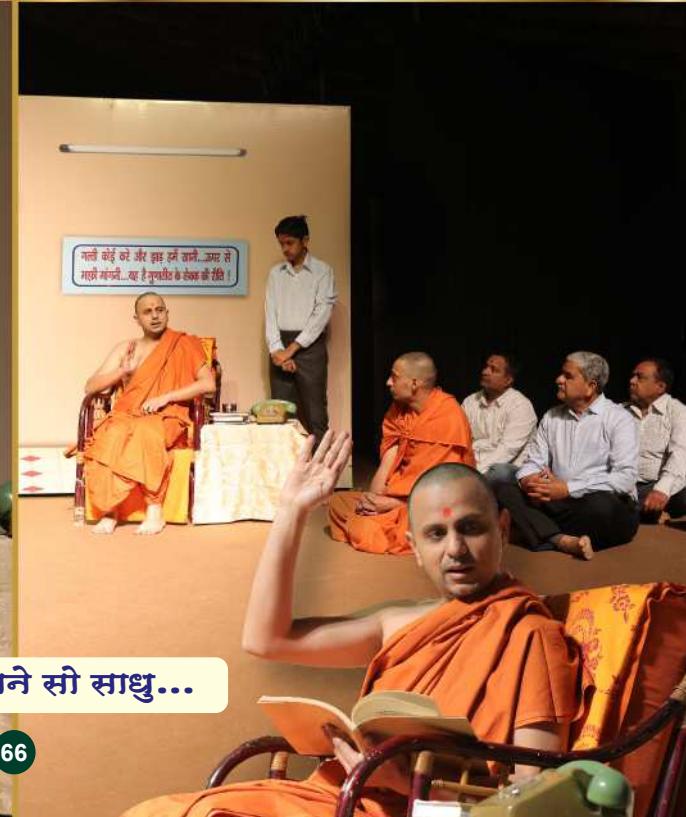
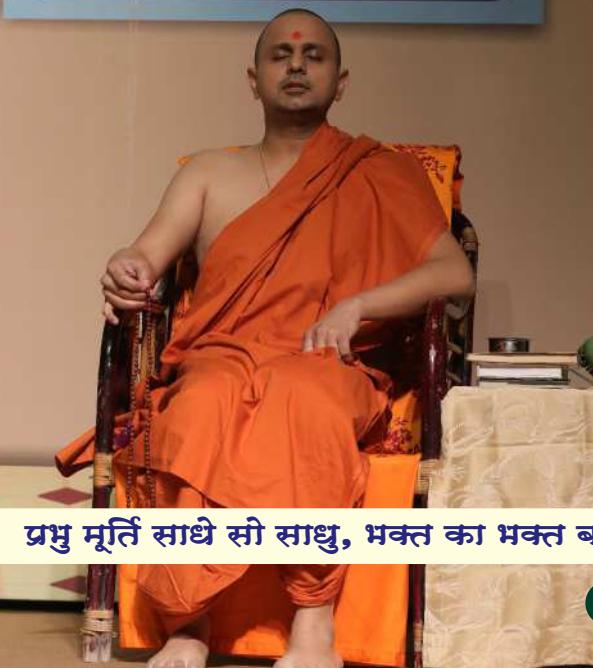
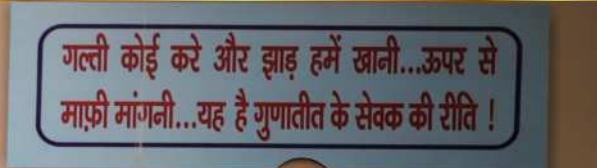
प्रयत्न करके हम मूर्ति में स्थिर नहीं हो पाते
प्रमुक्ता व मूर्ति में सहज, स्वरूप मग्न ही जाते...



स्वामी को राज़ी करना यही है लगन, प्रेमस्वामी साधुता के रतन...



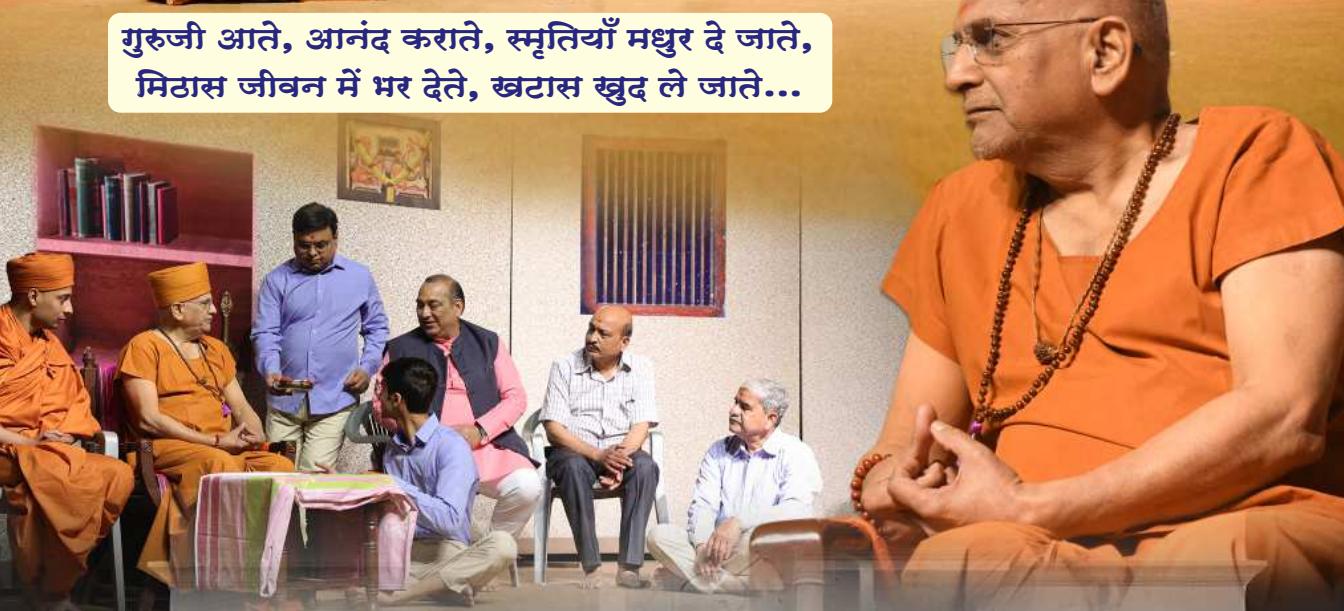
संभालते भक्तों को महिमा से जो, भरतभाई साधुता की मिसाल हो...



यानीयत तक गए छोड़ने, प्रसन्नता बरसाई,
अल्प संबंध में अपनायन दे, प्रभु की अलख जगाई...



गुरुजी आते, आनंद कराते, स्मृतियाँ मधुर दे जाते,
मिठास जीवन में भर देते, खटास खुद ले जाते...



महिमा परस्पर एक दूजे की, वर्तन में दे दिखाई,
चरणस्पर्श न करने दिया तो यादुका माथे लगाई...

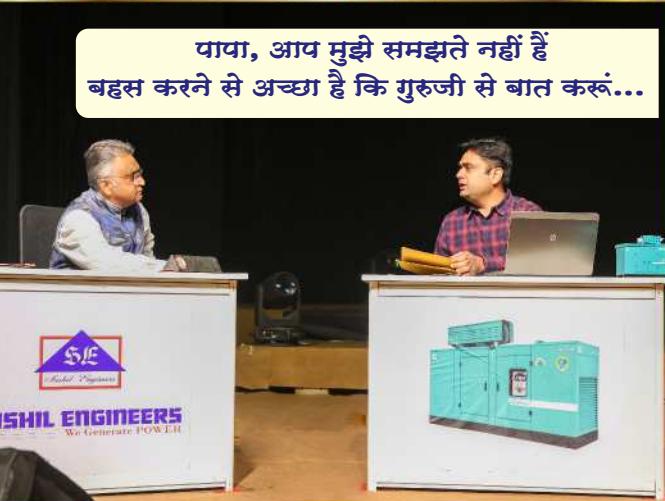




जुओ, अमे भक्ताने लेवा आवी गया...



गुरुस्थान पर होते हुए भी, सेवकभाव से जीते साथी संत की सेवा करने का, मौका कभी ना छूके...



याया, आप मुझे समझाते नहीं हैं
बहस करने से अच्छा है कि गुरुजी से बात करूँ...



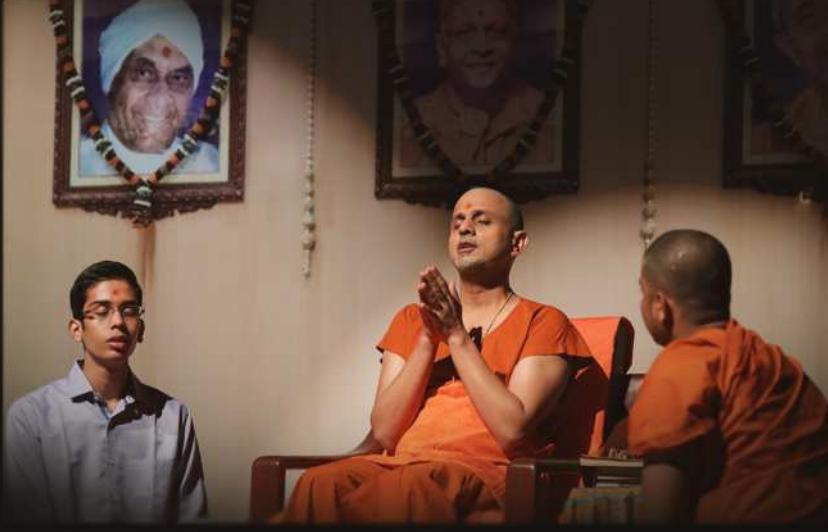
अशंत, व्याकुल, विचलित जो भी
गुरुजी के पास आए
आपकी प्रेमल सौम्य मूर्ति
के दर्श से शांति पाएं...



उयेन्द्रभाई की सेवा को हरिस्वामी की सेवा जाना
गुणातीत समाज के मुक्तों को अपना परिवार ही माना
सर्वदेशीयता से बर्ते सो साधु...

भक्तों की मुश्किल हल करने
ये मशीनरी सारी लगा दें...





‘यांच बंगावाला’ को पुकारो, काम अशक्य भी होगा
काकाजी की इस बात पर चलो, श्रेय अवश्य ही होगा...



चि. आशिष... गुरुहरि काकाजी, मैं व सारा सत्संग समाज
हमेशा तुम्हारे संग आधी रात को भी खड़ा है और रहेगा।

— गुरुजी





मेरे व्यारे संतों! आपकी साधुता, शुद्ध आचरण और निरयेक्ष निःस्वार्थ ग्रेम ही सबको छू जायेगा। आपका वर्तन ही सबको इस मार्ग पर चलने के लिये ग्रेसित करेगा और समाज में रह कर, लोगों को प्रभु से जोड़ कर, उनकी सेवा करके ही आपकी साधना पूर्ण होगी।

—श्रीजी महाराज



ਸਾਧਕੀ ਹੁਦਿਧਿ ਸਹਿਂ, ਸਾਧੂਨਾਸੁ ਹੁਦਿਧਿ ਤਵਹਸੁ।





૩

મદન્યત્ત તે ન જાનન્તિ, નાહં તેભ્યો, મનાગવિ॥





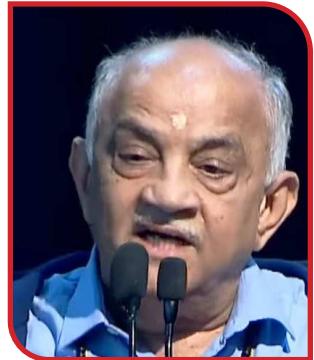
काकाजी की मूर्ति, अंतर में सबके बसाई। कुटुंबभाव से गुरुजी ने आत्मीयता फैलाई...



24 दिसंबर की सायं

करीब 5:30 बजे श्रीजी महाराज एवं उनकी गुणातीत परंपरा के स्वरूपों के मर्मभरे प्रसंगों का 'साधवो हृदयं मम...' नाटक के रूप में दर्शन करने के लिये सभी सभा मंडप में एकत्र हुए। सर्वप्रथम प.पू. वशीभाई ने सत्पुरुष की साधुता का वर्णन करते हुए आशीर्वाद दिये —

...साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम्। मदन्यत् ते न जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि॥ साधु मेरा हृदय है और महाराज ने शिक्षापत्री में लिखा है कि जो ब्रह्म को जानता है, वो परम को प्राप्त करता है... 'साधवो हृदयं मम' नाटक एक ऐतिहासिक यात्रा है। ऐतिहासिक इस तरीके से कि 2012 में दिल्ली मंदिर के साथ के 'तीन फरवरी पार्क' में झामा हुआ था। तब कितनी डिफिकल्टी थी, वो सबको मालूम है। अब यहाँ 'दिव्यधाम' में करना भी बहुत प्रॉब्लेमेटिक बात है। कोटि धन्यवाद हो दीदी, नित्या दीदी, बंसरी दीदी, परछाई दीदी और दूसरी ओर राकेशभाई व पूरे मंडल को कि इतनी ज़हमत उठा कर एक ऐतिहासिक ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जर्नी का दर्शन करा रहे हैं। 'साधु' होना बहुत अलग जर्नी है। गुणातीतानंदस्वामी ने साधुता की बात बताई और भगतजी महाराज को साधु बनाते हुए बोला कि आपको 'साधुता का कसब (हुनर)' सिखाना है। वही हुनर शास्रीजी महाराज व योगीजी महाराज ने समझा। योगीजी महाराज ने लिखा है— साधु होना और साधुता सीखनी। ये बात हमारे सभी स्वरूप पकड़ कर खुद वर्तन कर रहे हैं और हम से करवा रहे हैं।



अभी प्रमुखस्वामी जन्म जयंती महोत्सव अमदावाद में हो रहा है। इतने बड़े पैमाने पर हो रहा है, फिर भी शाम को हर रोज़ वहाँ सभा होती है। उसमें महंतस्वामी स्वयं हाज़िर रह कर, योगीजी महाराज की साधुता की बात सिखा रहे हैं। आज साहेब दादा के साधुओं की इतनी बड़ी फौज है, इतने बड़े आसन पर विराजमान हैं, लेकिन अपने वर्तन से साधुता का दर्शन कराते हुए, व्यस्त कार्यक्रम में लंडन से मुंबई आये और फिर मुंबई से आबू धाबी गये। आबू धाबी में जब मंदिर का दर्शन करने गये, तो वहाँ विशेष नोट में लिखा— साधु जयुदास के जय स्वामिनारायण। हमें सिखाते हैं कि आप कितनी भी ऊँची कक्षा पर पहुँचो, पर आप साधु हो। हमारे सभी स्वरूप यही बात सिखा रहे हैं... गुरुजी खुद साधु हैं और सबको बनाते हैं। वे हम से यही आग्रह रखते हैं कि कुछ भी हो जाये, हमें साधु होना ही है...



इस नाटक में एक साथ तीन जनरेशन— मुंबई के चार्ट्ड एकाउंटेंट ओ.पी. अग्रवालजी, उनके बेटे दीपक, उसके बेटे आत्मन और बेटी लीला ने काम किया है। तो, गुरुजी पूरे कुटुंब को साधु बना रहे हैं। क्योंकि आज पूरी दुनिया का अल्टीमेट सोल्युशन है साधुता...

उत्सव में जो संयोग बनते हैं, वो साधुता सिखाते हैं। यहाँ जो भक्त सम्मिलित होने आये हैं, उनमें से कुछ कहते हैं कि हमारे होटल में गरम पानी नहीं आ रहा। पर, फिर खुद अंतर्दृष्टि करते हैं कि हम साधु पर्व में आये हैं न, तो गुरुजी साधुता सिखाते हैं। तो, पूरी दुनिया का सोल्युशन है—समत्वभाव व सहनशक्ति। गुरुजी खुद प्रेक्टीकल जी कर हम सबको साधुता की प्रेरणा देते हैं, जो दुनिया का सोल्युशन है। सहन करना, छोड़ देना ही साधुता है। साधु पर्व में यही नाटक प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसमें सौ से अधिक पात्र हैं। बुड़े, जवान और बच्चे सब ने बहुत महेनत करी है। गुरुजी को याजी नहीं होना होगा, तो भी होना पड़े ऐसा हो गया है... साधु पर्व का सूत्र है कि मरजी में तेरी मिट जायें। जब देह पर आता है, तब पता चलता है। आधा घंटा सोने को नहीं मिलता है, तब हमारी बाँड़ी जबाव दे देती है। यहाँ इतनी ठंड में रात के दो बजे तक प्रेक्टिस चलती थी...

महाराज के समय के प्रेमानंदस्वामी ने जब बहुत अच्छा भजन गाया, तो खूब खुश होकर महाराज उनसे बोले—तुम जो मांगोगे, वो दूँगा। स्वामी बोले—आपकी मूर्ति दो। महाराज ने कहा—उसके साधन तो अलग हैं। उसके लिये मरना पड़ता है...

प्रेमस्वामी, अभी विपरीत परिस्थिति—संयोग में भी आये हैं। ४ जनवरी को उनके यहाँ बड़ा उत्सव है, फिर भी सेवा करने वाले साधुओं के साथ यहाँ आये हैं। अब वापिस जायेंगे, उसकी तैयारी करेंगे। प्रेमस्वरूपस्वामी, साहेब दादा, अश्विन दादा, शांति दादा, दिनकरभाई, मरतभाई जैसे साधु मिले हैं। दिनकरभाई अमेरिका से आर्टेलिया और वहाँ से न्यूजीलैंड होकर इंडिया आये हैं। वे कहते हैं कि मुझे टाइम डिफरेंस लगता ही नहीं है। हम प्रार्थना करते हैं— हे महाराज, हे स्वामी, हे गुरुजी जिस हेतु आपने इस नाटक का आयोजन किया है, वो साधुता हम में सिद्ध हो जाये...

प.पू. वशीभाई के आशीर्वचन के बाद नाटक आंरभ हुआ। लगभग पौने तीन घंटे में यह पूरा हुआ। पूरा पंडाल भरा हुआ था और सभी लगातार बैठे रहे। वृत्य नाटिका में भक्ति अदा करने वाले मुक्तों को अपने दर्शन से उत्साहित करने वाले संतभगवंत साहेबजी ने समापन के बाद आशीर्वाद दिया—

...पूज्य गुरुजी के ४५वें बर्थ डे 'साधु पर्व' में कल्चरल प्रोग्राम के द्वारा महाराज





से लेकर सभी गुणातीत स्वरूपों के दर्शन किये और गुरुजी के जीवन प्रसंगों का माहात्म्य बहुत बड़ा है। इसलिए प्रदीपभाई, वेदकुमारी और सारी टीम को बहुत-बहुत अभिनंदन... रीयली यहाँ से उठने का भी मन नहीं होता था। ठंड बहुत है, लेकिन किसी को लगी ही नहीं। आप सबने इतना पकड़ कर रखा। हरेक आर्टिस्ट ने पूरे दिल से काम किया। जब काकाजी के रूप में पुनीतजी की एंट्री हुई, तब तो मैं आवाक हो गया और बाद में गुरुजी की एंट्री हुई, तो मैं सोच में पड़ गया कि खुद गुरुजी को लेकर आये हैं। लेकिन, वो तो राकेशभाई थे। राकेशभाई को काँग्रेस्युलेशन! गुरुजी का जो सेवन किया है, तो उनके जैसा हलन-चलन दिखता था। सबको बहुत-बहुत अभिनंदन। जो लड़कियाँ बार-बार डांस करने के लिए आती थीं, उनको तो ज्यादा अभिनंदन। मेरी सब लड़कियाँ थक गई होंगी। योगीजी महाराज कहते थे—ताजी सलाम! नाटक की शुरुआत में जो भाव था, वही आखिर तक रखा। यहाँ बैठे हुए साथु-संत, अश्विनभाई, शांतिभाई, दिनकरभाई, भरतभाई और व्रतधारी संत, हंसा दीदी, आनंदी दीदी, व्रतधारी संत बहनें और सब मुक्तों को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं। प्रदीप, गेरसोम और आपकी टीम को बहुत-बहुत अभिनंदन-धन्यवाद। गुणातीतानंदस्वामी जो बना है, वो श्री अच्छा है—नक्षत्र था न और महाराज भी अच्छा है... आपने जो सिलेक्शन किया है, उसके लिये बहुत-बहुत अभिनंदन।

अंत में प.पू. हंसा दीदी ने भी अल्प वचनों में अपने हृदय का हार्द व्यक्त करते हुए आशीष दी—



सचमुच अद्भुत! स्वामिनारायण भगवान का आज तक का संकल्प साकार हुआ। सभी स्वरूपों का दर्शन किया, खूब धन्यवाद है। जिसने जो कुछ भी सेवा रूप में किया, उसे जीवनभर का फल मिलने ही गला है। वो फल क्या? तो आंतरिक शांति और किसी का दोष न देख पायें—ऐसी सद्बुद्धि। सभी कलाकारों को खूब धन्यवाद... एक बात कहूँ? मैं भी यहाँ बैठ नहीं रह पा रही थी। मुझे हुआ कि मैं भी ऊपर आकर नाचूँ...

सच, गुणातीत परंपरा की साधुता का दर्शन कराता यह नाटक प्रेरणादायी व ऐतिहासिक सिद्ध हुआ। इसमें हर प्रसंग के समय एवं स्थान के अनुरूप वातावरण प्रस्तुत करने के लिये, पू. अमृतभाई पटेल के निर्देशन में पू. गौरव शर्मा एवं मुक्तों

ने फ्लेक्स और सन बोर्ड शीट तैयार कराई। पू. प्रदीपजी के नृत्य निर्देशक पू. राकेशभाई, पू. देवांगभाई एवं पू. खुशाली ने नृत्य नाटिका के भजनों पर नृत्य करने के लिये सत्संग के युवक-युवतियों को जो बढ़िया प्रशिक्षण दिया और कड़ी सर्दी में देह के भावों से परे होने का प्रयास करते हुए, सत्संग के युवाओं ने प.पू. गुरुजी के प्रति जो भक्ति अदा की उसके लिये नमन!

सत्संग के युवकों और युवतियों ने तो 13 अक्टूबर से रोज़ शाम को मंदिर में भावनृत्य का अभ्यास शुरू कर दिया था। सभी दिन में अपना ऑफिस या व्यवसाय का काम करते और मंदिर आकर देर रात तक भावनृत्य का अभ्यास करते। एक महीना बीतने पर ड्रामा के नृत्यों का अभ्यास भी जुड़ गया। पूरे दिन काम और नृत्यों का इतना अभ्यास करने से इन्हें अत्यधिक शारीरिक थकान होती। लेकिन प.पू. गुरुजी का वात्सल्य-प्रेम उन्हें बल देता रहा। ड्रामा के अभ्यास के बाद, नृत्यों का अभ्यास करते हुए कई बार रात के दो बज जाते थे। ड्रामा या नृत्य में योगदान देने वाले मुक्त, स्वयंसेवकों की अल्प संख्या होने के कारण अन्य कई सेवाओं में भी अपना सहयोग देते।

ड्रामा और नृत्य में सभी कलाकारों के लिये उपयुक्त पोषाक, ड्रामा की रिहर्सल, कलाकारों का चयन, उन्हें उनके संवाद देना, रिहर्सल में अलग-अलग प्रापर्टी को इकट्ठा करके सही समय पर लगाने और हटाने जैसी कई सेवाओं में अक्षरज्योति से पू. नित्या दीदी की अगवानी में पू. तुलसी दीदी, पू. चंदन दीदी, पू. बाती दीदी एवं कई युवक-युवतियों और भाभियों ने पर्दे के पीछे की सेवायें खूब लगन और मेहनत से करीं।

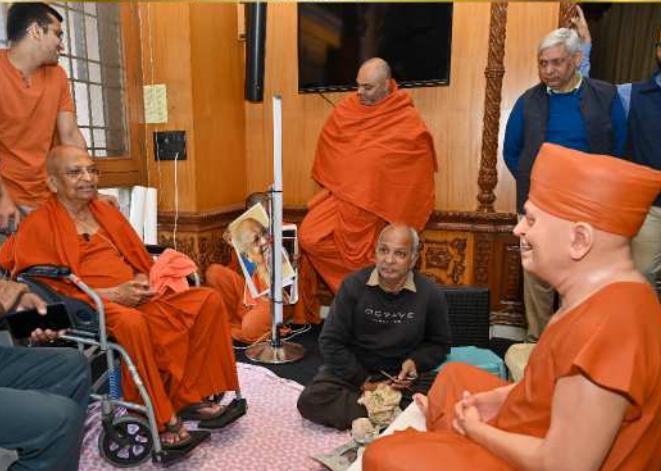
जिन्होंने कभी कहीं अभिनय नहीं किया था, ऐसे तकरीबन 135 वृद्धों, मध्यम आयु, युवाओं और बालकों को पू. प्रदीपजी एवं उनके सहायक पू. विजयभाई व पू. चिरागभाई ने खूब धैर्यता से नाटकीय प्रशिक्षण देकर, नाटक को अभूतपूर्व बनाया। सभी कलाकारों को खूब धन्यवाद कि कहियों को दैहिक या व्यावहारिक परेशानी भी नुई, लेकिन सब कुछ नज़रअंदाज करके, भक्ति अदा करने से वे चूके नहीं। इस नाटक द्वारा जो आध्यात्मिक ज्ञान परोसा जा रहा था, उसे मानो अपने जीवन में ढालने की उमंग और उत्साह सभी के अंतर में था।

पर, सबको गुणातीत स्वरूपों के कृपा पात्र एवं गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के साझे सेवक पू. घनश्यामभाई अमीन की कमी बहुत महसूस हुई। अपनी नाजुक तबियत के बावजूद उन्होंने इस नाटक और संभाजी नगर में होने वाले 'मैत्री सुमिरन पर्व' के लिये इतनी भागदौँड़ करी कि दिल की बीमारी के कारण उन्हें अस्पताल में दाखिल होना पड़ा और दोनों पर्वों में हाजिर नहीं रह पाये। देहभाव को नकार कर वे इस प्रकार सेवा करते हैं, तो उनके प्रति दिल नतमस्तक हो जाता है।





प.पू. गुरुजी की मूर्ति की पूर्व तैयारियाँ...



25 दिसंबर सुबह – मंदिर के प्रांगण में आनंदीब्रह्म...





मूर्तिप्रतिष्ठा विधि...



मूर्तिप्रतिष्ठा निमित्त-अन्नकूट एवं आरती...





25 दिसंबर की सुबह क्रिसमस यानि ईसा मसीह के प्राकट्य दिन के शुभ दिन प.पू.

गुरुजी की मूर्तिप्रतिष्ठा का कार्यक्रम मंदिर के 'कल्पवृक्ष' हॉल में आयोजित किया गया था। प्रायः जगत में किसी के यहाँ कोई उत्सव होता है, तो उसमें सम्मिलित होते लोग अच्छे से अच्छे कपड़े पहन कर तैयार होते हैं। जबकि मूर्तिप्रतिष्ठा का यह उत्सव तो गुणातीत समाज का ऐतिहासिक उत्सव था, इसलिये सभी के उमंग-उत्साह की कोई सीमा नहीं थी। सो, इस मंगल प्रसंग की खुशी स्वरूपों, ब्रतधारी युवकों और हरिभक्तों को जड़ाऊ ब्रोच सहित क्रीम रंग की पगड़ी बांध कर व्यक्त की गई। भाभियों द्वारा बनाये कृत्रिम फूलों के तोरणों से मंदिर को बाहर व भीतर से सजाया था। भाभियों की इस भक्ति का मानो फल देते हुए, प.पू. हंसा दीदी ने तोरण देख कर कहा — ज़रा देखो, ऐसा लगता है कि एक-एक फूल गिन के पिरोया हो... इसके लिये प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी को कोटि धन्यवाद कि समय-समय पर अपनी जीवनशैली और कथा-वार्ता से संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों को एक-दूजे के पूरक बनने का ऐसा मार्गदर्शन दिया है कि सबको यही लगता है कि एक-दूसरे के बिना सब अधूरे हैं।

कुछ वर्षों पहले संतभगवंत साहेबजी ने प्रसन्नताभरी वाणी और अपने हाव-भाव से बताया था कि अपने उत्सवों में जहाँ भी ढोल बजते हों और जो मुक्त भंगड़ा करने शामिल होते हों, तो समझा जाना कि दिल्ली वाले ही हैं।

सो, अब जब मूर्तिप्रतिष्ठा का ऐसा अनमोल अवसर था, तो इन पलों को अद्भुत बनाने के लिये, पू. सचिन परबजी द्वारा 'पुणेरी ढोल-ताशा' बजाने वाले समूह को बुलाया था। 'जेतलपुर' केबिन में विराजमान संतभगवंत साहेबजी व प.पू. गुरुजी दर्शन दे रहे थे। तब ढोल-ताशे की निराली ध्वनि से खूब उत्साहित होकर, मूर्तिप्रतिष्ठा के आनंद में मग्न होकर सभी नाचने लगे। मंदिर के हॉल में जगह सीमित होने के कारण, स्वरूपों, कुछ संतों, ब्रतधारी युवकों-बहनों और गणमान्य अतिथियों के अतिरिक्त अन्य सभी 'दिव्यधाम' में बड़ी ख्रीन्स पर मूर्तिप्रतिष्ठा विधि का दर्शन कर रहे थे। सो, वहाँ पंडाल में उपस्थित बहनों-भाभियों ने भी गरबा-भांगड़ा करके अपनी खुशी ज़ाहिर की।

'कल्पवृक्ष' हॉल में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के चरणारविंद के समक्ष मध्य में प.पू. गुरुजी की संगमरमर की मूर्ति, नक्काशी किये लकड़ी के आसन पर स्थापित की थी। स्वरूपों के आगमन के पश्चात् प.पू. वशीभाई के साथ पू. हितेनभाई और पू. पियुषभाई ने वैदिक मंत्रों द्वारा मूर्ति प्राणप्रतिष्ठा की विधि आरंभ



कराई। प.पू. दिनकर अंकल एवं पू. सुहृदस्वामीजी ने प्रारंभिक विधि संपन्न की। अंत में संतभगवंत साहेबजी के साथ प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी एवं प.पू. निर्मलस्वामीजी ने संकल्प करके मूर्ति के हृदयचक्र पर अपना हाथ रख कर प्राणप्रतिष्ठा की और फिर अंजन शलाका से मूर्ति के नेत्रों में अंजन लगाकर, मूर्ति को आदर्शः (दर्पण) दिखा कर संपूर्ण विधि संपन्न की। एक प्रदक्षिणा करने के बाद, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. दिनकर अंकल एवं पू. सुहृदस्वामीजी ने चंदन से मूर्ति का पूजन किया। मूर्ति को हूबहू प.पू. गुरुजी का रूप देते हुए प.पू. अश्विनभाई (मोगरी) ने कंठी पहनाई और प.पू. भरतभाई ने चश्मा पहनाया। सारे गुणातीत समाज की ओर से प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. निर्मलस्वामीजी और पू. सुहृदस्वामीजी ने मूर्ति को दो हार अर्पण किये।

प.पू. गुरुजी की मूर्ति बनवाने के लिये दिल्ली मंदिर के आत्मीय पू. अमृतभाई पटेल साहेब ने दिन-रात अपनी सेवा का भरपूर योगदान दिया। सो, उन्हें सम्मानित करते हुए संतभगवंत साहेबजी ने मूर्ति का प्रासादिक हार उन्हें पहनाया। तत्पश्चात् 'गुणातीत ज्योत' की ओर से प.पू. विज्ञानस्वामीजी एवं पू. दिलीपभाई भोजाणी ने मूर्ति को हार अर्पण किया। इसी दौरान 'भक्ति आश्रम' की बहनों द्वारा गुजराती अंलकारी भाषा में प.पू. गुरुजी के श्रीचरणों में की गई प्रार्थना पू. राकेशभाई ने पढ़ी, जिसका हिन्दी अनुवाद निम्न है—

प.पू. गुरुजी के चरणों में वंदन करते हैं बारंबारा/
हे गुरुजी, हमें साधुता के सच्चे आभूषण प्रदान करना।
प.पू. काकाजी के हृदय की धड़कन बने आप।
बापा की आज्ञा के अनुरूप पल-पल वर्ते आप।
गुरु के संकल्प को साकार करने में नहीं किया विलंब।
जोगी की अनुवृत्ति को आपने पलकों पर बिठाया।
दिल्ली की डरावनी दुनिया में खोले दिल के द्वारा।
दर्शन-स्पर्श देकर इस धरा पर किया संस्कार सिंचन।
परिश्रम के पर्वतों को हमेशा तुमने ललकारा।

जीव का मला करने में आपने नहीं देखा दिन या रात।

अपने लिये नहीं सोचा कभी भी क्षणभर।

अपमान-उपेक्षा का भी हँसते हृदय से किया सत्कार।

भक्तों की भक्ति-पराभक्ति करने आप बने सूत्रधारा।
 सबके सुहृद मित्र बन कर, बने सुख-दुःख के भागीदार।
 भजन को भोजन बना कर, रहे भगवान् में एकाकार।
 आबाल, वृद्ध सभी के स्वरूप का संबंध से किया स्वीकार।
 अनंत जन्मों के भरे थे, जीव में विषय और विकार।
 खोटी (गलत) इंद्रियों के घोड़े भी थे जीव पर सवार।
 मन, बुद्धि, चित्त, अहं जो जीव के साथ खेलते थे।
 लेकिन विवेक देकर आपने सत्य-असत्य का सिखाया सारा।
 अंतर का अंतर टाल कर, आत्मीयता के जोड़े आपने तार।
 सामने आने वाले मुक्त में आपने देखा केवल जोगी का आकार।
 अर्चिमार्ग का सच्चा साथी बन कर, दिया सहज प्रेम और प्यार।
 मंदिर बना कर आप बिराजे और बने भक्तों के प्राणधार।
 भक्ति आश्रम के साधक भुलके, करते हैं आपको प्रार्थना और पुकार।
 भूल कर, छूक कर, सहन करके, सेवन करके, स्व पिघलाने में अब न लगे देर।
 गुरुहरि प्रेमस्वामीजी के इस सूत्र को दास के दास बन के करें जीवन में साकार।
 इस हेतु आप सभी गुणातीत पुरुष हम पर बरसाते रहना कृपा-आशिष लगातार।

इस प्रार्थना के बाद पू. राकेशभाई ने बताया कि संतभगवंत साहेबजी ने प.पू. गुरुजी की स्मृति वंदना गाने की अनुमति प.पू. गुरुजी से दिलवा दी है। सो, पू. राकेशभाई ने संतभगवंत साहेबजी से प्रार्थना करी कि सर्वप्रथम वे श्लोक गाकर जारी करें। तो, जैसे कि प.पू. गुरुजी अक्सर कहते हैं कि भगवत्स्वरूपों के वचन बहुमूल्य होते हैं, वे कब क्या आशीर्वाद दें, उसका मर्म पकड़ना पड़ता है। इसी प्रकार प.पू. गुरुजी के श्लोक पढ़ते हुए प.पू. साहेबजी ने सहजता से निम्न आशीर्वाद दिये—

...सारे गुणातीत समाज के लिये, विशेष रूप से दिल्ली-पंजाब के मुक्तों के लिये आज बहुत आनंद का दिन है। हम सब प्रगट के उपासक हैं। गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना का प्रवर्तन किया। **शास्त्रीजी महाराज ने मध्य मंदिर में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी को अपने ईष्टदेव भगवान् स्वामिनारायण के साथ विराजमान करके, अक्षर सहित पुरुषोत्तम की उपासना**





की नींव डाली। इस शुद्ध उपासना को जगजाहिर करके हम सबके लिये कल्याण का मार्ग खोला। इस उपासना का सत्य रहस्य काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी ने हम सबको बताया। अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के बारे में एक ही सेन्टेन्स में बोला जाता है कि साकार और प्रगट की उपासना। प्रभु हमारे बीच में मानवरूप में हैं। गुणातीत साधु के द्वारा हमें दर्शन, आशीर्वाद और प्रसादी देते हैं। भगवान के सभी सुख उनके द्वारा हमें प्राप्त होते हैं। गुरुजी ऐसे ही गुणातीतभाव के संत हैं। गुणातीतानंदस्वामी की मूर्ति को देख कर कई लोग बोलते हैं कि गुरुजी ने अपनी मूर्ति पधरा दी है। गुणातीतानंदस्वामी की मूर्ति गुरुजी जैसी लगती है। गुणातीत परंपरा के साधु काकाजी के हम सब खूब-खूब आभारी हैं।

गुरुजी को सांकरदा-सोखड़ा से बाहर जाना ही नहीं था। काकाजी ने 1968 में इनसे कहा कि आपको दिल्ली जाना है। जब वे जा रहे थे, तो पप्पाजी ने हमें बुला कर कहा कि गुरुजी दिल्ली जा रहे हैं, सो उनका विदाई समारोह करना है। हम सब युवकों ने इकट्ठे होकर गुरुजी को विदाई दी। गुरुजी आशीर्वाद लेकर दूसरे दिन दिल्ली आये। दिल्ली में तब कोई भगत ही नहीं था। प्रेमस्वामी, गुरुजी के सेवक के रूप में साथ आये थे। आज दोनों गुरु-चेला महंत हैं। हमारे लिए उपास्य मूर्ति बन गये हैं। लौकिक दृष्टि से गुरुजी ने काकाजी से कहा था कि दिल्ली में क्या है? कोई भगत नहीं है? कोई मानने वाला नहीं है? पर, बड़े पुरुष की दृष्टि में क्या है? वो हम बुद्धि से समझ नहीं सकते। पर, गुरुजी को काकाजी के प्रति जो प्रेम था, उसी का यह दर्शन है। हम देखते हैं कि आज दिल्ली में संतों, युवकों, संत बहनों और गृहस्थ भक्तों का कितना बड़ा समाज है। हम सबके लिए प्रगट की उपासना यानि अक्षरपुरुषोत्तम और वही अक्षरपुरुषोत्तम गुरुजी हैं। इनके द्वारा प्रभु हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। आज प्रेमस्वामी, निर्मलस्वामी, बापुस्वामी, अश्विनभाई, शांतिभाई, दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, सब संतों ने मिलकर गुरुजी की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा की है। तो, हमारे लिए गुरुजी जंगम तीर्थ हैं। चलते-फिरते रहते हैं- कभी बाहर बैठते हैं, कभी रुम में बैठते हैं, कभी झूले पर बैठते हैं। लेकिन ये मूर्ति स्थावर तीर्थ हैं। जब भी यहाँ आयेंगे, तो दर्शन होंगे। गुरुजी की मूर्तिप्रतिष्ठा का यह बहुत बड़ा काम हुआ। हमारी प्रगट की उपासना है, तो गुरुजी की मूर्ति सबको



दर्शन-आशीर्वाद देगी।

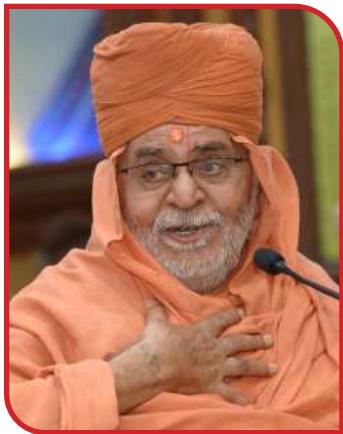
साथ में आनंदी दीदी ने गुरुजी का जो श्लोक बनाया, उसके लिये उन्हें बहुत-बहुत अभिनंदन-शुक्रिया। मालूम नहीं भगवान ने एक ही पात्र में सारी होशियारी दे दी है। किसको हार पहनाना? किसको कहाँ बिठाना? किसको क्या खिलाना? किसको क्या नहीं खिलाना? किसको आना? किसको जाना? किसको डांस करना? किसको डांस नहीं करना? किसको खड़काना? एक ही पात्र में भगवान ने कैसा अलौकिक काम किया है! ऐसी दीदी ने स्तुति वंदना का श्लोक बनाया है, तो कवि भी है... हम ब्रह्मज्योति विद्यानगर में तो गुरुजी और प्रेमस्वामी की स्तुति वंदना बोलते ही हैं। लेकिन दिल्ली में गुरुजी ने मना कर दी थी। लेकिन, अब गुरुजी ने मूर्तिप्रतिष्ठा की सम्मति तो दी ही और आज से गुरुजी की स्तुति वंदना आरती में बोलने की सम्मति भी दी है।

प.पू. गुरुजी की स्तुति वंदना— जाकी बुद्धि तो सुदिव्य बनी अहो! योगी कृपा पाने से, किया सेवन काकाजी का, 'स्वरूप' सभी राजी किये। जाकी देह गुणातीत-सी दीरो, मगर मूर्ति में रहें, गौरव काका-पप्पा के, 'गुरुजी' को नित वंदन करें॥ मुक्तों के सुख-दुःख के भागी, कुटुंबभाव जगाते जो, लुभावनी मूर्ति तो तेरी, मोह जगत का मिटावे जो। गुरुभक्ति अनूठी तेरी, प्रत्यक्ष करे काकाजी को, रीति-नीति अनोखी जाकी, 'गुरुजी' को वंदन अहो॥

इस प्रकार, स्तुति वंदना स्वयं गाकर संतभगवंत साहेबजी ने सभी के लिये जारी की। गुलाब का फूल कोमलता और सुंदरता के लिये प्रसिद्ध है, इसी से लोग छोटे बच्चों की उपमा गुलाब के फूल से देते हैं। ऐसे ही 85 वर्षीय हमारे प.पू. गुरुजी की हरेक चेष्टा एक निर्दोष बालक की भाँति है। जीव का हृदय परिवर्तन करके, उसके मन को वे शांत करते हैं और पंचविषय से अंतर को मुक्त करके सुगंधित बनाते हैं। पू. संदीप मरोड़ियाजी जब भी मंदिर आते हैं, तो ऐसी भावना का प्रतीक 'गुलाब' प.पू. गुरुजी को अर्पण करते हैं। आज उन्होंने बहुत ही सुंदर 'लाल गुलाब' प.पू. गुरुजी की मूर्ति के चरणारविंद में अर्पित किया।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी से सखाभाव से जुड़े प.पू. दासस्वामीजी, जो कि पांव की तकलीफ के कारण उत्सव में नहीं आ पाये, परंतु अपनी भावना





व्यक्त करते हुए उन्होंने प्रार्थना का श्लोक स्वयं गाकर भेजा और मूर्तिप्रतिष्ठा के अवसर पर विशेष गुजराती भजन बना कर भेजा। जिसे पू. डॉ. दिव्यांग ने हृदय से गाकर वातावरण भावुक बना दिया।

प.पू. निर्मलस्वामीजी ने भी मूर्तिप्रतिष्ठा हेतु अपना आनंद प्रकट किया—

...आज भगवान् स्वामिनारायण की एक दिव्य चेतना दिल्ली अक्षरधाम मंदिर में अखंड बैठ रही है। वचनामृत में **स्वामिनारायण भगवान्** ने कहा है और **गुणातीतानंदस्वामी** की बातों में भी है कि

संगमरमर के पत्थर में से मूर्ति कोई भी बना सकता है, लेकिन संत की मूर्ति तो संत ही बना सकते हैं। वह अन्य कोई नहीं कर सकता। मूर्ति और शास्त्र में भगवान् विराजमान हैं और संत में भी भगवान् विराजमान रहते हैं। संत तो स्वयं हरि, संत को प्रभु की मूर्ति जानना, उसमें रक्तीभर फेर नहीं। योगी बापा के समय से गुरुजी के साथ रहना हुआ। हरिप्रसादस्वामी महाराज कहते थे कि भगवान् और संत को पहचानने के लिए आठ प्रकार की आँखें होती हैं। **एक आंख संत के हृदय में। दूसरी आँख को 'तारक'** कहते हैं कि संत की जिस पर दृष्टि पड़े, तो वो तर जाये। **तीसरी आँख** को श्रेय पुरुष कहा है कि जीव प्राणीमात्र का श्रेय करना हो, तो उसके लिये 'ज्ञान चक्षु' चाहिए। गुरुजी योगी बापा के कृपापात्र हैं...

जब गुरुजी को दीक्षा दी तब भी मैं साथ में था और हरिप्रसादस्वामी व प्रेमस्वामी को दीक्षा दी, तब भी मैं वहीं था। तब योगी बापा बोले थे कि **आज हरिप्रसादस्वामी को दीक्षा देकर मेरा भार कम हो गया। मुझे जो करना है, वो हरिप्रसादस्वामी करेंगे।** जिसके बड़े भाग्य होंगे, उसने दादर मंदिर में गुरुजी के जीवन का दर्शन किया होगा... योगी बापा उन्हें कई बार मक्कंद कह के बुलाते थे, उन्होंने गुरुजी को बहुत आशीर्वद दिया है। जैसे प्लास्टिक की कठपुतली को चाबी लगाओ और वह उड़ती है, वैसे गुरुजी आकाश में उड़ते थे। मेरा भाग्य कि गुरुजी का इतना सारा लाभ मिला है... 60-65 साल पहले जो कुछ भी दर्शन हुए, उसमें भी हमें आनंद था और आज जो

दर्शन हो रहा है उसमें भी आनंद है। कोई फ्रक्क नहीं कि आज गुरुजी खूब बड़े हो गये, उनकी मूर्ति पथराई जा रही है, पर सब बहुत अच्छा है। ये मूर्ति हमारे लिये सर्वश्रेष्ठ हैं। गुणातीत समाज में मेरे हृदय में जिनकी छाप पड़ी हो, तो वो हैं हरिप्रसादस्वामी



और दूसरे नंबर पर हमारे गुरुजी हैं। एक साथ दूसरे साथ के गुणगान गाये, यह कोई सामान्य बात नहीं। इसके लिये कृपा-आशीर्वाद चाहिए।

हरिप्रसादस्वामीजी के साथ रहने से जीवन जीने की चाबी मिली। एक दृष्टांत देता हूँ। एक भाई साहब ऑफिस से घर जल्दी आये, तो उनके पास ताले की चाबी नहीं थी। हथौड़ी से तोड़ने लगे कि इतने में बेटा आ गया। वह बोला पापा रुको, ये लो चाबी। उस चाबी से ताला खुला। तब ताले ने चाबी से कहा— हम गुरुभाई हैं, एक ही हैं। तो क्यों हथौड़ी से चोट लगाई? दो इंच की छोटी चाबी से ताला तुरंत खुल गया। क्योंकि चाबी ताले के दिल में गई थी। ऐसे ही यदि हमारे हृदय के ताले बंद पड़े हों या खराब हो गये हों, तो गुरुजी के पास उस ताले को खोलने की चाबी है। सो, उनका सेवन करके राजी कर लेना है। हमें तथ नहीं करना है कि हम तो सेवन करके राजी कर चुके हैं। इनके साथ रहते हुए भी कई गफलत रह जाती है। तो, इन्हें विवश नहीं करना। इन्हें हमारी ओर से ठंडक हो जाये, ऐसा जीवन जीना है। सिर्फ गुरुजी, गुरुजी, गुरुजी कह कर कूदते नहीं रहना। गुरुजी जैसे राजी हों, वैसे करना है... काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब ने खूब परिश्रम किया है, सो सिर्फ नाचना-कूदना नहीं है। स्वर्धमं युक्त जीवन जीने की चाबी गुरुजी के पास है, इन्हें राजी करना है। सत्संग में ऐसा जोग मिला है, तो बालक बुद्धि मत लगाना। प्रेमी हृदय से वेग में नहीं बहना। शिक्षापत्री के मुताबिक्त स्वर्धमं के लिये जीने की दृढ़ गांठ बांधना...

तत्पश्चात् हूबहू प.पू. गुरुजी का दर्शन कराते 'क्ले मॉडल' को तैयार करने वाले पू. अर्जुन वाजपेयीजी और संगमरमर की मूर्ति को रंग करने वाले पू. कमल शर्माजी को सम्मानित करते हुए हरिधाम के पू. संतस्वामीजी ने इन दोनों को हार अर्पण किया।

फिर प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी के उत्तराधिकारी एवं हरिधाम के वर्तमान अधिष्ठाता प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने आशीर्वाद दिया—

...हमने गुरुजी की मूर्ति पथराई, यह खूब मंगलकारी दिन है। खूब आनंद तो होगा ही, क्योंकि हम सब खूब भाग्यशाली हैं। साहेबदादा ने बताया कि शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने अपरंपार परिश्रम करके, हमें गुणातीतानंदस्वामी की पहचान करा के उपासना के मार्ग पर चलाया। इसी तरह काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी, अक्षरविहारीस्वामीजी इन सबके हमें इस मार्ग पर टिकाये रखा और शुद्ध उपासना करने की रीति-नीति सिखाई। इससे विशेष खूब भाग्यशाली हैं कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी

ने हमें गुरुजी की भेंट दी। स्वामीजी कहते कि संत हमारे लिये ध्याननीय स्वरूप हैं। हम सबको रोज सुबह, दोपहर, शाम गुरुजी को याद करना चाहिये, उनकी स्मृति करनी चाहिये। हमने कहाँ भगवान स्वामिनारायण या गुणातीतानंदस्वामी के दर्शन किये? कहाँ ने काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी के भी दर्शन नहीं किये होंगे। तो, दिल्ली में जिन्हें गुरुजी के साथ खूब प्रीति है, उन सभी को, हम सभी को गुरुजी की स्मृति के साथ भजन करना है।

मेरा भी बहुत बड़ा सद्भाग्य है कि काकाजी और स्वामीजी ने मुझे गुरुजी की सेवा में रखा। इनसे खूब सीखने को मिला। आज वो पहला दिन याद आता है। जब देहरादून एक्सप्रेस में 24 घंटे बाद वडोदरा से दिल्ली पहुँचे थे। पहले सामान उतार दिया था, फिर पता चला कि पुरानी दिल्ली जाना है, तो वापिस सामान ट्रेन में चढ़ाया। ये सब बातें करने के पीछे का कारण यह है कि उस समय गुरुजी की शारीरिक परिस्थिति-देह साथ नहीं दे पाता था। खूब बुद्धिशाली थे, पर काकाजी के वचन से उन्होंने सब झोल लिया। साधक के जीवन में यह बहुत बड़ी बात है। काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी की मरजी के मुताबिक वे जीये। तब कितनी कड़ाके की ठंड! स्टेशन पर उतर कर तांगे में बैठ कर हम ‘भारत साधु समाज’ के मकान पर गये। वहाँ जब उतरे, तो सब के पैर सुन्न हो गये थे। हमने इतनी ठंड कभी देखी नहीं थी। 1968 में दिसंबर महीने के पहले हफ्ते में हम यहाँ आये थे। **सोनाबा को ख्याल था कि ये बच्चे वहाँ क्या खायेंगे?** इसलिये मगज़, चिड़वा, गाठिया वगैरह इतना सारा नाश्ता भर कर दिया था। हमारे मन में तो ऐसा था कि इतने सारे सामान का क्या करेंगे? पर, जब दिल्ली उतरे तो ख्याल पड़ा कि बा ने अंतर्यामी रूप से हमें जो इतना सारा सामान दिया, वो अच्छा किया। गुरुजी का जीवन में देखा है। काकाजी और स्वामीजी की कृपा से इनके साथ इतनी आत्मीयता भी हो गई। पहले तो मन ‘ना’ बोल रहा था, क्योंकि गुरुजी बहुत बुद्धिशाली व चिकित्सक। थोड़ी-सी भी गलती हो, तो तुरंत सेवा से हटा दें कि तू मुझे नहीं चाहिए। ऐसे **कई प्रसंग बने, लेकिन स्वामीजी, काकाजी के आशीर्वाद से ऐसी दोस्ती हो गई कि हमारे विचार भी मिलने लगे।** गुरुजी के जीवन में यह देखा कि काकाजी ने एक बार ही कहा कि दिल्ली जाना है, तो गुरुजी ने कभी पूछा ही नहीं कि कौन केयर करेगा? काकाजी का



कितना भरोसा होगा! काकाजी ने भी यहाँ सब तैयार करवा रखा था। कोई सत्संगी तो था नहीं, लेकिन नवल बा का घर था। पर, उस घर में सब बहनें थीं, कोई पुरुष तो था नहीं। हम उनके यहाँ जाते, तो जो सेवक साथ जाता वही बातचीत कर लेता, ऐसी अवस्था थी। फिर भी गुरुजी को कभी काकाजी के प्रति मनुष्यभाव नहीं आया।

गुरुजी का पहले से स्वभाव था कि अकेले रहना इन्हें पसंद नहीं था। सोते समय आस-पास 5-10 जना होने चाहिएँ। कहीं भी जायें, तो पूरी मिलेंट्री इनके साथ होनी चाहिए, इसके अलावा वो जाते ही नहीं थे। लेकिन तब क्या करते? काकाजी का वचन था। काकाजी का एकदम विश्वास किया और उनके प्रति कभी मनुष्यभाव की बात मैंने इनके मुँह से सुनी नहीं। हमेशा महिमा और गुणगान! मुझे किसी ने कहा भी था कि सचेत रहना। लेकिन, स्वामीजी और काकाजी के आशीर्वाद से इनके साथ ऐसा लगाव हो गया कि इनकी हर बात मुझे पसंद आती थी, प्यारी लगती थी। काकाजी कहते थे कि वो दिन याद करो और ये दिन याद करो। सो, वो याद करें तो इन पुरुषों ने हमारा पूरा जीवन स्वप्न तुल्य कर दिया।

हमें लगता नहीं है कि हम इस सब में से गुज़रे हैं। बहुत भाग्यशाली हैं कि गुणातीत पुरुषों की गोद मिली है। कुछ नहीं करना है बस इनकी तरफ दृष्टि रख कर जीना है। स्वामीजी ने पहली बात बताई कि हमने कुछ नहीं किया है। केवल योगी बापा को निहारा है, इनके जीवन को देखा है। बापा कैसे बोलते हैं? कैसे व्यवहार करते हैं? वो सब देखा है। तो, योगीबापा ने अपने जैसा सुखी कर दिया। स्वामीजी ने दूसरी बात यह बताई थी कि भगवान् स्वामिनारायण, गुणातीत पुरुष और योगी बापा के जीवन में हम डूबे रहें और तीसरी बात बताई कि योगी बापा के अभिप्राय में हमने सहकार दिया है।

योगी बापा का अभिप्राय था युवा प्रवृत्ति तथा संप, सुहृदभाव और एकता। हमें ये संस्कार मिले हैं। हमें ये बातें पकड़े रख कर, गुरुजी की तरफ हमारी निगाह रखनी है। वे कैसे जीते हैं? इन्होंने क्या-क्या किया है? काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी का कैसा भरोसा किया है? इनकी कृपा से आज सबको गुरुजी के लिए इतना भाव हो गया है। इनकी साधक अवस्था का दर्शन करें, तो इनके जीवन से हमें बहुत कुछ मिला है।

साहेब दादा से प्रार्थना करनी है कि हम सब यहाँ बैठ कर, गुरुजी की स्मृति के साथ धुन करें, तो गुरुजी हमारी वो बात सुनें व आशीर्वाद दें। बस, आप



ऐसा गुरुजी से कहना। गुरुजी का संबंध जैसा काकाजी के साथ था, ऐसा सबका संबंध इनके साथ हो जाये। भगवान् ख्यामिनारायण के समय में तो पाँच मुक्त ही उनकी माला के मनके में आये, आज तो काकाजी, पप्पाजी, ख्यामीजी, साहेबजी, गुरुजी के परिश्रम से पूरा समाज ऐसा तैयार हुआ है। ऐसी कृपा हम सब पर बरसती रहे। ख्यामीजी ने कहा था कि हम योगी बापा के जीवन में डूबे रहें, उनकी तरफ देखते रहें और उनकी मरजी के अनुसार जीयें। ऐसे ही गुरुजी, काकाजी के जीवन में डूबे रहे, उनकी मरजी के अनुसार जीये, उन्हें जो परसंद था वैसा ही किया। तो, हम सब ऐसा किया करें, ऐसी कृपा-आशीर्वाद साहेब दादा और गुरुजी हम सब पर बरसायें, ऐसी प्रार्थना...

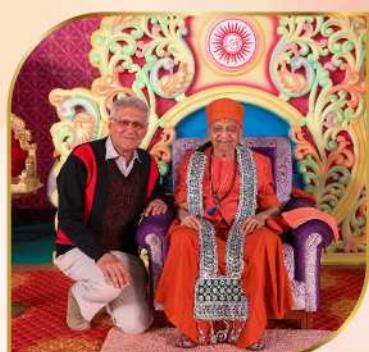
मूर्तिप्रतिष्ठा निमित्त हरिभक्तों के घर से आये व्यंजनों का अन्नकूट लगाया गया था। अतः थाल करने के बाद आरती संपन्न हुई। उत्सव में कितने मुक्त अलग-अलग सेवा में जुटे थे, फिर भी ऐसी भागदौड़ में भी जिन मुक्तों ने अपने साथ-सहकार से अन्नकूट की अच्छी व्यवस्था करी, उनकी सेवा प्रभु को पहुँची ही होगी। क्योंकि दिव्यता से भरा यह अवसर सभी को आनंदित कर रहा था।

अंत में श्री ठाकुरजी के सिहांसन के समक्ष सभी खरूपों ने एक पंक्ति में खड़े रह कर सबको अद्भुत स्मृति दी। इसी दौरान मूर्ति बनवाने के लिये पू. आशिष शाह ने शुलआत से लेकर आखिर तक जो सेवा की, उसकी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए संतभगवंत साहेबजी और प.पू. गुरुजी ने उसे हार पहनाया।

ख्यामिनारायण संप्रदाय में ‘सेवा’ को बहुत महत्त्व दिया गया है। क्योंकि यह एक माध्यम है कि जिसके द्वारा मुक्त न केवल प्रभु व उनके धारक संत से जुड़ते हैं, बल्कि हरिभक्त एक-दूजे के करीब आकर, सनातन धर्म के मूल संस्कार और विचारधारा—‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ को उजागर करते हैं। इसी का दर्शन इस सत्र के समापन पर हुआ, जब मंदिर के नज़दीक भारत नगर police station के S.H.O. पू. यशवंत यादवजी, प.पू. गुरुजी से कंठी पहनने के लिये आये। पिछले दस दिनों से अपने घर जाये बिना, पू. यशवंतजी अपने सहयोगियों के साथ ‘दिव्यधाम’ परिसर की सुरक्षा व्यवस्था में तैनात थे। इतने दिनों से मंदिर का वातावरण व अपनापन देख

कर उनमें भावना उत्पन्न हुई कि मैं भी इस दिव्य परिवार का सदस्य बन जाऊँ। सो, ऐसे शुभ दिन कंठी पहन कर वे ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करने तत्पर हुए। इनकी सेवा-भावना को सबने खूब सराहा...

25 दिसंबर सायं-साधु यर्ब की पूर्णाहुति...



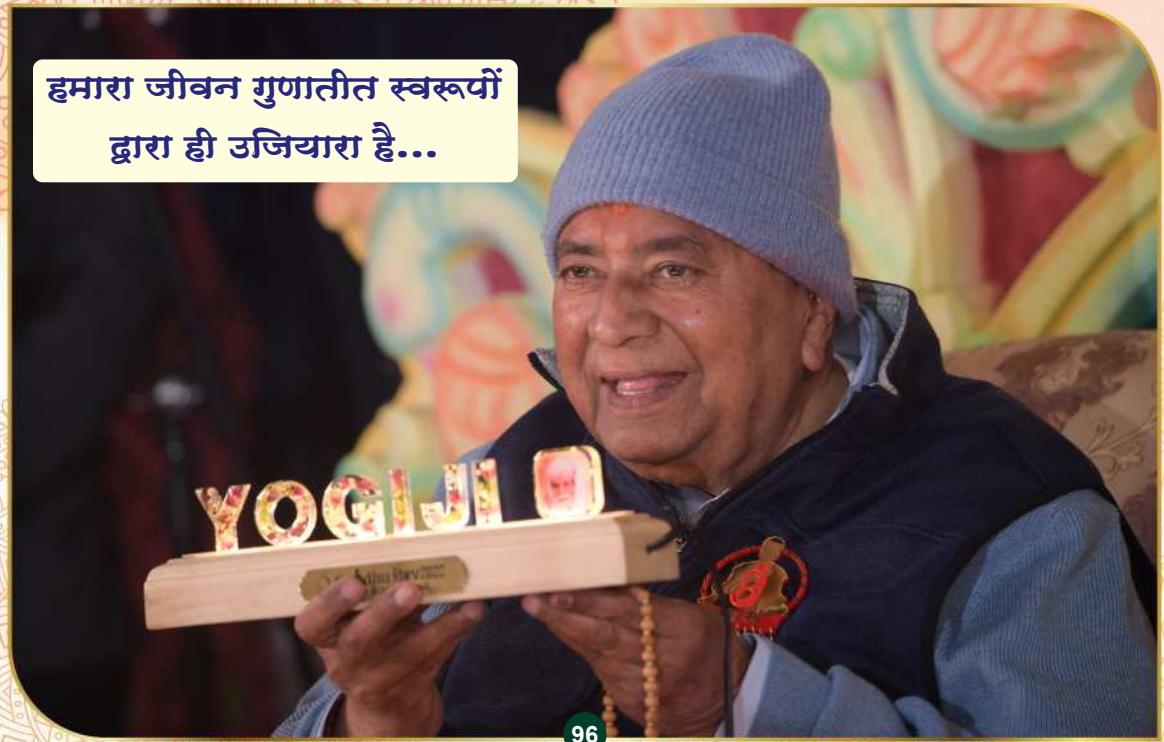
केन्द्रीय-सुकर्तीं द्वारा हार व स्मृति भेंट अर्पण...



साधु पर्व की दिव्य स्मृतियाँ...



हमारा जीवन गुणातीत स्वरूपों
द्वारा ही उजियारा है...



ਸਤਿਗੁਰ ਦੇ ਯੁਵਾਓਂ ਦੁਆਰਾ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਘੋੜੀ ਮੁੜੀ







25 दिसंबर की शाम तकरीबन 5:30 बजे तक सभी पंडाल में एकत्रित हो गये। 'साधु पर्व' की पूर्णाहुति के सत्र का शुभारंभ अनुपम मिशन के साधक भाई साधु राजुदासजी, साधु उत्पलदासजी एवं साधु मुकेशदासजी ने सद्गुरु साधु पू. मनोजदासजी द्वारा रचित भगवान ख्वामिनारायण के 108 नाम पर आधारित 'श्री अष्टोत्तरशत हरिनाम' स्तोत्र गाकर किया। इससे पूरा वातावरण दिव्यता से भर गया। इसी दौरान फूलों से सुसज्जित बैटरी कार में खरूपों ने पंडाल में प्रवेश किया। खरूपों के मंचस्थ होने के बाद पू. राकेशभाई, पू. हृदय वर्मा और पू. डॉ. दिव्यांग ने 'गुरुजी का संबंध अनगोल दिया है मुक्तों...' भजन प्रस्तुत किया। सत्संग के बच्चों में धार्मिक संस्कारों के बीज बोये जायें, इस भावना से प.पू. आनंदी दीदी का प्रयास होता है कि हमारे ग्रन्थों का बच्चे पठन करें। सो, उनकी आज्ञा से सर्वप्रथम पू. पुनीत मल्होत्रा के छोटे सुपुत्र पू. संबंध ने पाँच 'स्वामी की बातें' बोल कर खरूपों से आशीर्वाद प्राप्त किया।

तत्पश्चात् जिन्होंने दृढ़ प्रीति करके गुरुहरि पप्पाजी से पिता-पुत्र का दिव्य संबंध बनाया, ऐसे कृपा पात्र पू. दिलीपभाई भोजणी साहेब ने साधु पर्व वंदना की—

....मैं बहुत नसीबदार हूँ कि गुरुजी के 75वें, 80वें और आज 85वें प्रागट्यदिन पर आने का मौका मिला है। हर दफ़ा माहात्म्य गान-याचना करने का मौका मिला है। गुरुजी और हमारा संबंध बहुत पुराना है। 1991 में पप्पाजी दिल्ली थे, तो हम मल्कानी अंकल के फार्म हाउस पर पप्पाजी के बुलाने पर आये थे। तब मेरी फ्लाइट रात को 3 बजे आने वाली थी, तो पप्पाजी ने गुरुजी और मल्कानी अंकल से कहा कि मुझे मेरे बेटे दिलीप को एयरपोर्ट लेने जाना है। गुरुजी बोले मैं और मल्कानी उन्हें लेने जायेंगे। So that was my first darshan of Guruji at Delhi Airport. उसके बाद इनसे संबंध शुरू हुआ... हम ये फंक्शन में संबंध की जो बात कर रहे हैं, वो संबंध कैसे निभाना है? उसका कैसा रूप रखना है? वो तो कोई गुरुजी से सीखे और मैं कोई नई बात नहीं कर रहा हूँ। बहुत साल पहले लंडन से एक युप दूर करने यहाँ आया था, उसमें एक सत्संगी लालजीभाई कोटेजा का दिल्ली में देहान्त हो गया। पप्पाजी, गुरुजी के साथ कॉन्सटेन्टली फोन पर थे और पूछते कि अभी क्या हो रहा है? क्योंकि सरकारी कार्यवाही करके बांडी को लंडन भेजना था। गुरुजी, पप्पाजी को फोन पर तसल्ली दे रहे थे कि आप फ़िक्र न करो, मैं सब संभाल लूँगा और हर आधे-एक



100



घंटे पर आपको खबर देता रहूँगा। इतनी कँयर, अटेन्शन और माहात्म्य यहाँ दिखाई देता है। गुरुजी हमें जो गाझड कर रहे हैं, वो दिल्ली के सब भक्तों के दिलों में दिखाई दे रहा है... गुरुजी की *Personality* ऐसी है कि उनके पास बैठ कर आप कुछ बोलो नहीं और वे भी कुछ बोले नहीं, लेकिन उनका *spiritual bond, love and affection you can feel*. जैसे हम कहते हैं कि अद्वितीयता का सुख आयेगा, तो अद्वितीयता का सुख अनुभव कर सकते हैं। तो गुरुजी की *Presence* ही सुकून देती है... जब भी उनका दर्शन करता हूँ, तो उनकी आँखों में मेरे लिए प्रेम का मैं अनुभव कर सकता हूँ... यहाँ आने का दिल-मन करता है। हमारा यह ज्ञान है सब समझ नहीं सकते, लेकिन साधना करने के लिये गुरु से जुड़े रहना अनिवार्य है... गुरुजी मेरे प्रति आपके प्यार और लगाव मेरे दिल को छू जाता है। वह मेरे लिये निरंतर ही है। गुरुहरि से मेरी नम्र प्रार्थना है कि आप अपने हृदय में मुझे स्थान दें और मेरे जीवन की त्रुटियों को क्षमा करना। आज गुरुजी की स्तुति वंदना जो ज्ञाहिर की गई, उसमें सब कुछ आ जाता है। ... पप्पाजी मुझे कहते थे कि मैं आप सबके लिए प्रार्थना करता हूँ, वैसे जब भी गुरुजी की माला फिरती है, तो वे हम सबके लिए प्रार्थना करते हैं। उनके लिए ये सब संबंध वाले एक ही हैं, कोई अलग नहीं है... सब हारिभक्त अपनी-अपनी सेवा इतनी अच्छी तरह कर रहे हैं कि गुरुजी को कुछ कहना नहीं पड़ता। इनकी आँख के इशारे से सेवक तुरंत समझ कर वैसा करते हैं। अपनी बड़ी लेंगवेज से वे बहुत कुछ कहते हैं और गर्व की बात है कि सब सेवक-हारिभक्त उनकी सुनते हैं, उनकी आज्ञा में तल्लीन रहते हैं। स्वामिनारायण भगवान और सभी स्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना है कि हमें आपकी **वकादारी बख्तीश** में दे दो...

प.पू. दासस्वामीजी जिस सखाभाव से प.पू. गुरुजी से जुड़े हैं, उसका दर्शन करके कई बार सबने आनंद लिया है। उत्सव में आने के लिये उनकी आंतरिक इच्छा थी, लेकिन तबियत के कारण नहीं आ पाये। पर, अपने हृदय के भावों को उन्होंने ऑडियो द्वारा भेजा, जिसका सभी ने श्रवण किया। उसी का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करते हैं—

....सब वरिष्ठ गुणातीत स्वरूपों, संतवर्यों और उपरिथित गुणातीत समाज के मुक्तों के चरणों में खास और उनमें भी, मेरे बड़े भाई समान, मेरे गुरुदेव समान परम मित्र और परम सखा समान एकांतिक भवदीय परम पूज्य गुरुजी के श्री चरणों में धन्यवाद, प्रणाम सह जय स्वामिनारायण। शारीरिक स्वास्थ्य की मर्यादा के कारण में नहीं आ पाया, पर आपके पास ही हूँ। **स्वामीश्रीजीयोगीबापा, काकाश्री, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेब दादा** उनकी मरज़ी हो उतना और कम से कम शताब्दी पर्व तक आपको



सुचारू, प्रफुल्लित स्वास्थ्य दें, क्योंकि मुझे और हम सबको अभी गुरुजी की खूब जरूरत है... हम सबके मिलकर गुरुजी की संगमरमर की मूर्ति पथराई, तो मानो साधु पर्व के उत्सव में सोने पे सुहागा हुआ है... मेरी, आपकी, हम सबकी जिम्मेदारी अब खूब बढ़ जाती है, क्योंकि गुरुजी की संगमरमर की मूर्ति तो हमें मात्र दर्शन और सुख देगी, पर वो हमारी कोई कसौटी नहीं करेगी, इसलिए मरजी में मिटना सूत्र बहुत सुंदर है। इनकी रीति-नीति, रहन-सहन, आहार-विहार, क्रियायें, स्वभाव, निर्णय और शायद बिना कारण हमें डांटना या सूचन सबको खूब अच्छे लगने लगें। सहज ही अच्छे लगें और संपूर्ण रूप से पसंद आयें। इतना तो काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेबजी हमें मनवा दें और... किसी प्रकार का अंतराय न रहने से गुरुजी के संबंध वाले संतों, मुक्तों के स्वभाव जंचेंगे, तो काकाजी और गुरुजी हमें अपने जैसा ही सुखी बनायेंगे ही। हे प्रत्यक्ष स्वरूपों! हे गुरुजी! साधु पर्व पर मेरी और हम सबकी प्रार्थना अचूक स्वीकारना... तत्पश्चात् सांकरदा के पू. स्नेहलस्वामीजी ने मार्गदर्शन दिया—

...ये कल्पवृक्ष हैं, जो भी संकल्प करेंगे सिद्ध होगा... गुरुजी को 1956 में जब मैंने देखा, तो उनकी आँखें देख कर मुझे लगा कि ये मेरे पूर्व के कोई जबरदस्त पहचान वाले हैं। उनकी आँखों में बहुत अद्भुत तेज दिखता था...

जब ऐसे प्रत्यक्ष स्वरूप हों और हमें इनके प्रति निर्दोषभाव और दिव्यभाव दृढ़ हो जाये, तो हमारे भीतर की मूर्ति काम करती हो जाये। हरिप्रसादस्वामीजी, अद्वारविहारीस्वामीजी और गुरुजी, इन तीनों की निशा में हम 39 संत बुद्धि बंद करके, दृढ़ विश्वास से माया से लड़ कर रहे, उसमें से हमारे गुणातीत समाज में हम 15 संत अब रहे हैं। गुरुजी की मूर्ति स्थावर रूप में है और वे जंगम मंदिर हैं। इनमें अखंड निर्दोषभाव और दिव्यभाव होगा, तो ही वो मूर्ति काम करती दिखाई देगी। वे प्रगट तो हैं ही, पर निर्दोषभाव और दिव्यभाव रख कर प्रार्थना से उन्हें हम हमारे पास प्रत्यक्ष करते हो जायें...

पप्पाजी ने 1993 में कहा था कि जब ऐसे सत्पुरुषों के पास हम बैठें, तब उनमें से प्रवाहित होते माहात्म्य, दिव्यता, निर्दोषभाव, प्रभुत्व, दृढ़ विश्वास, श्रद्धा और निष्ठा को हम सजग होकर आत्मसात् करेंगे, तो सहजता से मिल जायेंगे... एक स्थिति ऐसी आती है कि जब हमारी इंद्रियों-अंतःकरण का रूपान्तर हो रहा होता है, तब हमें रोना आता है, लेकिन ऐसी क्षण में हमें काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी,



अक्षरविहारीस्वामीजी, साहेब, गुरुजी, दिनकर अंकल, भरतभाई, वशीभाई जैसे स्वरूपों की स्मृति में डूबना है। मैं भी निरंतर स्मृति में डूबा रहूँ और आपका कार्य करता हो जाऊँ, ऐसी मेरी प्रार्थना...

प.पू. गुरुजी के श्रीमुख से अक्सर सुना है कि युवा अवस्था में जब वे ताड़देव से जुड़े, तब से उन्हें मन में ऐसा कि गुणातीत स्वरूप के वचन हमेशा सत्य होते हैं। सो, उनका अवश्य पालन करना चाहिये। तो, जैसे ही विश्व में कोरोना आया, तभी प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी ने अपने एक आशीर्वचन में आज्ञा करी कि ‘बोल्या श्री हरी रे...’ पद का हमें रोज़ गान करना चाहिए। उनकी यह बात पकड़ कर, प.पू. गुरुजी ने उसी दिन से धुन के बाद यह गाने के लिये सबको कहा। उत्तरभारत में गुजराती भाषा सब समझ नहीं पाते कि उन्हीं दिनों हरिधाम से हिन्दी भाषा में यह प्रकाशित हुआ। तब उसमें प.पू. गुरुजी ने थोड़ा बदलाव करवा कर हिन्दी भाषियों के लिये सुगम किया। **गुरुहरि काकाजी महाराज** के समय के पंजाब के सत्संगी अक्षरनिवासी पू. जीवनलाल झांझी साहेब के नाती पू. देव ने यह पद गाकर अपनी भक्ति अदा की।

तत्पश्चात् हारविधि का कार्यक्रम आरंभ हुआ।

- * प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं कि महाराज ने गुणातीतानंदस्वामीजी को धरती पर लाकर आध्यात्मिक क्रांति कर दी कि ऐसे गुणातीत साधु द्वारा मैं धरा पर अखंड रहूँगा। गुणातीतानंदस्वामी का समाधि स्थल ‘अक्षरदेशी’ हमारे लिए तीर्थ समान व गुणातीत साधुता का प्रतीक है। सो, गुणातीत समाज के सभी मुक्तों की ओर से प.पू. गुरुजी को अर्पण करने वाले हार में **अक्षरज्योति** की बहनों ने ‘अक्षरदेशी’ के कटआउट के मध्य में गुणातीतानंदस्वामीजी की मूर्ति लगाई थी और... प्रार्थना करी थी कि हम सभी गुणातीतभाव वाले साधु बनें। दुबई निवासी पू. कपिलभाई ठक्कर ने प.पू. गुरुजी को यह हार अर्पण किया।
- * मुंबई मंडल की ओर से पू. डॉली दीदी द्वारा बनाया हार पू. ओ.पी. अग्रवालजी एवं पू. अभिषेक त्रिवेदीजी ने अर्पण किया।
- * पू. जनार्दनभाई मोन्डे परिवार की ओर से छोटे-छोटे 86 दिलों का हार, पू. चिराग मोन्डे एवं उनकी धर्मपत्नी पू. सपना, नाटक के पूर्वभ्यास के बाद देर रात को घर जाकर बनाते थे। पू. चिराग ने प.पू. गुरुजी से प्रार्थना की कि मंदिर में तो आपकी मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा हो गई है। अब हमारे हृदय में भी अपनी मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा कर दो, ताकि उसमें आपकी मूर्ति के सिवा कुछ न रहे। जब यह हार मोन्डे परिवार



प.पू. गुरुजी को अर्पण करने गया, तो उन्होंने संतभगवंत साहेबजी को यह अर्पण करने कहा। सो, संतभगवंत साहेबजी को हार अर्पण करने के बाद प.पू. गुरुजी ने पहना।

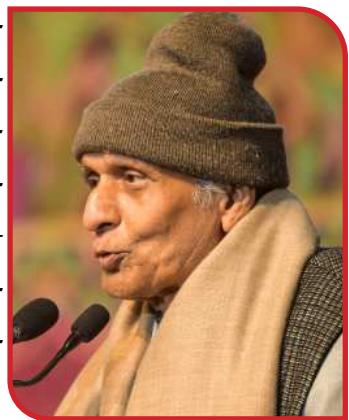
- * **हरिधाम** के संतों-मुक्तों की ओर से पू. संतवल्लभस्वामी ने हार अर्पण किया। भक्ति आश्रम की बहनों की ओर से पू. पावनभाई और पू. प्रशांतभाई हार अर्पण करने जा रहे थे कि प.पू. गुरुजी ने पहले प.पू. दिनकर अंकल को हार अर्पण करवाया और फिर स्वयं ग्रहण किया। इस हार के डिजाईन में पीछे की तरफ प्रार्थना के पाँच सूत्र लिखे थे।
- * **पवई मंदिर** के मुक्तों की ओर से प.पू. वशीभाई और प.पू. राजुभाई ठक्कर ने हार अर्पण किया।
- * **शिकागो मंडल** की ओर से पू. पंकजभाई और पू. किशोरभाई मार्टर्स ने हार अर्पण किया।
- * प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई और प.पू. राजूभाई ने 85 दिव्य स्मृतियों की एलबम अर्पण की। इसमें प.पू. गुरुजी की पुरानी स्मृतियाँ थी। जिसका शीर्षक था— "जुग जुग जियो गुरुजी प्यारे" और प्रत्येक पेज़ में स्वरूपों के साथ की मूर्ति के नीचे सूत्र लिखे थे।
- * **गुणातीत ज्योत** की ओर से पू. जीतुभाई चितलिया एवं पू. ऋषितभाई ने मोर की आकृति के झूले पर विराजमान गुरुहरि काकाजी की मूर्ति प.पू. गुरुजी को अर्पण करी। साथ ही प.पू. हंसादीदी द्वारा स्वयं खूब परिश्रम करके बनवाया गया 'परम कृपानिधि' ग्रंथ, पू. विरेन्द्रभाई एवं पू. हेमंतभाई मोदी ने प.पू. गुरुजी को अर्पण किया और पू. महेन्द्रभाई शाह एवं पू. अनूपभाई ने हार अर्पण किया। गुणातीत प्रकाश के भाइयों की ओर से पू. इलेशभाई और पू. अतुलभाई ने हार अर्पण किया। गुरुहरि पाप्याजी के लंदन परिवार की ओर से पू. दिलीपभाई भोजाणी ने हार अर्पण किया।
- * **अनुपम मिशन** की ओर से प.पू. हिम्मतस्वामीजी, सद्गुरु साधु पू. मनोजदासजी, साधु पू. रमेशदासजी एवं साधु पू. राजुदासजी ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया। साथ ही साधु पू. सतीशदासजी व साधु पू. उत्पलदासजी ने काष्ठ पर चित्रित मूर्ति अर्पण की, जिसमें मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की मूर्ति के साथ गुरुहरि योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. गुरुजी की मूर्ति चित्रित थी और प्रार्थना लिखी थी—

‘भक्तों की भक्ति में सहज खो जाएँ, आज मरज़ी में तेरी मिट जाएँ।’

बहनों के विभाग में पू. भाविशा बहन एवं पू. सीमा बहन ने प.पू. आंनदी दीदी को भी ऐसी मूर्ति अर्पित की। इसी दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय संघचालक और आर्थिक विचारक डॉ. बजरंगलाल गुप्ताजी आये। हार पहना कर उनका अभिवादन किया और उन्होंने संबोधन किया—



...गुरुजी का जीवन तो साधु जीवन का साक्षात् जीवंतं मूर्तिस्वरूप है। साधु क्या होता है, वो देखना हो तो गुरुजी के जीवन को देखने से ही स्मरण हो आता है। ये तो स्नेह के सागर हैं। जो इनसे एक बार मिलता है, उसे ये अपने स्नेह की छाया में समेट लेते हैं। अन्नकूट के उत्सव में पहली बार इनके दर्शन करने का सौभाग्य मुझे मिला। दर्शन मात्र से उन्होंने मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति पर स्नेह की जो वर्षा की, उसे मैं आजन्म नहीं भूल सकता हूँ।



...साधु समन्वय-समभाव का नाम है। हर प्रकार की परिस्थिति में जो अपने मन, व्यवहार और जीवन को समभाव से देखता हो, वही वास्तव में साधु है। ...मुझे ऐसा लगता है कि गुरुजी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में ये जो 'साधु पर्व' के नाम से आयोजन हो रहा है, वह सर्वथा सार्थक है। इस अवसर पर गुरुजी को शुभकामना और बधाई देने का सामर्थ्य तो मेरा नहीं है। मैं तो उनके चरणों में प्रार्थना ही कर सकता हूँ कि वे अधिक लंबे समय तक हम सब पर अपना आशीर्वाद बनाये रखें।

27 दिसंबर को प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी का प्राकट्य दिन भी नज़दीक था, सो ऐसे अनमोल अवसर पर सारे गुणातीत समाज की भावना व्यक्त करते हुए पू. सुहृदस्वामीजी एवं सेवक पू. विश्वास ने उन्हें हार अर्पण किया। पर्व ई मंदिर की ओर से पू. गिरीशभाई पटेल और पू. दीपकभाई जागीरदार, भक्ति आश्रम की बहनों की ओर से पू. रेवनदासभाई व पू. कल्पेशभाई, गुणातीत ज्योत की ओर से पू. महेन्द्रभाई शाह तथा पू. हेमंतभाई मोदी ने हार अर्पण किया।

प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के प्राकट्य पर्व के उपलक्ष्य में पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा ने उनका भजन— 'जिनकी निष्ठा प्रत्यक्ष में सर्वोपरि...' प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् दिल्ली मंदिर से जुड़े आत्मीय डॉ. कमल दुरेजाजी को संतों-भक्तों की आत्मीयता से की गई चिकित्सा सेवा के लिये सम्मानित किया गया और फिर... 'स्वर्ण स्वर भाग 16' एवं 'साधगो हृदयं मम' नृत्य नाटिका के भजनों का एप पर अनावरण करके प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने आशीष वर्षा की—

...हम गुरुजी का जन्मदिन मना रहे हैं। गुरुजी ने योगीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज, स्वामीजी महाराज का ऐसा सेवन किया है कि उनकी किसी भी क्रिया में कभी भी अपनी बुद्धि नहीं लगाई। केवल विश्वास ही रखा, जबकि इनका अंग तो बुद्धि का है, फिर भी कभी बुद्धि नहीं लगाई। गुरुजी का बापा के साथ एक

संबंध अनोखा था। जब-जब योगीजी महाराज मुंबई आते थे, तो गुरुजी उनके कमरे में सुबह साढ़े चार बजे पहुँच जाते थे। वहाँ बैठ कर भजन करते और कई बार अपना मन खुला करके, निष्कपटभाव से बापा से सब बात कर लेते थे। ऐसे ही काकाजी से भी करते थे। तात्पर्य यह है कि यदि हमें इनका जन्मदिन मनाना है, तो हमें अपने जीवन में ऐसा करना ही होगा। ये निष्कपट रहे और वचन में विश्वास रखा तथा बुद्धि बंद करके संबंध वालों की सेवा की। ये बात हम अपने जीवन में लायें कि गुरुजी, साहेब दादा, दिनकरभाई जैसे सत्पुरुषों के पास निष्कपट रहें और अपनी बुद्धि नहीं लगायें। स्वामीजी कहते थे कि जो जितना सरल है, उतना ही सुखी है। तो, गुरुजी के जीवन में हर पल ऐसा देखा है कि वो काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी के पास बहुत सरल रहे हैं। हमें भी ऐसे गुणातीत पुरुषों के पास ऐसा ही सरल रहना है... काकाजी ने इन्हें कहा था कि आपको दिल्ली जाना है। तब मैं इनकी सेवा में था। मैंने देखा है कि इनका शरीर साथ नहीं दे रहा था, फिर भी इन्होंने अपने देह के प्रति कभी भी लगाव नहीं रखा। इनके जीवन में जो भी प्रसंग आये, उन सब में योगीजी महाराज और काकाजी महाराज का दर्शन किया, तो उन्होंने इन्हें देहाभिमान से परे कर दिया। काकाजी ने हमें आज गुणातीतभाव वाला ऐसा एक स्वरूप दिया है कि जिनके पास हम अपने मन की बात करेंगे, तो मैं विश्वास से कहता हूँ कि हमारा मन पवित्र हो जायेगा। मन में रहे हुए हठ, मान, ईर्ष्या के भाव टल जायेंगे। अक्षरभुवन में तो बहुत शरारती थे। लेकिन यदि शरारत करनी होती थी, तो वो महंतस्वामी के पास जाकर बात कर लेते थे। यह बहुत बड़ी बात है, कभी कपट नहीं रखा है। जहाँ भी रहे, वहाँ अपने गुरुजनों के पास वे बहुत वफादारी से रहे हैं। हमें ऐसी वफादारी से गुरुजी और गुणातीत पुरुषों के पास रहना है। जब तक ये नहीं होंगा, तब तक शायद साथ के कपड़े पहने होंगे, फिर भी कोई अर्थ नहीं रहेगा...

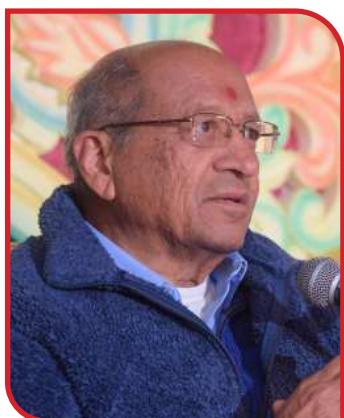
आज तो आशीर्वाद लेने और प्रार्थना करने का दिन है। सब गुणातीत स्वरूपों के चरणों में इतनी प्रार्थना करनी है कि हमें योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी और साहेबजी ने जो बात कही है कि एवर पॉजिटिव नेवर नेगेटिव। तो, कहीं भी कुछ हो, तो हम पॉजिटिव रह सकें। कुछ भी हो हम गुणग्राही बनें और हमारी दृष्टि संबंध गती हो जाये। कुछ भी हो हम दो हाथ जोड़ कर दास के दास बन जायें। स्वामीजी



महाराज यहीं बात हमेशा करते थे... ये दासत्व और पॉजिटिविटी हम सबके जीवन में आये। संबंध की दृष्टि से गुरुजी सब के पास पिघल जाते हैं, साहेब दादा संबंध वाले में अपने आपको खो देते हैं। हमारा ऐसा संबंध इन गुणातीत पुरुषों के पास हो जाये, ऐसी कृपा बरसायें... ऐसा बुद्धियोग हमें प्राप्त हो कि हमारी दृष्टि केवल हमारे रूप और हमारी आत्मा की ओर रहे। अर्थात् हमारा जीवन स्वरूपलक्षी बना रहे, ऐसी प्रार्थना के साथ सबको जय स्वामिनारायण।

तदोपरांत पूर्व निगम पार्षद पू. मंजू खण्डेलवालजी, जिन्होंने मंदिर के कई कार्यों के लिये अपना सहयोग दिया, उनका प.पू. आनंदी दीदी ने हार व स्मृति भेंट से अभिवादन किया।

हम अपने गुरु से ऐसी प्रीति-भक्ति करें कि दिन-रात उनके नाम की स्मृति रहा करे और हम कभी न भूलें कि हमारा जीवन स्वरूपों से ही उजियारा है। ऐसी भावना के साथ पू. परछाई दीदी के साथ पू. कीर्ति वर्मा, पू. नेहा अग्रवाल एवं कई मुक्तों ने 'ऐसीन आर्ट' से गुणातीत स्वरूपों के नाम के लैम्प बनाये थे, सो सर्वप्रथम संतभगवंत साहेबजी को उनके गुरुदेव 'योगीजी' के नाम का लैम्प अर्पित करके प्रार्थना की। तत्पश्चात् प.पू. दिनकर अंकल ने आशीर्वाद दिया—



...साधु पर्व यानि गुरुजी के 85वें बर्थ डे की 72 घंटे की बहुत बड़ी भाव समाधि। सुबह गुरुजी की स्तुति वंदना सुनी। करीब 10 साल पहले मैं यहाँ आया था, तब आनंदी दीदी प्रार्थना कर रही थीं कि गुरुजी अपनी स्तुति गाने नहीं देते हैं...

मुक्तों के सुख-दुःख के भागी, कुटुंबभाव जगाते जो, लुभावनी मूर्ति तो तेरी, मोह जगत का मिटावे जो। गुरुभक्ति अकूठी तेरी, प्रत्यक्ष करे काकाजी को, रीति-नीति अनोखी जाकी, 'गुरुजी' को वंदन अहो!!

इस श्लोक में गुरुजी का प्रेम, उनकी एलीवेटिड डिवाइन अंडररॉडिंग दिखाई देती है। साधु और साधुता की ये समझदारी वे हमारे अंदर देना चाहते हैं। वचनामृत गढ़ा प्रथम 44 में स्वामिनारायण भगवान ने कहा है— साधु होना और साधुता आना बहुत कठिन है। इसलिए देह और देह के संबंधी में से अहं-ममत्व का त्याग करके; अपनी आत्मा को ब्रह्मरूप मान कर, सारी वासनाओं का त्याग करके स्वधर्म में रह कर, जो भगवान

का भजन करे वो साधु कहलाता है। जिसमें ऐसी साधुता आई, वो पुरुषोत्तम भगवान से तनिक भी दूर नहीं है। तो, ब्रह्मरूप होकर अपनी आत्मा को ब्रह्मरूप मानकर परब्रह्म की भक्ति करना।



...सबको ये साधुता सीखनी है और साधु बनना है... आज ऐसे ही साधु प्रेमस्वरूपस्वामीजी का भी प्रागट्य दिन भी मना रहे हैं। पिछले साल प्रेमस्वरूपस्वामीजी का भी श्लोक दिल्ली में गुरुजी और साहेब दादा ने बनवा कर गवाया था।

योगीजी महाराज के स्वरूप में निरखे श्रीजी-स्वामी को।

सेर्ये दादुकाकाजी व परम गुरुहरि स्वामी को॥

सुहृद दासत्वसुमन महकते आत्मीय सब के सरल।

स्वामी प्रेमस्वरूपदास वंदन भवितहृदय है सजल॥

आज दो साधु स्वरूपों का गुणगान कर रहे हैं... हमारे अंदर साधुता है, पर उसे फैलाना है और उसकी रक्षा करनी है। हम जहाँ हैं, वहाँ से हमें आगे बढ़ना होगा...

योगीबापा ने कहा था कि बहनें भी भगवान भजें, उसमें क्या हरज़ है? उनकी आज्ञा से काकाजी ने एक नया चेप्टर शुरू किया। तो, सोनाबा, शांता बहन, हंसा दीदी, ज्योति बहन, तारा बहन, देवी बहन, आंनदी दीदी, माधुरी बहन और अन्य साधु स्वरूप बहनों से आशीर्वाद प्राप्त कर रहे हैं। उनके द्वारा साधुता प्रसर रही है...

गुरुजी का एक प्रसंग मुझे खूब टच कर गया था। करीब 20 साल पहले हम दिल्ली आये थे। गुरुजी के कमरे में मैंने काकाजी की एक अच्छी मूर्ति देखी। मुझे ऐसा लगा कि काकाजी साक्षात् बैठे हैं। मैंने गुरुजी से सहज ही कहा कि मूर्ति बहुत अच्छी है। 5-10 दिन के बाद जब मैं अमेरिका जा रहा था, तो गुरुजी खुद एयरपोर्ट पर आये और एयरपोर्ट के अंदर जाते समय गुरुजी ने एक बड़ा पैकेट दिया और बोले कि यह आपको साथ में ले जाना है। मैं तो खुश हो गया, लेकिन तब खोल नहीं सकते थे। सो, वॉकीगन-शिकागो जाकर जब पैकेट खोला, तो काकाजी की वही मूर्ति थी, जो दिल्ली में देखी थी। गुरुजी ने प्यार से मुझे वह दे दी।

...गुरुजी कई तरह से हमारे दिल में बैठते हैं। वे भगवान रखे हुए पुरुष हैं... काकाजी ने गुरुजी से कहा था कि वे भगवान स्वामिनारायण के समय में उत्तर भारत के आनंदानंदस्वामी थे। तो, योगीजी महाराज ने मुझे प्रेरणा दी है कि उत्तर भारत में जो चेतनाएं आपके साथ जुड़ी हुई हैं, उन्हें आगे ले जाने के लिये आप दिल्ली जाओ। आज देखते हैं कि कितने हरिभक्त गुरुजी के साथ सेवा में हैं। गुरुजी के प्रति दिव्यभाव रखते हैं... गुरुजी के चरणों में सब की तरफ से प्रार्थना है कि आप हमें ऐसा साधु बनाओ कि जिससे योगीजी महाराज, काकाजी, साहेब दादा, आप और सब गुणातीत स्वरूप राजी हो जायें... **रॉकेट की स्पीड से समझदारी दो, यही प्रार्थना।**



28 दिसंबर को सांकरदा के पू. स्नेहलस्वामीजी का 80वाँ प्राकट्य दिन होने के निमित्त, पू. सुहृदस्वामीजी ने सभी की ओर से उन्हें हार अर्पण किया। पू. रवि गुप्ताजी के संपर्क से मॉडिफिट के अध्यक्ष पू. सोनूजी खूब भवितभाव से प.पू. गुरुजी के शूज-सैंडल बनवाने की सेवा करते हैं, उनका स्वागत पू. पुनीत गोयलजी ने हार पहना कर किया। इसी प्रकार, मंदिर से करीब से जुड़े म्यूजिक कम्पोजर पू. रतन प्रसन्नाजी को उनकी सेवा के लिये सेवक पू. विश्वास ने हार पहनाया।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद दिया —



...आज सुबह मूर्ति प्रतिष्ठा हुई, आर्टिस्ट ने वाक़ई बहुत परफेक्ट मूर्ति बनाई है। हरेक के मुँह से निकल गया—सरस छे (अच्छी है)... मुझे विचार आया था कि मूर्ति में वाक़ई सरसता होगी, तभी हरेक को सरस (अच्छी) लगती है। स्वामीजी के उत्तराधिकारी के रूप में, स्वामीजी की जगह पर हरिधाम के आधिष्ठाता के रूप में प्रेमस्वामी को यहाँ पर बिठाया है। तो, मन में एक ही प्रार्थना निकलती है कि सबने मूर्ति में जो सरसता बताई, वो मंदिर में आते सभी भक्तों को सहज ही सुलभ हो। जिसके फलस्वरूप संपर्क में आने वाले सभी को एक अनुभूति हो।

जो काकाजी-पप्पाजी के संपर्क में जो आये होंगे, उन्होंने उनमें ऐसी सरसता-सरलता देखी होगी। एक बार सुबह दस बजे पप्पाजी के साथ मैं और मल्कानी अंकल के बिजवासन फार्म हाउस में बैठे हुए थे। सेवक ने पप्पाजी को एक गिलास दिया, जिसमें मेरे ख्वाल से ज्यूस था। पप्पाजी वो ग्लास होठों तक ले गए थे कि तभी दूसरे सेवक ने कहा कि अरे! पप्पाजी अभी नहीं पीना है। पप्पाजी ने तुरंत वो ग्लास होठों से हटा दिया और हटाते-हटाते मेरी तरफ सार्केस्टिक नज़र से देखा। तब कोई बात नहीं हुई, लेकिन मेरे मन में विचार आया कि पप्पाजी ने मेरी तरफ ऐसे क्यों देखा होगा? जैसे ही पप्पाजी अंदर गये और खाना बैठे हुए खाकर दोपहर को आराम करने जा रहे थे कि मैंने उनसे पूछा—**पप्पा, आप मुझे क्यों देख रहे थे?**

पप्पाजी बोले— अच्छा किया कि तूने मुझे पूछा। यदि यही ग्लास तेरे पास होता और तू पी रहा होता, तब कोई सेवक एकदम कहता कि अभी रहने दो। तो तू क्या करता?

मैंने बोला— मुझे उसके कहने से पता लग जाता कि ये वापिस ले जायेगा, मैं जल्दी से पी लेता।



पर्याजी ने कहा— देख, स्वरूपों के पास तो सब सरल वर्तते हैं, पर सेवकों के पास जो सरल वर्ते, वो सच्चा स्वरूप।

हम पर्याजी, काकाजी, स्वामीजी, साहेबजी, प्रेमस्वरूपस्वामी, भरतभाई, वशीभाई को देखते हैं कि जिसमें सेवक भी समाविष्ट हैं, वे हर एक के पास सरल वर्तते हैं। उनका प्रोग्राम कितना भी बदल दें, पर वे ज़रा भी इरीटेट या डिस्टर्ब हुए दिखाई नहीं देते। इसी तरह मैं एडजेस्ट तो हो जाता हूँ, पर वो एडजेस्टमेंट मेरे मन को इरीटेट कर जाता है। जो लोग इस तकलीफ में से गुजरते होंगे, उन्हें इस बात का ख्याल आयेगा।

तो, आज जब सरसता की बात हुई, तो सरसता के भी कई लेवल हैं। सरसता की बात सुनकर भीतर में तनिक भी गुदगुदी न हो, जिसे कहते हैं न कि हम साक्षीभाव से सुन पायें। ऐसे साक्षीभाव को स्थितप्रज्ञता कहते हैं। गुण की स्थितप्रज्ञता नहीं, वो तो है ही है। काकाजी जैसे बताते थे—गुण का स्थितप्रज्ञ और स्वरूप का स्थितप्रज्ञ। हमारे माने हुए स्वरूप के अंदर वो स्थितप्रज्ञता हम देखें-निहारें और हम में ऐसी स्थितप्रज्ञता हमेशा रहे, इसके लिए प्रार्थना करें। यही सच्चे बड़े पुरुष के साथ का संबंध बोला जाये। तो, साहेब, स्वामी स्वरूप प्रेमस्वरूप, काकाजी स्वरूप भरतभाई बैठे हैं, सब हम पर ऐसे आशीर्वाद बरसायें कि पूरे समाज के अंदर सामूहिक रूप में ऐसी स्थितप्रज्ञता आये और आपस का प्रेम बना रहे। जिससे कि हम जहाँ हैं, वहाँ अक्षररूप बनकर सामने वाले मुक्त को भी भगवान का स्वरूप-अक्षररूप मानें, ऐसा हमारा तंत्र बन जाये—यही प्रार्थना...

संतभगवंत साहेबजी ने आशीष वर्षा की—

...गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बात में बताया है कि कार्य देख करके उसके रचयिता का माहात्म्य समझा जाता है। दिल्ली या पंजाब से कोई भी मंदिर में आये और बाह्यरूप से देखे तो मंदिर बहुत बड़ा है व परिसर बहुत अच्छा है। यहाँ हर रोज़ मजन-कीर्तन, गुणगान, महिमा, कथा-गार्ता और भक्तों की सेवा के बिना कुछ है ही नहीं। इसलिए परिसर में ज़रा भी नकारात्मक भाव नहीं है, संपूर्ण दिव्यभाव से भरा हुआ है। कोई भी नया पहली बार आये, तो उसे वाङ्ब्रेशन्स फील हो जाते हैं कि यहाँ कुछ अच्छा लगता है। फिर धीरे-धीरे सबका भवितमय व्यवहार देख कर उसे अच्छा लगता है। जगत में किसी बिल्डिंग को बाह्यरूप से देख कर लोग उसकी तारीफ करते हैं कि मकान खूब अच्छा व सुंदर है। कोई उससे एक टेप आगे का सोचेगा, तो कहेगा कि मकान इतना बढ़िया है, तो इसका आर्किटेक्ट कौन होगा? ऐसे मंदिर की इतनी सुंदर वाङ्ब्रेशन्स हैं, दिव्यता स्पर्श होती है। भक्तों,



संतों के मुख पर जो भक्तिभाव और निरपेक्षभाव की सेवा दिखती है, तो ये समाज तैयार करने वाला कौन होगा? वो साधु! वो हैं गुरुजी!! कल सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रदीपजी, वेदकुमारी और सब आर्टिस्ट ने बहुत अच्छा प्रोग्राम किया। महाराज और गुणातीत इस ब्रह्मांड में एक संकल्प लेकर आये। भगवान का धाम गुणातीत है और सबको गुणातीत करना है। ये परंपरा जारी रखने के लिए भगतजी महाराज, जागारवामी, कृष्णजी अदा आये। उनके बाद शाखीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादरवामी, सोनाबा सबका दर्शन हुआ और इन सबकी कृपा से गुरुजी का भी दर्शन हुआ। जिससे सब भगवान के संबंध में आये, भगवान प्रगट हैं ये जाना और उनके साथ आत्मबुद्धि-प्रीति हुई। फिर द्रांसफार्मेशन होता है। हम अनादि के तो हैं ही, लेकिन माता-पिता की ओर से मिली देह को गुणातीतभाव में रहने की ट्रेनिंग मिलती है, जिसे हम साधना कहते हैं। तो, बॉम्बे में दिलीप (गुरुजी) का प्रागट्य हुआ और वो बा, काका, कांतिकाका, पप्पाजी के जोग में आकर बहुत हेत-प्रेम से जुड़ गये। बा की आज्ञा से योगीजी महाराज की सेना में जुड़ कर साधु मुकुंदजीवनदासजी बने और फिर 1966 में सोखड़ा आये। यहाँ से सांकरदा और वहाँ से काकाजी की आज्ञा से दिल्ली में आये। योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, महंतरवामी, हरिप्रसादरवामी की प्रसन्नता पाकर कार्य किया। उन्हें अंतर्यामी-प्रगट मानकर, उनकी आज्ञा में वे जीये, कोई फरियाद या मांग नहीं की। बस जो आज्ञा मिली, वही करते रहे। जिसका साथ मिला, उसका साथ लेते रहे।

जीवन में साधना-तपस्या की, तो दिलीप से गुरुजी बने और अब ब्रह्मरवर्णप साधु अवस्था के रूप में हमें भेंट रूप मिले हैं, ऐसे दर्शन का हमें लाभ हुआ। इनके द्वारा भगवान प्रगट हैं। गुणातीतानंदरवामी बोले हैं कि साधु होना और साधुता सीखनी। साधुता सीखनी मतलब? दीक्षा लेकर दादर मंदिर में गुरुजी ने जो साधना की और फिर सांकरदा, सोखड़ा तथा अब दिल्ली में रह रहे हैं। कल कल्वरल प्रोग्राम में थोड़ा-सा देखने को मिला, पर सबने बहुत सही रूप में दिखाया। यही हम सबको करना है।

गुरुजी को काकाजी के प्रति असाधारण प्रेम था। मैंने भी देखा है कि काकाजी को सबके प्रति प्रेम था, पर गुरुजी के प्रति स्पेशल प्रेम था। गुरुजी के साथ संवाद, चर्चा या वार्तालाप करते। कई दफ़ा मुझे भी हाजिर रहने का सौभाग्य मिला, तब ख्याल



पढ़ा कि काकाजी की गुरुजी पर स्पेशल कृपा थी। ऐसे ही काकाजी को अपने गुरु शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज के प्रति खूब लगाव व प्रेम था। गुलजारीलाल नंदाजी जब 1952 में जगहरलाल बेहरा की केबिनेट मिनिस्टरी में मिनिस्टर होकर बॉम्बे से विदाई ले रहे थे, तब शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति भेंट दी थी और कहा था कि दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम का मंदिर बनाओ। उस समय काकाजी वहाँ हाजिर थे। सो, काकाजी को भीतर में था कि मेरे गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज की इच्छा है कि दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम का मंदिर बनाना है। शास्त्रीजी महाराज का जीवन चरित्र सबने पढ़ा होगा। वे स्वयं प्रभु के स्वरूप थे और गुणातीतभाव में रहते थे। उन्होंने बताया कि ट्रांसफार्मेशन के लिए जीवभाव में से बाहर निकल कर, अखंड ब्रह्मभाव व गुणातीतभाव में रहने के लिए उपासना शुरू चाहिए। अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के लिए वे साधु बने थे। एक जगह वे बोले भी हैं कि मेरा जन्म अक्षरपुरुषोत्तम का मंदिर बनाने के लिये ही है। तो देखो शास्त्रीजी महाराज की इच्छा पूरी करने के लिये काकाजी ने गुरुजी को निमित्त बनाया। 4-5 साल तक तो दिल्ली में कोई भगत ही नहीं आता था। फिर भी काकाजी की आज्ञा से शास्त्रीजी महाराज के संकल्प को पूरा करने गुरुजी ने अपना जीवन समर्पित कर दिया और महाराज, गुणातीत, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी की पूर्ण प्रसन्नता के पात्र बनकर, गुरुजी ब्रह्मस्वरूप अवस्था में हम सबको साधुरूप मिल गये। साधु यानि जो अपना पूरा अस्तित्व अपने प्रभु और गुरु में विसर्जित कर दे। जीरोनेस, शून्यता, अहंकार रहित जो हो, वो असली साधु। फिर वो भगवान का काम करने वाला यंत्र बन जाता है। इसलिए महाराज ने कहा है कि मैं मूर्ति, साधु और शास्त्र, इन तीन प्रकार से प्रगट हूँ। आज गुरुजी की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा से यह काम हो गया। सचमुच, यहाँ के संतों, संत बहनों, भक्तों के खूब भाव की बदौलत ये कार्य हुआ। प्रेमस्वामी, निर्मलस्वामी, अश्विनभाई, शांतिभाई, भरतभाई, दिनकरभाई सबने मिलकर पूजन किया और आरती उतारी। दिल्ली वासियों के लिए बहुत बड़ा कार्य हुआ है।

हम सब जो यहाँ बैठे हैं, सबके पास मोबाइल है। यहाँ से जब उठेंगे, तो यदि अपना कोई साथीदार आगे-पीछे हो जायेगा, तो उसका कोई हरज़ नहीं होगा। लेकिन अपने मोबाइल को ढूँढ़ते ही रहते हैं कि वो कहीं इधर-उधर न हो जाये। मोबाइल तो ज़ड़ इन्स्ट्रूमेंट है। उसे एक थप्पड़ लगाओगे, तो चिल्लाएगा नहीं। ठंडी में वो कहेगा नहीं कि मुझे स्वेटर पहनाओ। फिर भी इस ज़ड़ वस्तु की हम कितनी देखभाल करते हैं। क्योंकि कम्युनिकेशन का बेस्ट इन्स्ट्रूमेंट है। किसी से कहीं भी बात करनी हो, तो



आसानी से हो जाती है। इसी तरह पंचधातु या संगमरमर की मूर्ति दिखाई देती है, लेकिन प्रभु के साथ-गुरुजी के साथ बात करने का ये बेस्ट माध्यम है। गुरुजी के पास कई लोग बात नहीं कर पाते, बहनें तो उनके पास जा ही नहीं सकती। लेकिन, वे मूर्ति के सामने बैठकर, संकल्प करके प्रार्थना करेंगे, तो गुरुजी अवश्य सुनेंगे, सुनेंगे, सुनेंगे ही; क्योंकि वे खुद नहीं हैं, उनमें प्रभु हैं और प्रभु सर्वत्र हैं, सत्य बात सुनते हैं। ऐसा एक अद्भुत कार्य हुआ है। यह सामान्य मूर्ति नहीं है। गुरुजी इस मूर्ति के द्वारा हमारे सामने प्रगट हैं। ये भाव रखकर मूर्ति के सामने प्रार्थना भजन करना। **अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की जो मूर्ति है, इनके द्वारा वे हमें प्रगट मिले हैं।** हम प्रगट के उपासक हैं। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वालों के लिए ऊंचा से ऊंचा साधन साधु का है। जिसके आगे ऐश्वर्य, प्रताप, रिष्टि-सिष्टि, चमत्कार का कोई स्थान नहीं। जैसे माउण्ट एवरेस्ट की ऊंचाई के लिये कहा जाता है, वैसे ही आध्यात्मिक मार्ग में साधु के अनंत गुण के आगे कोई ऊंचा है ही नहीं। हंसा दीदी द्वारा बनवाये गये भजन में कल गुरुजी की साधुता के गुण का दर्शन हुआ। हमारे मनोजभाई ने भी 'साधु रे साधु' भजन बनाया है, जिसमें साधु के हरेक गुणों का अच्छा दर्शन करवाया है। इन सभी गुणों का दर्शन हम गुरुजी में कर सकते हैं। ऐसे साधु के साथ हमें रहने, खाने, सोने और उनकी सेवा करने का मौका मिला, वो हम पर प्रभु की कृपा कही जाये। **निष्कपटभाव से मैं बोलूँ तो गुरुजी मुझसे बहुत बड़े हैं, बहुत बड़े हैं।** फिर भी हम सबको मान-सम्मान देकर आगे ही रखते हैं। वे दासत्वभाव का दर्शन करवाते हैं, जो साधुता में शिरमौर गुण के समान है। अपना कोई भाव ही नहीं है, मैं हूँ ही नहीं बल्कि सब हैं, ऐसे भाव से जीते हैं। चाहे आप गुरुजी कहो या कुछ कहो, पर वे हमेशा प्रभु के भाव में रहते हैं और दूसरों को ही आगे करते हैं। मैं कुछ नहीं, दासत्व भक्ति के श्रेष्ठ गुण का दर्शन हमें गुरुजी में होता है। **दादुकाका जिस सर्वदेशीयता की बात करते थे, वो भाव इसी कारण यहाँ के समाज में आमतौर पर प्रगट हो रहा है।** आज सब जगह सर्वदेशीयता खूब चल रही है। पर, मैं कई बार कहता हूँ कि दिल्ली और माणावदर सर्वदेशीयता के लिए सचमुच आदर्श रूप सेंटर हैं, जहाँ कोई भावफेर नहीं। हर एक केन्द्र में सेवा हो ही रही है। आपने शिवानंद आश्रम के बहुत बड़े संव्यासी, प्रखर पंडित और योग के पारंगत अध्यात्मानंदस्वामी की बातें सुनी होंगी। एक बार लंडन में हिम्मतस्वामी और संतों के साथ वे एक सप्ताह रहे। वहाँ से फिर अमेरिका जाकर उन्होंने मुझे फोन पर कहा—मुझे आपसे एक प्रार्थना करनी है। मैंने पूछा क्या? वे बोले—जैसे स्वामिनारायण संप्रदाय में भक्ति युक्त, अपेक्षारहित, निरपेक्षभाव से सेवा-भक्ति करने वाले सेवक हैं, ऐसे सभी संतों को मिलें। हमारे

लिये अचरज और सोचने की बात है कि शाखीजी महाराज, योगी बापा, काका, पप्पा ने हमें क्या दिया है? हमें पता ही नहीं कि इनके जीवन का प्रभाव हम पर है। वर्ता क्या हम सीखने वालों में से थे? तीन दिन से ये जो कार्यक्रम हो रहा है, उसमें हम देख रहे हैं कि कितना अद्भुत मैनेजमेंट है, कितनी अद्भुत व्यवस्था है! सब भक्तों का कितना अद्भुत भाव है! कितना बढ़िया खाना, रहना, सभा व्यवस्था, कार्यक्रम, कल्वरल प्रोग्राम। इसके पीछे का रहस्य गुरुजी हैं। गुरुजी की हाजिरी और उनके जैसे अद्भुत सत्पुरुष को राजी करने का अंतर में जो भाव है; इसलिए हर एक का उत्साह, उमंग कई गुणा बढ़ जाता है। गुरुजी को राजी करने का भाव है, तो किसी को थकान नहीं लग रही। सब हिल-मिल कर एक मन होकर, संप, सुहृदभाव, एकता से दिन-रात सेवा कर रहे हैं। कोई भी छोटा-बड़ा, साधु, संन्यासी, गृहस्थ का भेदभाव रखे बिना, एक जैसे भाव से सब सेवा कर रहे हैं। यह सच में उनका सर्जन करने वाले प्रभुधारक साधु से ही संभव है और यही गुरुजी का सच्चा दर्शन है। दिल्ली के मुक्तों का दर्शन करो, तो गुरुजी का दर्शन होगा। परदेस के हमारे नये भाई और बहनें-जीतूभाई, वीरेन्द्रभाई वगैरह छपैया जाने के लिए यहाँ आते हैं। पूरी द्रीप करके आते हैं, तो हम उन्हें पूछते हैं कि कहाँ मजा आया? तो बोलते हैं, सब जगह धूमे-दर्शन किये, पर मजा तो हमें दिल्ली में आया। ये गुरुजी की हाजिरी और भक्तों का भाव है। यही प्रभु के भाव से करी हुई उनकी सेवा का दर्शन है और वो पाठ पढ़ा के सिखाते नहीं हैं। किसी यूनिवरिटी में इसकी क्लासिस नहीं हैं। ऐसा साधु जहाँ प्रगट हो, वहाँ ऐसी शिक्षा अपने आप मिलती जाती है। ये सब जो हो रहा है, वो गुरुजी की हाजिरी का परिणाम है और वो परिणाम यानि 'साधु', इसलिये 'साधु पर्व' मना रहे हैं। हम सबको सच्ची साधुता प्राप्त करनी है...

प्रेमस्वरामी का 27 दिसंबर को प्रागट्य पर्व है। योगीजी महाराज ने उनका नाम 'प्रेमस्वरूप' दिया है। वो प्रेम का मूर्तिमान स्वरूप हैं और साधुता की मूर्ति हैं। काकाजी और हरिप्रसादस्वामीजी ने जोड़ के लिये प्रेमस्वरूपस्वामी को गुरुजी के साथ दिल्ली भेजा। आज दोनों ब्रह्मस्वरूप अवस्था को पा गये। सच, कैसे अद्भुत कार्य का दर्शन होता है... भगवान का धाम गुणातीत है और सबको गुणातीत करना है। उनके संकल्प में हम आ गये हैं, तो वो भाव इसी देह में हमें साकार हो जाये। बापा को किसी ने प्रश्न पूछा कि हमें बार-बार जन्म लेकर क्यों आना पड़ता है? बापा बोले—छोटी-छोटी कसर टालने के लिये। तो वो क्या? माहात्म्य ना समझने की कसर! गुणातीतभाव को पाये हुए साकार साधु हमें मिले हैं, फिर भी उनका और उनके भक्तों का जैसा माहात्म्य है, वैसा समझ नहीं पाते। यह कसर टलेगी, तो अहंकार पिघल जायेगा। उसके बाद काम, क्रोधादि, दोष अपने आप



विसर्जित हो जायेंगे। ये $2+2=4$ जैसी आसान बात है। ऐसे संतों की हमें प्राप्ति हुई है। उनकी आङ्ग और माहात्म्य में हमारा जीवन अद्भुत तरीके से व्यतीत हो। पूरे समाज में संप, सुहृदभाव और एकता से रहें। प्रभु प्रसन्नता के लिए यह श्रेष्ठ साधन है। तो हम सब जहाँ हैं, वहाँ संप, सुहृदभाव और एकता रखते हुए, प्रभु को जो कार्य करवाना हो वो करें।

योगी बापा ने छात्रालय के समय कहा था कि गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज को बहुत लगन थी कि अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का प्रवर्तन हो और ऐसे संतों का माहात्म्य बढ़े। तो, संतों का माहात्म्य बढ़े, ऐसे कार्यक्रम हम करते रहें, यही प्रभु के प्रति श्रेष्ठ भक्ति है। ऐसी भक्ति अदा करने के लिये सभी संतों, भक्तों और बहनों को खूब धन्यवाद, खूब आनंद हुआ। आपके जैसी साधुता सभी में प्रगटे, ऐसा संकल्प करना और आशीर्वाद देना।

अंत में अब तक बने भांगड़े के सभी भजनों के Mashup पर सत्संग के युवकों ने ऐसा 'भांगड़ा' प्रस्तुत किया कि समापन होने पर पंडाल में सभी मगन होकर नाचने लगे। यह सारा नज़ारा देख कर सभी गुणातीत स्वरूप भी खूब हर्षित थे। प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी तो अपने स्थान पर बैठे हुए हाथ ऊपर करके जो जॉस्चर कर रहे थे, उससे एहसास हो रहा था कि उनके रूप में ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी हाज़िर रह कर आशिष दे रहे थे। यूँ साधु पर्व की नवीन स्मृतियों का खजाना लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

Statement about ownership and other particulars about newspaper—

‘भगवत् कृपा’ (Form IV Rule 8)

- | | | |
|-----------------------------------|---|---|
| 1. Place of Publication | : | Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar- III, Delhi-52 |
| 2. Periodicity of its Publication | : | Bi-Monthly |
| 3. Printer's Name | : | Prabhaker Rao |
| 4. Nationality | : | Indian |
| Address | : | 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar- III, Delhi-52 |
| 5. Publisher's Name | : | |
| Nationality | : | As above |
| Address | : | |
| 6. Editor's Name | : | |
| Nationality | : | As above |
| Address | : | |
| 7. Owner's Name | : | Yogi Divine Society |
| Nationality | : | Indian |
| Address | : | 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 |

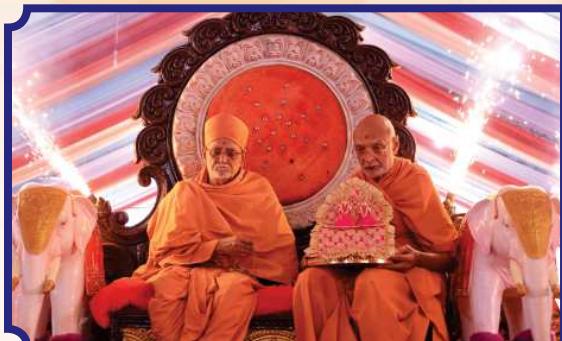
I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date: 10 April, 2023

Sd/- PRABHAKER RAO
Signature of Publisher



31 दिसंबर 2022, सुबह—मैत्री सुमिरन यर्ब का अद्भुत शुभारंभ...



संभाजी नगर की धरती पर बड़े घैमाने पर गुणातीत समाज का प्रथम उत्सव...



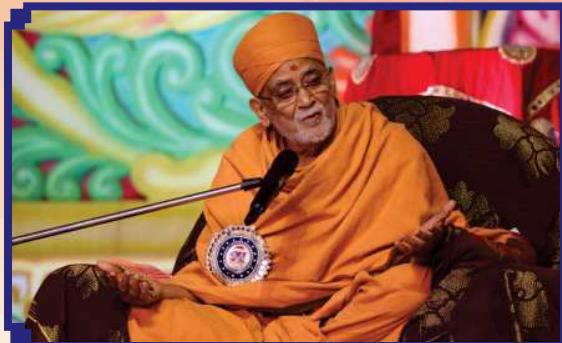


भरतभाई और वशीभाई में काकाजी-कांतिकाका बसे हैं, यही उत्सव का हार्द है...

— प.पू. अश्विनभाई, मोगरी



31 दिसंबर 2022, सायं...



कांतिकाका के जीवन की बातें करें, तो भागवत भी छोटा यड़ जाए...

— प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी



जहाँ भगवान और भगवान के भक्त की महिमा का गुणगान होता है, वहीं अक्षरधाम है...

— प.पू. ब्राह्मस्वामीजी



देर सायं पवई एवं संभाजी नगर के मुक्तीं द्वारा
सांस्कृतिक कार्यक्रम से नये वर्ष का शुभागमन





प.पू. कांतिकाका की शताब्दी निमित्त बहनों द्वारा वंदना...



नूतन वर्ष की प्रथम आरती...



आनंदीब्रह्म से नये वर्ष का स्वागत...



1 जनवरी 2023
नये वर्ष में गुणातीत समाज की ग्रथम सभा से
'मैत्री सुमिरन पर्व' की यूर्णाहुति



गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के वचन से गुरुहरि काकाजी का अभिन्न अंग बने प.पू. कांतिकाका का मैत्री सुमिरन यर्व...

25 दिसंबर को 'साधु पर्व' की दिल्ली में पूर्णाहुति हुई कि तुरंत ही 31 दिसंबर 2022 व 1 जनवरी 2023 को महाराष्ट्र के संभाजी नगर (पूर्व औरंगाबाद) में प.पू. कांतिकाका की शताब्दी निमित्त भवित अदा करने सभी एकत्र हुए। जिसके लिये सबसे पहले तो संतभगवंत साहेबजी, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. विज्ञानस्वामीजी, प.पू. अधिनभाई (अनुपम मिशन), प.पू. शांतिभाई साहेब, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई को कोटि नमन! क्योंकि यूँ तो ये सत्पुरुष देहभाव से परे हैं, लेकिन बाह्य दृष्टि से दिल्ली के उत्सव की थकान अभी उतरी नहीं थी और संभाजी नगर दर्शन देने - भवित अदा करने पहुँच गये। गुजरात से संभाजी नगर के लिये तो सीधी फ्लाईट भी नहीं है, सो गुजरात से आने वाले पहले फ्लाईट से मुंबई गये और वहाँ से फ्लाईट द्वारा यहाँ पहुँचे। प.पू. गुरुजी भी इस उत्सव में जाने के लिये खूब इच्छुक थे, लेकिन डॉक्टर्स ने उनकी आयु व तबियत देखते हुए जाने के लिये मना किया। सो, दिल्ली मंदिर की ओर से प.पू. अक्षरस्वरूपस्वामी, संतों-हरिभक्तों के साथ और प.पू. आनंदी दीदी, बहनों-भाभियों के साथ 30 दिसंबर की सायं फ्लाईट से औरंगाबाद पहुँचे। दिल्ली के संतों-मुक्तों का स्वागत करने के लिये एयरपोर्ट पर, स्वयं प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई भक्तों के साथ आये थे। यह दृश्य देख कर दिल नतमस्तक हो गया कि प.पू. गुरुजी के आगमन पर स्वागत करना यथोचित कहा जाये, लेकिन छोटे संतों-मुक्तों के लिये भी उसी भाव से आना तो अध्यात्म की पराकाष्ठा कही जाये। दरअसल तो ये स्वरूप अपने पल-पल के वर्तन से भक्तों की भवित्त करने की प्रेरणा देते हैं।

एयरपोर्ट से दस मिनिट की दूरी पर ही AGC (औरंगाबाद जिमखाना क्लब) में गुणातीत समाज के सभी मुक्तों के लिए एक साथ रहने की बहुत अच्छी व्यवस्था करी थी। चार मंजिल के जिमखाने की प्रत्येक मंजिल पर गुणातीत समाज के ध्वज के रंगों के कपड़े लगाये थे, जो मिल कर पूरा ध्वज बना रहे थे। बीचोंबीच बड़े चौक में सुंदर सुसज्जा और बैठने की व्यवस्था की थी। कमरे में पहुँचते ही प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई के श्रीचरणों में मस्तक झुक गया कि उनकी आङ्गा से मुंबई और संभाजी नगर के स्वयंसेवक मुक्तों ने भवित अदा करते हुए, सभी कमरों में रहने वाले मुक्तों की संख्या



के अनुसार पानी के साथ-साथ अल्पाहार की भी बढ़िया व्यवस्था की थी। संभाजी नगर की धरती पर इतने बड़े पैमाने पर गुणातीत समाज का यह पहला उत्सव था। प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. महेन्द्र बापु, प.पू. वशीभाई, पू. घनश्यामभाई अमीन एवं पवर्ड के भाइयों द्वारा किये अथक् परिश्रम से यहाँ पर जो गृहस्थ समाज, युवक-युवतियाँ तैयार हुए हैं, उनकी भक्ति, भावना, सेवा और उमंग अत्यंत हृदयस्पर्शी थी। सभी को हृदय से अभिनंदन!

रात्रि को यहाँ से सभी हिरण्य नगर विस्तार में स्थित ‘हरि मंदिर’ के दर्शनार्थ गये। यहाँ योगी डिवाईन सोसाइटी-पवर्ड द्वारा संचालित ‘गुरुहरि काकाजी महाराज ध्यान योग उद्यान’ में श्री नीलकंठ वर्णी और गुरुहरि काकाजी की मूर्ति का दर्शन करके, आरती का लाभ लिया। तत्पश्चात् गुणातीत स्वरूपों का आशीर्वाद लेकर सभी उत्सव रथल पर भोजन करने गये। भोजन के बाद सभी ठहरने के स्थान पर लौटे। लेकिन, सांकरदा की बहनों के प्रति अपनी भक्ति अदा करके प.पू. आनंदी दीदी देर रात को लौटीं। ये बहनें करीब 12-13 घंटे बस का सफर करके आईं थीं। सो, गुरुहरि काकाजी और प.पू. कांतिकाका का यत्किंचित् ऋण चुकाने की इनकी भावना को अंतर से नमन!

देखा जाये तो ‘मैत्री सुमिरन पर्व’ नाम ही गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. कांतिकाका के अटूट मैत्री को उजागर करता था। शक्तिस्वरूपीणि प.पू. सोनाबा की प्रेरणा से गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. कांतिकाका ने ‘स्वामी की बातें’ की पारायण कराने की मौके की सेवा जो लूट ली, उसके फलस्वरूप एवं पू. सोनाबा के तीव्र संकल्प को पकड़ कर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने इन दोनों के सिर पास-पास लाकर परभाव में कहा—

आज से तुम दोनों भाई-भाई बन कर रहना। कैसे भी संजोग बनें, लेकिन कभी अलग नहीं होना... ब्रह्मांड डोलाओगे।

इस आशीर्वचन की स्मृति कराते हुए गुरुहरि काकाजी कई बार दोहराते—

35-37 साल से हम और कांतिभाई शास्त्रीजी महाराज के वचन से, राम-लक्ष्मण के भ्रातृभाव को भी भुला दें, ऐसे रहे न!

और... वाकई गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी, प.पू. कांतिकाका और प.पू. सोनाबा ने ताड़देव से आत्मीयता की जो गंगोत्री प्रवाहित की, उसी का परिणाम ये गुणातीत समाज है।

अतः यह केवल प.पू. कांतिकाका की शताब्दी का पर्व नहीं, बल्कि योगी परिवार के इन मुखियाओं ने अपने आशीर्वाद व कृपा से जीवों को प्रभु की मूर्ति से भरने

का जो बैमिसाल कार्य किया, उससे वर्तमान पीढ़ी को अवगत कराने का मौका था। इसलिये डेढ़ दिन के अल्प समय में चार सत्रों द्वारा अधिक से अधिक भवित अदा करने के लिये सारा आयोजन था।

31 दिसंबर की सुबह उत्सव स्थल के ‘मैत्री द्वार’ में प्रवेश करते ही सुंदर फव्वारे के बाद, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज सहित गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. कांतिकाका की मूर्ति थी, जिस पर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के आशीर्वाद – **तुम दोनों भाई-भाई होकर रहना, ब्रह्मांड डोलाओगे...** लिखे थे। ताड़देव के हॉल की प्रतिकृति में ‘अक्षरधाम की केबिनेट’ यानि गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी, प.पू. कांतिकाका और प.पू. सोनाबा की मूर्ति लगाई थी। एक हार द्वारा ‘सॉलफी पाईन्ट’ बनाया था, जहाँ कोई भी अपने मैत्री वाले मुक्त के साथ फोटो खींच कर, गुरुहरि काकाजी व प.पू. कांतिकाका जैसा मैत्रीभाव दृढ़ करने की प्रार्थना कर सके। इसके अतिरिक्त गुणातीत स्वरूपों के आशीर्वाद सूत्रों को भी जगह-जगह अंकित किया गया था।

करीब 10:00 बजे कलात्मक रथों पर विराजमान स्वरूपों ने ‘ज्ञानयज्ञ मंडप’ में प्रवेश किया। महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध ढोल-ताशे पर लेझिम वृत्य करते युवाओं ने स्वागत किया। पूरा पंडाल गुणातीत समाज के ध्वज के रंगों से सुशोभित था और प.पू. कांतिकाका के जीवन प्रसंगों एवं कार्य का दर्शन कराने वाले आठ-दस फ्लेक्स लगाये थे। मंच पर रंग-बिरंगी कलात्मक फ्रेम्स में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति लगाई थीं। बीचोंबीच गुरुहरि काकाजी और प.पू. कांतिकाका की ऐसी मूर्ति स्थापित थी कि जिसमें दोनों ने एक साथ एक ही हार पहना हुआ था। यह मूर्ति उत्सव के नाम को सार्थक कर रही थी।

पर्व का प्रारंभ करते हुए प.पू. वशीभाई ने सबका स्वागत किया और साथ ही सबको अवगत कराया कि आज ‘स्वामिनारायण महामंत्र जयंती’ भी मना रहे हैं। तत्पश्चात् प.पू. कांतिकाका के प्रिय भजन ‘तें करी कमाल ओ स्वामी...’ की पंक्तियाँ गाते हुए प.पू. भरतभाई ने प.पू. कांतिकाका के गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के साथ के दिव्य प्रसंगों की स्मृति करी। गुरुहरि काकाजी स्वयं प्रभु के धारक थे, लेकिन अन्यों को श्रेय देना ही उनकी जीवन शैली थी। उनके आशीर्वचनों में भी उन्हें सहकार देने वाले साधियों का नाम आता है। सो, गुरुहरि काकाजी के वचनों को चिरंजीव बनाने हेतु, गुजराती पुस्तक ‘माळाना मनका’ प्रकाशित करके, उसका विमोचन संतभगवंत साहेबजी के वरद् हस्तों कराया।



इस पुस्तक में उन पुराने जोगियों-हरिभक्तों का विवरण व जीवन प्रसंगों का समावेश है, जिन्होंने गुणातीत समाज के प्रारंभिक दिनों में अपना सर्वस्व अर्पण करके, गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी और प.पू. कांतिकाका को अपना सहयोग दिया। तत्पश्चात् प.पू. कांतिकाका के जीवन पर आधारित डॉक्युमेन्ट्री के भाग-1 द्वारा उनके जन्म, परिवार और गुरुवर्य शाळीजी महाराज के साथ के संबंध के बारे में सबने जाना। प.पू. कांतिकाका यानि समर्पण की मूर्ति! सो, उन्हीं के नक्शेकदम पर चलने वाले पू. अश्विनभाई और पू. गिरीशभाई पटेल को सम्मानित किया गया। सत्संग में इनके समर्पण का परिचय पेरिस के पू. अंकुरभाई लाड और अमेरिका के पू. दर्शनभाई अमीन ने दिया। तत्पश्चात् अनुपम मिशन के सद्गुरु संत प.पू. अश्विनभाई ने गुरुहरि काकाजी द्वारा ‘मुक्तों के साथ जोड़’ के आग्रह और प.पू. कांतिकाका के ‘दासत्व’ का दर्शन कराते हुए आशीर्वाद दिया। अंत में संभाजी नगर के युवकों ने पू. हेमंतभाई मर्चट द्वारा निर्मित भजन ‘उत्सव आयो...’ पर भावनृत्य प्रस्तुत किया।

सायं पाँच बजे के सत्र में पू. विजयप्रकाशस्वामीजी ने जोशीली वाणी में भजन प्रस्तुत करके, प.पू. कांतिकाका की दासत्व भक्ति को नमन करते हुए सभा को संबोधित किया। तत्पश्चात् गुणातीत स्वरूपों ने पृथ्वी पर हमें जीतेजी अक्षरधाम का जो सुख दिया है और गुरुहरि योगीबापा ने संप, सुहृदभाव व एकता से जीने की जो राह दिखाई, उस पर प्रकाश डालते हुए प.पू. बापुस्वामीजी ने आशीष प्रदान किया।

प.पू. विज्ञानस्वामीजी ने गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी और प.पू. कांतिकाका द्वारा हमारे लिये किये गये परिश्रम और उन्हें जिन हरिभक्तों ने साथ-सहकार दिया, उसकी स्मृति करते हुए आशीर्वाद दिया।

स्वामिनारायण मंत्र जयंती का शुभ दिन था, सो प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने आशीर्दिन देते हुए कहा—भरतखंड में कितने मंत्र हैं, लेकिन काकाजी स्वामिनारायण मंत्र जीवंत बताते थे। उसका कारण यह है कि श्रीजी महाराज ने स्वयं वरदान दिया था कि मैं गुणातीत स्वरूपों द्वारा पृथ्वी पर अखंड रहूँगा।

साथ ही प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने प.पू. कांतिकाका के जीवन प्रसंगों का स्मरण किया कि किस प्रकार उन्होंने अपने संपूर्ण परिवार और संपत्ति को गुणातीत समाज की सेवा के लिये व्योछावर कर दिया। संबंध वाले मुक्तों के केवल वे ही सेवक नहीं बने,

बल्कि परिवार वालों को भी इसी मार्ग पर अग्रसर किया।

तत्पश्चात् प.पू. कांतिकाका के जीवन पर आधारित डॉक्युमेन्ट्री के भाग-2 द्वारा सत्संग विकास में उनके योगदान का दर्शन किया।

ताड़देव-पवई मंदिर को गुरुहरि काकाजी द्वारा दो अनमोल रत्नों की भेंट मिली है। एक हैं पू. हेमंतभाई मर्चट, जिन्होंने अपनी अद्भुत लेखन कला से गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता पाई है और दूसरे उन्हीं के भाई नेफ्रोलॉजिस्ट पू. डॉ. महेन्द्र मर्चट ने चिकित्सा की सेवा के माध्यम से गुणातीत स्वरूपों का विश्वास प्राप्त किया है। उत्सव की स्मृति भेंट देकर इन दोनों की सेवाओं का सम्मान किया गया और शिकागो के पू. विराटभाई ने इनकी सेवाओं का उल्लेख करते हुए नमन किया। इसके अतिरिक्त गुणातीत समाज के कुछ मुक्तों एवं संभाजी नगर के स्थानिक गणमान्य अतिथियों को भी उत्सव की स्मृति भेंट देकर स्वागत-सत्कार किया गया। इस सत्र के समापन के बाद सभी ने प्रसाद के लिये प्रस्थान किया।

प्रसाद के बाद 8:30 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम से अगले सत्र यानि

नये वर्ष 2023 के आगमन की मंगल शुरुआत हुई।

सर्वप्रथम बहनों द्वारा गुरुहरि काकाजी की स्मृति कराते भजन प्रस्तुति के बाद,

‘कल्पना करो...’ भजन पर युवाओं-युवतियों ने,

‘आओ बच्चों मिल कर गायें...’ भजन पर पवई के बाल कलाकारों ने,

‘आज मनायें गुरुहरि का आर्थिभाव उत्सव...’ भजन पर संभाजी नगर की युवतियों ने,

‘रडो अवसरीयो आंगणीये आयो ऐ...’ भजन पर पवई की युवतियों-भाभियों ने

शृंखलाबद्ध भक्ति नृत्य करके वातावरण को उत्साहित बना दिया।

तत्पश्चात् प.पू. कांतिकाका के प्रति बहनों द्वारा भक्ति अदा करने के लिये विशिष्ट सभा का आरंभ हुआ। सबसे पहले गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों की बड़ी बहनों का स्वागत हार अर्पण से किया। कुछ गणमान्य अतिथि बहनों का भी सत्कार किया गया।

प.पू. कांतिकाका की शताब्दी वंदना करते हुए प.पू. माधुरी बहन ने वर्णन किया कि प.पू. कांतिकाका और पू. ममीबा ने किस प्रकार पवई की साधक बहनों को अपनी बेटियाँ बना कर जतन किया।

प.पू. आनंदी दीदी ने आशिष याचना करते हुए बताया कि भगवान भजने के लिये जब उनके घर से विरोध था। तो, वे गुरुहरि काकाजी के बुलाने पर



मुंबई गई। तब प.पू. कांतिकाका उन्हें एयरपोर्ट पर लेने आये। मुंबई के ट्रिप दौरान प.पू. कांतिकाका के परिवार से उन्हें जो अपनापन मिला, वो खून के रिश्तों से भी नहीं मिला। और तो और, प.पू. कांतिकाका ने साधना मार्ग की प्रेरणा देते हुए आशीष भी दी कि तुम गुणातीत बगीचे का फूल बन कर खिलना, सभी को सुवास देना और कोई फरियाद करे बिना मिट्टी में मिल जाना।

इसके अतिरिक्त, गुरुहरि काकाजी और प.पू. कांतिकाका के अटूट संबंध का दृष्टांत दिया कि 7 मार्च 1986 को गुरुहरि काकाजी ने स्वधामगमन किया, तो उनका विरह न सहन करने के कारण, प.पू. कांतिकाका ने उसी वर्ष 27 नवंबर को देह का त्याग किया।

गुणातीत ज्योत की पू. डॉ. वीणा बहन ने कहा— काकाजी-पप्पाजी की जोड़ी अजोड़ थी और काकाजी-कांतिकाका की जैसी मैत्री थी, वैसे ही काकाजी के वारिसदार भरतभाई-वशीभाई की मैत्री से संभाजी नगर में ऐसे समाज का दर्शन हो रहा है। इन दोनों की जैसी मैत्री है, वैसी हमें अपने जीवन में करनी है।

तत्पश्चात् संभाजी नगर की युवतियों ने नीली चमक देते **LED lights** के परिधान में नवीन वृत्य प्रस्तुत करके, मानो खुशियों की जगमग देने वाले नये वर्ष का संदेश दिया। तभी श्रीजी महाराज की पालकी को मंच के मध्य में स्थापित किया। जहाँ स्वरूपों-बहनों ने आरती व धून करके नूतन वर्ष का स्वागत किया। इसके बाद तो भजनों पर सभी ‘गरबा’ और ‘सनेड़ा’ करते हुए इतने निमग्न हो गये कि समय की सुध ही नहीं रही।

‘स्वामी की बातें’ प्रकरण 1 की पहली बात में **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** ने कहा है—
...महाराज तो अपना अक्षरधाम, पार्षद एवं समग्र ऐश्वर्य लेकर यहाँ धरातल पर आये हैं। वे अब भी वैसे ही हैं। देह को छोड़ कर हमें जिन्हें प्राप्त करना है, वे आज हमें जीतेजी प्राप्त हुए हैं...

ऐसी अनुभूति सबको हो रही थी और उसमें सोने पर सुहागा हुआ कि दिल्ली मंदिर में प्रति वर्ष की भाँति, उसी दौरान प.पू. गुरुजी की निशा में मध्यरात्रि महापूजा हो रही थी। जिसका आँनलाइन प्रसारण हो रहा था। जैसे ही प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद देना आरंभ किया और यह

बात प.पू. वशीभाई को पता चली, तो बड़े पुरुष के दर्शन-आशीर्वाद का माहात्म्य सबको समझाते हुए तुरंत ही उन्होंने म्यूजिक बंद करा दिया। यूँ, प.पू. गुरुजी के दर्शन व आशीर्वाद से समापन हुआ।

1 जनवरी 2023—नये वर्ष की प्रथम प्रभात का आगमन ‘ज्ञानयज्ञ मंडप’ में स्वामिनारायण धुन से हुआ। संभाजी नगर के निकट पैठण की गादी के महंत श्री एकनाथ महाराजजी के वारिस सद्गुरु 108 प.पू. प्रकाशदासजी इस सत्र में पधारे थे, सो प.पू. वशीभाई ने उनका अभिवादन किया। अनुपम मिशन के साधु पू. अशोकदासजी ने ‘चैतन्यशिल्पना सौमिल शिल्पी...’ भजन प्रस्तुत करके भक्ति अदा की।

प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं कि सत्संग की बातों से अधिक हमारा वर्तन अन्यों को सत्संग कराता है। वर्षों पहले पवई मंदिर से जुड़े पू. दीपकभाई जागीरदार एवं उनकी पत्नी पू. चित्रा बहन का सकारात्मक वर्तन और प्रगट प्रभु के संबंध का यह दर्शन था कि उनके पैतृक स्थान संभाजी नगर में, उनके संपर्क से इतने सारे मुक्त पवई मंदिर के आश्रित बने। इतना ही नहीं, अपने घर को ‘हरि मंदिर’ में परिवर्तित करवा के स्थानीय मुक्तों के लिये भजन-प्रार्थना का सुंदर स्थान बनाया है। सो, सभी की ओर से पू. दीपकभाई ने मंचस्थ स्वरूपों को खेस पहना कर, उत्सव की स्मृति भेंट से सम्मानित किया। इसी प्रकार, बहनों के विभाग में पू. चित्रा बहन ने संत बहनों का अभिवादन किया।

पू. दीपकभाई ने अपने वक्तव्य में बताया कि किस प्रकार प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई, प.पू. महेन्द्र बापु, प.पू. वशीभाई एवं अन्य योगेश्वरों के संकल्प, आशीर्वाद व परिश्रम से संभाजी नगर में सत्संग का इतना विकास हुआ... इनकी प्रेरणा से सब मिल जुल कर सेवा करते हैं।

तत्पश्चात् अनुपम मिशन के सद्गुरु संत प.पू. शांतिभाई साहेब ने आशीर्वाद दिया— उत्सव के नाम के अनुरूप काकाजी और कांतिकाका के संबंध व उनकी मैत्री का हम सुमिरन कर रहे हैं। काकाजी ने साक्षात्कार के उपरांत श्रीजी महाराज से लेकर योगीजी महाराज तक शुद्ध उपासना की बात चुहुँ ओर फैलाई। ऐसे गुणातीत स्वरूपों से जुड़े रहेंगे, तो हमारा रूपांतर करवा पायेंगे... कांतिकाका ने जीवनपर्यात एक ही बात पकड़ कर रखी कि काकाजी के संबंध वाले मेरे हैं और उस राह पर वे चले। हम भी संबंध की दृष्टि से सबको देख कर दिव्य मानेंगे, तो दासत्वभाव दृढ़ होगा। काकाजी जो अभेद दृष्टि और अविरोध वृत्ति की बात करते थे, उससे हम अहंकार रहित हो जायेंगे... काकाजी के साथ कांतिकाका ने जैसा संबंध किया, वैसा संबंध करके निर्दोषबुद्धि युक्त जीवन जीयें।

प.पू. दिनकर अंकल ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की बात



प्रकरण 4 की 101वीं का दृष्टांत देकर व 'माकाना मनका' पुस्तक में से गुरुहरि काकाजी द्वारा प.पू. कांतिकाका के लिये कहे उद्गार पढ़ते हुए आशीष दी— ...हमें अक्षररूप बनने में रथूल, सूक्ष्म और कारण ये तीन प्रकार की देह बाधित होती हैं। सो, दास का दास बन कर परब्रह्म की भक्ति करनी है व भगवान से जुड़ना है और... गुणातीत संत के संग व कृपा से सत्त्व, रजस् व तमस् इन तीन गुणों से परे होकर शीघ्र ब्रह्मरूप होना है। सिंह जैसे कांतिकाका ऐसे गुणातीत सत्पुरुष-ब्रह्मरूप थे, लेकिन छुपे रहते थे...

संतभगवंत साहेबजी ने तो रामायण की पात्र उर्मिला को याद करते हुए खूब मर्मयुक्त आशीर्वाद दिया कि— लक्ष्मणजी की पत्नी उर्मिला भी 14 साल के वनवास में पूरी समर्पित हुई थी, लेकिन फिर भी रामायण में उसका नाम बहुत कम आता है। इसी प्रकार, कांतिकाका गुणातीत समाज के लिये संपूर्ण याहोम हो गये, तब भी गुणातीत समाज के कई-कितने उत्सव हुए, पर कांतिकाका का कहीं जिक्र नहीं आया। वे समर्पण का आदर्श हैं। कांतिकाका को शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज और सोनाबा के प्रति असाधारण प्रेम था। अपने बेटे-बेटियाँ साधु बनने के लिये गुणातीत समाज को समर्पित कर दिये। इतना ही नहीं महेन्द्र बापु जैसे कड़यों को साधुता के मार्ग पर अग्रसर किया। यहाँ मंच पर हम जो बैठे हैं, इन सभी में काकाजी ने ही माहात्म्य का सिंचन किया है... काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी और सोनाबा ने एक ही बात सिखाई कि दोष की कसर टालने के लिये भक्तों की महिमा-माहात्म्य में डूबे रहो। धुन, प्रार्थना, करके सभी के गुण निहारने की तालीम उन्होंने दी। इसलिये आज हम सब सुखी हैं। जहाँ निर्दोषभाव खंडित होता है, वहाँ उदासी धेर लेती है। संभाजी नगर वाले भक्तों को खास सूचन है कि केवल भरतभाई-वशीभाई की आज्ञा में रहना। उन्हें आगे रख कर संप, सुहृदभाव, एकता के सिद्धांत से सेवा करना, इन्हें नाराज़ नहीं करना। यहाँ के भक्तों का भाग्य खुल गया कि नये साल 2023 में सभी स्वरूप, संत पथारे हैं। तन, मन, धन, आत्मा, भक्ति, शक्ति और समृद्धि से सबका नया साल खूब अच्छा रहे...

संतभगवंत साहेबजी द्वारा आशीर्वाद की बौछार के बाद, प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के रूप में मानो ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी ने नये वर्ष की शुभाशीष दी—

गुणातीत स्वरूपों ने हमारे लिये जो किया है, वो कभी न भूलें। उनमें ही निमग्न रहना है। साहेबजी के वचन अनुसार स्वरूपों को हमें नाराज़ नहीं करना। यदि यह बात पकड़ कर रखेंगे, तो इस धरती पर हमारे जितना भाग्यशाली और कोई नहीं होगा।

कांतिकाका जैसी आत्मबुद्धि और प्रीति हमारे अंदर उत्तरोत्तर बढ़ती रहे...

तत्पश्चात् प.पू. कांतिकाका के जीवन पर आधारित डॉक्युमेन्ट्री के अंतिम भाग (3) का दर्शन किया और केन्द्रों के सभी मुक्तों ने गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. कांतिकाका की निराली मूर्ति को हार अर्पण किया।

संबंध वाले मुक्तों की तत्काल आध्यात्मिक प्रगति कराने हेतु, प.पू. भरतभाई ने उत्सव के अंत में खूब कृपा करके तीन पाईन्ट्स में स्वरूपों से प्राप्त आशीर्वादों का निम्न सारांश बता दिया, जिसके अनुसार जीवनयापन करने से श्रेय होगा –

1. **प्रेम, आत्मबुद्धि व प्रीति** – कांतिकाका ने काकाजी के संबंध वालों के साथ प्रेमभाव का संबंध किया।
2. **विश्वास** – कांतिकाका को काकाजी और सभी स्वरूपों के प्रति बहुत विश्वास था। वैसा हमें हमारे गुरु के प्रति होना चाहिये।
3. **मैत्रीभाव** – दो भक्तों के साथ हमें मैत्री बढ़ानी है। साहेबजी ने रामायण की उर्मिला की जो बात करी, उस प्रकार कांतिकाका को संपूर्ण साथ देने वाली उर्मिला यानि ललिता काकी थे। उन्होंने बहुत परिश्रम किया था।

‘मैत्री सुमिरन पर्व’ के प्रथम सत्र में जाहिर किया गया था कि गुरुहरि काकाजी दो मुक्तों के साथ की मैत्री पर खूब ज़ोर देते थे। सो, भाइयों और बहनों के विभाग में काँच के दो बॉक्स रखे गये, जिसमें सभी को अपने दो सच्चे मित्रों के नाम लिख कर डालने के लिये कहा गया था और घोषणा की थी कि उत्सव के अंत में इन दोनों में से पाँच-पाँच पर्ची निकाली जायेगी। उसमें जिन मुक्तों का नाम आयेगा, उन्हें उत्सव की स्मृति भेंट दी जायेगी। अतः भाइयों के विभाग में प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने और बहनों के विभाग में प.पू. आनंदी दीदी ने ये पर्चियाँ बॉक्स में से निकालीं। उसके अनुरूप मुक्तों को स्मृति भेंट दी गई।

सच, गुरुहरि काकाजी के लाडले प.पू. भरतभाई-प.पू. वशीभाई की ‘मैत्री’ से पवई मंदिर से जुड़ा सारा सत्संग समाज ही मानो ‘मैत्री सुमिरन पर्व’ की फलश्रुति कहा जाये।

यूं, प्रगट स्वरूपों की स्मृति सहित दो मुक्तों के साथ मैत्री करने की प्रार्थना करते हुए उत्सव का समापन नहीं, बल्कि सबने मैत्रीभाव दृढ़ करने के लिये नूतन युग में प्रवेश किया...





12 जनवरी—य.पू. दिनकर अंकल की निशा में
य.पू. दीदी का 62वाँ प्रागट्योत्सव...



गुरुजी और दीदी की तत्त्व से एकता है...

-प.पू. दिनकर अंकल



प.पू. दिनकर अंकल की निशा में प.पू. आनंदी दीदी का 62वाँ प्राकट्य पर्व...

प.पू. आनंदी दीदी का सादगीभरा - 'स्व' की अस्मिता रहित जीवन दर्शन कराता है कि वर्षों से न केवल स्वरूपों के समक्ष, बल्कि अपने साथी-मुक्तों और यहाँ तक कि अपने से छोटे के पास भी न्यून बन कर, उन्होंने सेवा और सबका जतन किया है। इसलिये जब भी उनके प्राकट्य पर्व की बात आती है, तो वे इस विषय में हमेशा अल्पचि व्यक्त करती हैं। लेकिन, धन्यवाद है गुणातीत स्वरूपों को कि मुक्तों की भावना को जान कर, वे इस निमित्त अपने सान्निध्य का लाभ देने स्वयं आ जाते हैं। कोरोना के कारण पिछले दो साल से प.पू. आनंदी दीदी का प्राकट्य पर्व सामूहिक रूप से मना नहीं पाये। बहनें, भाभियाँ और हरिभक्त इस वर्ष बेसब्री से इसकी राह देख रहे थे। सो, मानो सबकी प्रार्थना सुन कर, दिसंबर में दिल्ली में 'साधु पर्व', जनवरी की शुरुआत में संभाजी नगर में 'मैत्री सुमिरन पर्व' और गुजरात में 'आत्मीय युवा महोत्सव' में सबको दर्शन देकर व 'ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव' का लाभ लेकर प.पू. दिनकर अंकल, 12 जनवरी 2023 को आयोजित प.पू. आनंदी दीदी के 62वें प्राकट्य पर्व निमित्त पुनः दिल्ली आये। 79 वर्ष की आयु में भी एक युवा जैसी स्फूर्ति से वे कोई अवसर छूकते नहीं, क्योंकि देहभाव से परे प्रभु को धार कर जीते हैं और भक्ति अदा करने में ही विश्राम महसूस करते हैं।

12 जनवरी की सायं करीब 6:00 बजे 'कल्पवृक्ष' हॉल में सब एकत्रित हुए। प.पू. दीदी के आसन के पीछे बड़े पर्दे पर श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, गुरुहरि काकाजी एवं गुरुहरि पप्पाजी सहित प.पू. गुरुजी की कल्पणामई मूर्ति का दर्शन हो रहा था और प्रार्थना रूप भजन की पंक्ति लिखी थी—

'तत्त्व से तुम्हें जान पायें, जिंदगी सँवर - सँवर जाये...'

प.पू. दिनकर अंकल व प.पू. आनंदी दीदी का आगमन हुआ। प.पू. गुरुजी की संगमरमर की मूर्तिप्रतिष्ठा होने के बाद, यह पहला मौका था कि प.पू. दीदी के साथ बहनों व भाभियों को आरती करने का लाभ मिला। आरती के बाद सभा के आरंभ में पू. बाती दीदी, पू. नेहा अग्रवाल

और पू. विधि जानी ने 'जय अक्षरपति पुरुषोत्तम, जय जय स्वामी सहजानंद...' धुन से प्रभु का आवाहन किया और 'फिर प्रभु वश हो जायें, सरल मुक्तों के पास हों हम...' भजन से सभा का आरंभ किया।

प्राकट्य पर्व की इस सभा में सर्वप्रथम पू. डॉली धवनजी, पू. आदर्श शर्माजी (जगरांव) एवं पू. यात्रा मल्होत्रा ने अपने अनुभवों से प.पू. दीदी का माहात्म्यगान किया। पू. कश्यपी दीदी ने अपनी सहेली पू. प्रीति द्वारा रचित कविता से भावना व्यक्त की। मुंबई के पू. रमेशभाई त्रिवेदी एवं जगरांव की पू. प्रीति कक्कड़ द्वारा वॉट्सएप पर, प.पू. दीदी के प्रति कविता के रूप में भेजी गई भावना पू. बंसरी दीदी ने पढ़ कर सुनाई।

तत्पश्चात् प.पू. दिनकर अंकल को सभी का भाव हार के रूप में पू. पुनीत मल्होत्रा एवं सेवक सरल ने अर्पण किया। पू. डॉली दीदी (मुंबई) द्वारा बनाया कृत्रिम फूलों का सुंदर हार, मोगा के पू. हेमंत ने चिदाकाश हॉल में विराजमान प.पू. गुरुजी को अर्पण किया, उसके बाद प्रसादी का वह हार प.पू. दीदी को सभी की ओर से जगरांव की पू. पूजा शर्मा एवं दिल्ली की पू. मंजूभाभी पंचाल ने अर्पण किया।

तदोपरांत हमें मिले सत्युरुषों ने हमसे कितनी अधिक प्रीति की है, उसका वर्णन गुरुहरि काकाजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल एवं सभी प्रगट स्वरूपों के जीवन प्रसंगों द्वारा करते हुए प.पू. दीदी ने आशीष याचना की। गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. गुरुजी के प्रति प.पू. दीदी का जो समर्पण है, वो शब्दों में बयां तो नहीं हो सकता। पर, स्वरूपों का भरोसा करके, प्रेम से वे कैसे सबकी अगुवाई कर रही हैं, ऐसा भाव प्रकट करता पू. राकेशभाई शाह द्वारा रचित नया भजन—‘काकाजी का भरोसा किया, गुरुजी का एतबार किया...’ पू. बंसरी दीदी एवं पू. नेहा अग्रवालजी ने प्रस्तुत किया।

भजन के बाद, जिन्होंने गुरुहरि काकाजी एवं प.पू. गुरुजी के बल से उत्तरभारत की बहनों का जीवन संवार कर उन्हें संभाला है, प्रभु का आश्रय दिया है और साधक बहनों के अंतर का शुद्धिकरण करके जीवन का लक्ष्य बताया है, ऐसी प.पू. दीदी को शत्-शत् नमन करते हुए, अक्षरज्योति की पू. केसर दीदी एवं शिकागो में प.पू. दिनकर अंकल की निशा में भगवान भजती पू. एंजी दीदी ने माहात्म्यगान किया। सभा में पू. कीर्ति वर्मा ने रेजिन आर्ट से बनाया ‘माँ’ नाम का लैम्प प.पू. दीदी को अर्पण किया। भारत नगर Police Station के S.H.O पू. यशवंत यादवजी ने प.पू. दीदी को पुष्प गुच्छ देकर भाव व्यक्त किया और पू. संबंध, पू. पुण्यम् और पू. नक्षत्र ने बच्चों की ओर से कार्ड अर्पण करके प्रार्थना की।

गुणातीत स्वरूपों-संतों का प्राकट्य तो सबके लिये मंगलकारी, हितकारी, श्रेयकारी है और... आज की सुनहरी पलों में आशीष वर्षा करते हुए, प.पू. दिनकर अंकल ने तो यह दिन ऐतिहासिक बना दिया। प.पू. दिनकर अंकल जब आशीर्वाद देने की शुरुआत करते हैं, तो महाराज से लेकर अब तक के प्रगट



स्वरूपों का श्लोक अक्सर गाते हैं। दिसंबर में संतभगवंत साहेबजी के आग्रह करने पर प.पू. गुरुजी ने अपना श्लोक गाने की अनुमति दी। सो, प.पू. गुरुजी का श्लोक गाने के बाद प.पू. दिनकर अंकल ने आशीर्वाद दिया—

दीदी को तत्त्व से पहचानें तो 16 वर्ष की किशोर मूर्ति ही हैं... हमारी दिव्य माँ की तबियत बहुत अच्छी रहे और बहनों की प्रगति कराते रहे...

फिर बड़ी सहजता से उन्होंने कहा— मैं सोच रहा था कि गुरुजी की महिमा के श्लोक हमने बनाये हैं, तो दीदी का भी महिमा श्लोक है क्या?

मुक्तों ने बताया— नहीं है। गुरुजी की भाँति वे भी आज्ञा नहीं देतीं।

तुरंत ही एक अधिकार से उन्होंने कहा— तो, हम कब सीखेंगे? वो आज्ञा नहीं देती, तो मैं प्रार्थना करूँगा। सोनाबा, बेन, ज्योति बहन सब बहनों का भी है, दीदी का भी हो, तो अच्छा है। जो भी महिमा का गान करेगा, उसे फ़ायदा ही होने वाला है। तो, तत्त्व से पहचान पाये ऐसा श्लोक अवश्य सुनाना।

यह सुन कर प.पू. दीदी ने प्रार्थना की— गुरुजी के 85वें प्राकृत्य पर्व पर हमें गाने की अनुमति मिली है। ऐसी ही मेरी अरज़ है।

प्रत्युत्तर देते हुए प.पू. दिनकर अंकल ने श्लोक बनाने की आज्ञा दे दी— आज दीदी 85वाँ जन्म दिन मना रहे हैं। यह मैं कोई निराधार बात नहीं कर रहा। गुरुजी और दीदी की तत्त्व से जो एकता है, उसके मुताबिक़ गुरुजी का 85वाँ प्राकृत्य दिन है, तो दीदी का भी कह सकते हैं... हम जानते हैं कि दीदी सरल हैं...

प.पू. दिनकर अंकल का सूचन शिरोधार्य करते हुए, सेवक पू. अभिषेक ने तुरंत ही पू. राकेशभाई शाह को प.पू. दीदी के श्लोक के लिये अपने भाव लिख कर दिये। तो, उसी रात उन्होंने बना दिया। अगले दिन 13 जनवरी, लोहड़ी—प.पू. दीदी के वास्तविक प्राकृत्य दिन निमित्त प.पू. गुरुजी के साथ प.पू. दिनकर अंकल अक्षरज्योति पथारे। तब उन्होंने—

प्रभु की आभा से चमकते चेहरे पर आनंद सदा,

वाणी महिमा से भरी, बरसायें माँ की ममता।

जिनका वर्तन काकाजी गुरुजी का परिचय दे रहा,

सर्वदेशीय, सुहृद 'आनंदी दीदी' को वंदना।

प.पू. दीदी का श्लोक पहली बार गाकर बहनों को भेंट रूप दे दिया... जिसकी कभी कल्पना नहीं कर सकते थे, वो प.पू. दिनकर अंकल ने सहजता से करवा दिया! उनके श्रीचरणों में सभी बहनों के कोटि नमन...



29 जनवरी 2023, सद्गुरु संत शांति दादा की अंत्येष्टि विधि...



प्रेमभरे, भक्तिभरे, मातृहृदयी स्वरूप शंति दादा को अलविदा...



परम शांति की गोलियों से सबको सुखी करने वाले सद्गुरु संत प.पू. शांति दादा ब्रह्मलीन हुए...

ना जाएयुं जानकी नाथे, काले सवारे शुं थवानुं छे...

गुजराती में बहु प्रचलित उपरोक्त पंक्ति 26 जुलाई 2021 को सहज याद आई थी, जब गुणातीत समाज के शिरछत्र ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी ने आकस्मिक देह लीला समेटी थी।

और... अब 27 जनवरी 2023 को यह तुरंत याद आई, जब गुरुहरि योगीजी महाराज की नारायणी सेना के सेनापति संतभगवंत साहेबजी के एक मुख्य सैनानी सद्गुरु संत प.पू. शांति दादा ने अचानक अक्षरधामगमन किया। प्रभु योजना कही जाये कि वडोदरा जिले के पादरा तहसील के 'गोरियाद' पालन करने वाले और गुरुवर्य पू. फूलाभाई और पू. कांता 1942 को जन्मे अनादि के विदाई की दिनांक भी 27

24 जनवरी 2023 से करमसद के श्री कृष्ण एनज्योप्लॉस्टी बहुत अच्छी अनुपम मिशन आ गये थे। पर,



गाँव में, स्वामिनारायण धर्म का शास्त्रीजी महाराज के कृपा पात्र बहन के घर 27 अगस्त प.पू. शांति दादा की स्थूल ही थी।

को सबकी धुन-प्रार्थना हॉस्पिटल में उनकी तरह हो गई थी और वे 27 जनवरी की सुबह वॉट्सएप

पर समाचार आया—

सद्गुरु संत परम पूज्य शांति दादा फिलहाल चिकित्सा के बाद ब्रह्मज्योति-मोगरी में आराम कर रहे थे। आज सुबह 4:45 बजे हार्ट अटैक के कारण उन्होंने देह त्याग कर दिया।

यह पढ़ कर एक बार तो समझ ही नहीं आया कि स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। तो, फिर अक्षरधाम कौन सिधारे? फिर जब दो-तीन बार पढ़ा; तो ख्याल आया, लेकिन विश्वास ही नहीं हुआ। मानो पैरों तले ज़मीन खिसक गई। अभी दिसंबर में 'साधु पर्व' पर और 1 जनवरी 2023 को संभाजी नगर में 'मैत्री सुमिरन पर्व' निमित्त गुणातीत समाज के मुक्तों को दर्शन देकर आशीर्वाद दिया था! किसी ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि ऐसे बड़े उत्सव में उनका यह अंतिम दर्शन प्राप्त होगा।

प.पू. शांति दादा का जब यह समाचार आया, तो उन दिनों प.पू. गुरुजी को रिलप डिस्क की बहुत तकलीफ थी। अतः सुबह उन्होंने जब नाश्ता इत्यादि कर



लिया, तब सेवकों ने जैसे ही यह सूचना दी, तो वे आवाक् रह गये। फिर सेवकों ने बताया कि संतभगवंत साहेबजी और प.पू. अश्विनभाई ने प.पू. गुरुजी को तबियत ठीक न होने के कारण, अनुपम मिशन आने के लिये मना किया है। लेकिन, गुरुहरि योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी और ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी का सेवन किये इन प्रगट स्वरूपों का एक-दूजे के प्रति इतना अधिक लगाव है कि चल पाने में असमर्थ प.पू. गुरुजी तुरंत बोले— भले ही सबकी मना आई है, लेकिन मैं शांतिभाई के अंतिम दर्शन के लिये ज़रूर जाऊँगा ही। मुझे कोई रोकना नहीं।

बस, फिर तो प.पू. गुरुजी के साथ पू. सुहृदस्वामीजी, संतों-मुक्तों और प.पू. आनंदी दीदी व कुछ बहनों की 28 जनवरी की शाम के प्लेन की टिकिट्स भी बुक करा दीं। परंतु, एक घंटे बाद प.पू. गुरुजी ने महसूस किया कि मैं यहाँ चल नहीं पा रहा, तो वहाँ कैसे करलूँगा? सो, प.पू. गुरुजी का जाना रद्द हुआ और... संतभगवंत साहेबजी ने प.पू. आनंदी दीदी को फोन पर आज्ञा दी कि प.पू. गुरुजी की तबियत ऐसी है; तो वो भी ब्रह्मज्योति न आये, बाकी सबको भेज दें।

प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी की आज्ञा से 28 जनवरी की सायं वडोदरा एयरपोर्ट से पू. सुहृदस्वामीजी, संत व मुक्त हरिधाम गये और पू. स्वाति दीदी के साथ बहने सीधा ब्रह्मज्योति पहुँचीं। चंद्रमा और मंदिर की मंद रोशनी में ध्वजा तो फहर रही थी, पर प्रकृति एकदम शांत थी और... निगाहें मधुर कंठ से ब्रह्मानंदं परम सुखदं... श्लोक का उच्चारण करने वाले 'शांति दादा' को ढूँढ रही थीं। दिल तो कह रहा था—काश! यह बात असत्य हो और साथ ही लूदन कर रहा था कि प.पू. गुरुजी जैसे कह रहे थे, तो क्या वाकई अब अनुपम मिशन आयेंगे, तो शांति दादा नहीं मिलेंगे? बस, यही विचार करते-करते सुबह हो गई।

29 जनवरी की सुबह 7:30 बजे साधकों के निवास स्थल 'परिमल' में फूलों से सुसज्जित पालकी में प.पू. शांति दादा के पार्थिव देह को रथ में विराजमान किया। अधिकांश मुक्तों ने प.पू. शांति दादा को अति प्रिय श्वेत वस्त्र पहने हुए थे। अनुपम मिशन के ब्रतधारी संतों और मुक्तों ने गुणातीत समाज व अनुपम मिशन के ध्वज लहराते हुए, 'स्वामिनारायण मंत्र' का जाप करते हुए जिस धैर्य और शिष्टबद्धता से पूरे परिसर की परिक्रमा की, वह खूब अनुकरणीय थी। 'योगी प्रसाद' के मार्ग से 'शिखरबद्ध मंदिर' की परिक्रमा करते हुए, संतभगवंत साहेबजी के निवास स्थल 'उपासना' पर उनका दर्शन करते हुए, गुरुहरि काकाजी महाराज एवं शक्तिस्वरूपीणी सोनाबा के समाधि स्थल पर हंसाकार आसन पर पालकी विराजित की गई। हंस का यह आसन प्रतीक था कि जैसे हंस मोती का चारा चुगता है, ऐसे



ही प.पू. शांति दादा ने सबका गुण ग्रहण किया और गुरुहरि काकाजी के आशीर्वचन अनुसार, अपने संबंध में आने वालों के हृदय में सबकी महिमा व माहात्म्य का सिंचन करके शांति की गोलियाँ बाँटी। इसका यदि सटीक दृष्टांत निहारना हो, तो 2016—शिकागो में गुरुहरि काकाजी और गुरुहरि पप्पाजी की शताब्दी निमित्त गुणातीत समाज के सभी स्वरूपों, संतों एवं मुक्तों के इंटरव्यू लिये गये थे। उसमें प.पू. शांति दादा ने अनुपम मिशन के शुरुआत के दिनों का उल्लेख करते हुए, नम आँखों से जिस प्रकार प.पू. अश्विनभाई की छोटी से छोटी सेवा, उनकी कसनी का वर्णन किया, वह उनके भीतर में उन्हीं के समकक्ष सखा-साथी के प्रति बेजोड़ माहात्म्य के बिना संभव ही नहीं। अतः अंतिम दर्शन की इन क्षणों में सहज ही प.पू. शांतिदादा के पुनीत चरणों में प्रार्थना हो रही थी कि हे शांति दादा! कृपा करके हम में भी मुक्तों का ऐसा माहात्म्य भर दीजिये।



श्री ठाकुरजी के समक्ष दीप प्रज्वलन के बाद अंत्येष्टि संस्कार पूजनविधि आरंभ हुई। यहाँ भी सहजता से न केवल गुणातीत समाज के केन्द्रों के प्रतिनिधियों द्वारा पूजनविधि संपन्न हुई, बल्कि प.पू. शांतिभाई के प्रेम में डूबे हजारों मुक्त उनका वियोग सह कर, पंक्तिबद्ध होकर दर्शन-पूजन का लाभ लेते गये। दिल्ली में विराजमान प.पू. गुरुजी भी अधिक न

बैठने के कारण, विश्वाम अवस्था में ऑनलाइन प्रसारण देखते हुए श्रद्धांजली अर्पित कर रहे थे।

विरह की इस घड़ी में सबको बल प्रदान करते हुए सर्वप्रथम प.पू. हंसा दीदी ने अपने प्रथम वाक्य में लाइले भाई के प्रति भारी हृदय से अपना प्रेम व्यक्त करते हुए कहा— नाम शांतिभाई और करी जल्दीबाज़ी! कोई रोके या टोके, उससे यहले तो परलोक पहुँच गये। सुनने के लिये भी खड़े नहीं रहे, पूछने भी नहीं आये और चिरनिद्वा ले ली। उनके हृदय में प्रभु को धारण करने के सिवा अन्य कोई विचार नहीं था। हमने जितने समय भी साथ रह कर जो सेवा की, वो भूली नहीं जा सकती। बस, उनके वचन पकड़ कर, वे राजी हों ऐसा जीवन जीना है...

प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने स्मृतियाँ दोहराते हुए कहा— शांतिभाई के प्रेम ने मेरे जीवन में बहुत कार्य किया है... मुझे बहुत प्रेम से संभाला है। अश्विनभाई स्पष्टता से और शांतिभाई प्रेम से हाथ फेर कर समझाते, तो मेरा



मन शांत हो जाता। भगवान् स्वामिनारायण ने वचनामृत में जिस साधु की बात करी है, वैसे शांतिभाई थे। केवल महिमा की दृष्टि से सबके साथ ओतप्रोत हुए। सबको योगीबापा और साहेब से जोड़ा। वाणी से वे कभी विफल नहीं हुए। उन्होंने योगीबापा और स्वरूपों की खूब शोभा बढ़ाई है, ऐसे हम शोभा बढ़ा सकें...

प.पू. अधिनभाई ने लँधे गले से अपने परम सच्चा-भगवदी की विशेषता बताते हुए कहा— शांति दादा, प्रेमभरे, भक्तिभरे, मातृहृदयी स्वरूप! नदंपंक्ति के संतों ने भजन में गाया है— शांति पमाडे, तेने संत कहीये... (जो शांति प्रदान करे, उसे संत कहा जाये) शांति दादा ऐसे ही थे। उनकी स्मृति मात्र से दिल की अशांति समाप्त हो जाती है। वे स्वर्गस्थ नहीं, हृदयस्थ हुए हैं। उनके जैसी साधुता सदैव नज़र समक्षा रख कर, ऐसा साधु हमें बनना है।

संतभगवंत साहेबजी ने अपने अष्ट सखाओं के साथ-सहकार के लिये प्रभु को धन्यवाद देते हुए, मुक्तों को बल प्रदान किया— हे स्वामिनारायण भगवान्! हे योगीजी महाराज! आप शांतिभाई को अपना कार्य करवाने के लिये, अपने साथ मानव देह में लाये थे। वे साधुता की मूर्ति थे। उनके दर्शन, सान्निध्य और बातों से संतों-मुक्तों को हृदय में शांति होती थी। उन्होंने जीवन में कोई फरियाद नहीं की या अपेक्षा नहीं रखी। भगवान् के आश्रितों को माथे का मुकुट मान कर, उस भाव से सबके साथ प्रेम किया। सबके हृदय में गत्सल्यभाव भर कर भगवान् से जोड़ा है। उनका जीवन ‘स्व’ रहित था और भगवा हृदय के आदर्श साधु थे। ऐसे साधु की क्षति पूरी नहीं की जा सकती। सबको खूब बल मिले ऐसी प्रार्थना।

तदोपरांत **संतभगवंत साहेबजी** के साथ सद्गुरु संतों ने प.पू. शांति दादा के पार्थिव देह का पूजन किया। गोंडल से श्री हरिकृष्ण महाराज को प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामीजी द्वारा धराया हुआ प्रासादिक जल व कंठी अर्पण करी। गुणातीत समाज का धज, गुलाब के पुष्पों की चादर व माला अर्पण करके आरती की। उसी दौरान प.पू. शांति दादा की दिव्य वाणी में प्री-रिकॉर्डिंग आरती बजाई गई, तो सभी भावुक हो उठे और अनुभूति हुई कि वे स्वयं यहीं पर हैं।

अंत में **सद्गुरु साधु पू. मनोजदासजी** ने मिट्टी का अग्निपात्र हाथ में लिया। **संतभगवंत साहेबजी**, सद्गुरु संत व अन्य संत ब्रह्मलीन स्थल पर पालकी को ले गये। वेद, पुराण, गीता के मंत्रोच्चार और प.पू. शांति दादा के दिव्य स्वर में ‘ॐ स्वामिनारायण’ मंत्र की ब्रह्मधनि के अलौकिक वातावरण में सद्गुरु संत प.पू. अधिनभाई, सद्गुरु साधु पू. मनोजदासजी, साधु

पू. अशोकदासजी, साधु पू. हिमंतस्वामीजी (यू.के.) एवं साधु पू. अरविंददासजी (यू.ए.) ने अग्निदाह की विधि संपन्न की। अंत्येष्टि के बाद सभी ने परिक्रमा करते-करते, प.पू. शांति दादा को सदैव के लिये अपने हृदयाकाश में विराजित कर लिया



और... प.पू. अश्विनभाई की आङ्गा से 'महाप्रसाद' लेकर, सभी ने मानो मातृ वात्सल्यमूर्ति प.पू. शांति दादा के प्रेम का भी एहसास किया। जिसकी प्रतीति भी प्रभु ने करा दी। प.पू. शांति दादा के अक्षरथामगमन का समाचार सुन कर, संतभगवंत साहेबजी से घनिष्ठता से जुड़े विश्व वंदनीय प.पू. रामदेवजी ने आस्था चैनल के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—

...वे शास्त्रों के अनुसार सच में जीवनमुक्त पुरुष थे... गुणातीत-भावातीत भक्ति में जीने वाली पवित्र आत्मा थी। 30 वर्षों से मेरे मन में उनकी जो छबि थी, वो यह थी कि पूरे अनुपम मिशन के लिये वे एक माँ के रूप में थे। आध्यात्मिक माँ के रूप में शांतिदादा और आध्यात्मिक पिता के रूप में अश्विनभाई और एक समर्थ गुरु के रूप में जसभाई साहेबजी... प्रेम, करुणा, वात्सल्य, सहजता, निर्मलता, निर्दोषता, साधुता शांतिभाई के रोम-रोम, अस्तित्व में रची-बसी थी... हमें भी माँ जैसा वात्सल्य दिया करते थे। उन्होंने मातृत्व, साधुता, दिव्यता-देवत्व को जिया है। ऐसी महान आत्मा को मैं हृदय से वंदन प्रणाम करता हूँ।

प.पू. रामदेवजी के उपरोक्त संक्षिप्त कथन में ही देखें, तो उन्होंने प.पू. शांति दादा के लिये चार बार 'माँ' शब्द का प्रयोग किया है। सो, मातृत्व की दिव्य छाया प्रदान करने वाले सद्गुरु संत परम पूज्य शांति दादा को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए यही प्रार्थना है कि उनसे प्राप्त प्रेम और शांति को हम उत्तरोत्तर बढ़ाते जायें...

ब्रतोत्सवसूची

- (1) दि. 1.4.'23, शनिवार — एकादशी, ब्रत
- (2) दि. 3.4.'23, सोमवार — गुरुहरि योगीजी महाराज का भागवती दीक्षा दिन
- (3) दि. 6.4.'23, गुरुवार — हनुमान जयंती
- (4) दि. 16.4.'23, रविवार — एकादशी, ब्रत
- (5) दि. 22.4.'23, शनिवार — अखात्रीज
- (6) दि. 24.4.'23, सोमवार — गुरुवर्ष शार्णीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
- (7) दि. 1.5.'23, सोमवार — एकादशी, ब्रत
- (8) दि. 4.5.'23, गुरुवार — वृसिंह जयंती
- (9) दि. 15.5.'23, सोमवार — एकादशी, ब्रत
- (10) दि. 16.5.'23, मंगलवार — गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रागट्य तिथि
प.पू. गुरुजी की 62वीं भागवती दीक्षा तिथि
- (11) दि. 31.5.'23, बुधवार — भीम एकादशी, ब्रत





दादा खाचर का दरबार



250 सौ साल पहले श्रीजी महाराज के समय में यहुंच गए हों ऐसा लगता था और भजन करने का सहज ही मन होता...



बाबु वाथर का ग्रन्त



Digitized by srujanika@gmail.com

न याम ताम ताम ताम ताम ताम ताम

11. 1. 1990

ପ୍ରକାଶକ ପରିକାଳି

卷之三

१०८ लाल दीमाल महाराजा ने कहा-

तात्त्विक विद्या विद्यार्थी विद्यार्थी

并还有—Five more to go

मेरा यात्रा का विनायक वार्षिक
लेपार्टमेंट का विनायक बना।

1744) एवं वे विभिन्न विद्या-
विज्ञान।

卷之三

10 of 10

卷之三





R.N.I. 28971/77 (Air Mail)

'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine—Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— Printer, Publisher, Editor: SHRI PRABHAKER RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kakai Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : D.K. FINE ART PRESS (P) LTD., A-6, Community Centre, Nimmu Colony, DELHI-110 052